आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अक्टूबर, 2010 ★ आश्विन, 2067

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी

अध्यात्म-चेतना वर्ष

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं।।

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं।

मंगल-मूल धर्म की जननी,
शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी,
महिमामयी यह 'जिनवाणी'।।

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

धोवन पानी आरोग्य के लिये हितकर है।

भारतवर्ष का स्वर्णतीर्थ

महकते सपनोंके लिये खास अपनोंके लिये

वेडिंग ज्वेलरी कलेक्शन

ॲन्टीक ज्वेलरी कलेक्शन

डायमंड ज्वेलरी कलेक्शन

- सर्टिफाईड डायमंड ज्वेलरी और राशीरत्न
- फॅन्सी शुद्ध सोने के अलंकार
- शुद्ध चांदी के बरतन

रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स

आकाशवाणी चौक, औरंगाबाद 0240-2244520 | सुभाष चौक, जलगाँव 0257-2223903 | उंटेवाडी रोड, संभाजी चौक, नासिक 0253-2315644

Visit us at : rcbafnajewellers.com

जहाँ विश्वास ही परंपरा है।

ग्राहक सेवेची पंचसुत्री १ | प्रामाणिकता २ | वाजिबता ३ | विविधता ४ | हजर स्टॉक ५ | सदाचार

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-2570753

卐 सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर-342005 (राज.), फोन-0291-2730081
E-mail: jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-RJ/JPC/M-07/2010-11

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एवं धम्मं विउक्कम्म,
अहम्मं पडिवज्जिया।
बाले मच्चुमुहं पत्ते,
अक्खे भग्गे व सोयई॥
-उत्तराध्ययन सूत्र, 5.15

यों धर्ममार्ग को छोड़ मूढ़ जो,
पापमार्ग पर चलता है।
धुरी टूटे गाड़ीवान-सम वह,
मृत्यु-समय दुःख धरता है॥

अक्टूबर, 2010
वीर निर्वाण संवत्, 2536
आश्विन, 2067

वर्ष 67 अंक 10

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 120 रु.
आजीवन देश में : 500 रु.
आजीवन विदेश में : 5000 रु.
स्तम्भ सदस्यता : 11000/-
संरक्षक सदस्यता : 5000/-
साहित्य आजीवन सदस्यता- 3000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क भेजने का पता- जिनवाणी, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-03 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, 2571163, फैक्स : 0141-2570753, E-mail:sgpmandal@yahoo.co.in
ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो

विषयानुक्रम

सम्पादकीय -	आचार्य हस्ती के शिष्य हीरा	-डॉ. धर्मचन्द जैन	5
अमृत-चिन्तन-	आगम-वाणी	-संकलित	9
	विचार-वारिधि	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	10
प्रवचन-	क्यों और कैसे करें सामायिक साधना?	-आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	11
	कितनी स्वतन्त्रता, कितनी परतन्त्रता	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	19
	उपकारी का मानें उपकार	-श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा.	25
हस्ती-शताब्दी-	अमरत्व का वह उपासक (10)	-श्री सम्पतराज चौधरी	29
शोधालेख-	जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा	-डॉ. जीवराज जैन	39
तत्त्व ज्ञान-	आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ (62)	-श्री धर्मचन्द जैन	47
	दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध(9)	-संकलित	76
अंग्रेजी-स्तम्भ-	**Oswal Jain Statesmen in Princely State of Rajasthan**	*-Dr. A.L. Gandhi*	51
चिन्तन-	अणुव्रतों का आर्थिक एवं सामाजिक महत्त्व	-डॉ. दिलीप धींग	56
युवा-स्तम्भ-	उपभोक्ता संस्कृति और अपरिग्रह	- डॉ. जवाहरलाल नाहटा	61
श्रद्धा-संस्मरण-	जीवन निर्माता गुरुदेव	-श्री धनरूपचन्द मेहता एवं गौतमचन्द ओस्तवाल	65
विशिष्ट-प्रसंग-	साध्वी कृपाश्री की तपस्या और ज्ञान-पिपासा	-दीपा दुधेड़िया	67
नारी-स्तम्भ-	छोटी बहू का जादू	-श्री जशकरण डागा	69
बाल-स्तम्भ-	क्षमा का प्रभाव	-आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.	72
विचार-	उनका ध्यान और मौन आज भी मेरे ध्यान में है : उमेशाचार्य	-डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन	18
	प्रभु से प्रार्थना	-स्व. श्री राजेन्द्र भण्डारी	68
	जैन इतिहास में आचार्य हस्ती की सूक्तियाँ	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	78
	सफाई एवं सजावट में विवेक	-श्री सुरेशचन्द्र धींग	80
कविता/गीत-	बन्ध कर्मों के तप से हटाते चलो	-तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.	46
	हर लो, मेरी भव-भ्रांति प्रभो!	-श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	50
	प्रभु ऐसा अनुपम ज्ञान दो	-श्री मोहन कोठारी 'विनर'	75
साहित्य-समीक्षा-	नूतन-साहित्य	-डॉ. धर्मचन्द जैन	81
श्राविका-मण्डल -	मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (10)		82
परिणाम-	आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा-परिणाम		87
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन		98
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार		115

सम्पादकीय

आचार्य हस्ती के शिष्य हीरा

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

अध्यात्म-चेतना वर्ष में आचार्य श्री हस्ती के शिष्य आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. का कार्तिक कृष्णा अष्टमी को 48वाँ दीक्षा-दिवस है। आचार्य हस्तीमल जी म.सा. ने शिष्य हीराचन्द्र जी म.सा. के समर्पण, विनयभाव, प्रवचन-पटुता, आगम ज्ञान, आचार-निष्ठा, सौमनस्य, सामंजस्य, सहिष्णुता आदि अनेक गुणों का आकलन करते हुए उनमें अनेकविध योग्यताओं का विकास किया, जिससे आचार्य हीराचन्द्र जी महाराज में संघनायकत्व की विशेषताएँ संक्रान्त हो गईं।

आचार्य हीराचन्द्र जी महाराज को रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर के रूप में 19 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं, यह 20वाँ वर्ष चल रहा है। आचार्य होते हुए भी पद के अभिमान से आप सर्वथा दूर हैं तथा अपनी महिमा गान की अपेक्षा अपने गुरुदेव आचार्य हस्ती के गुणगान को अधिक महत्त्व देते हैं।

कोई गुरु अपने शिष्य को किस प्रकार घड़ता है, इसका एक उदाहरण आचार्य हस्ती के द्वारा घड़ा गया उनका शिष्य-समुदाय है। विचारों में परिपक्वता तथा आचरण में निर्मलता का संदेश रत्नसंघ के प्रत्येक शिष्य को प्राप्त है। आचार्य हीराचन्द्र जी हो अथवा उपाध्याय मानचन्द्र जी, श्रद्धेय महेन्द्रमुनि जी हो अथवा श्रद्धेय गौतममुनि जी, श्रद्धेय नन्दीषेणमुनि जी हो अथवा श्रद्धेय प्रमोदमुनि जी सबका व्यक्तित्व आगन्तुकों को प्रभावित करता है। उन्हें संत-समुदाय से जीवन-सुधार की प्रेरणा प्राप्त होती है। स्वाध्याय और सामायिक का जो संदेश आचार्य हस्ती ने दिया था उसे आचार्य हीरा के नेतृत्व में निरन्तर ऊँचाई प्राप्त हो रही है।

आचार्य हीराचन्द्र जी की विशेषता है कि वे आगन्तुक को व्यक्ति से नहीं, अपितु धर्म से जुड़ने की प्रेरणा करते हैं। उनका कथन है कि व्यक्ति से जुड़ने वाला व्यक्ति के न रहने पर धर्म की धारा से अलग हो जाता है। सम्प्रदाय से जुड़ने वाला मान-सम्मान की हानि होने पर निष्क्रिय हो जाता है। जबकि धर्म से जुड़ने

वाला आत्म-निर्भर होता है एवं वह सदैव अपना मूल्यांकन करते हुए धर्म की धारा में आगे बढ़ सकता है। आचार्य हीरा का बल संयम एवं व्रत के आराधन पर विशेष होता है। सामायिक और स्वाध्याय भी इसी में सहायक हैं। निर्व्यसनता का होना तो अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए आचार्यप्रवर पहले व्यक्ति को निर्व्यसनी बनाते हैं, फिर उसे स्वाध्याय और सामायिक के माध्यम से आगे बढ़ाकर व्रताराधन की प्रेरणा करते हैं। आचार्य श्री का स्वप्न है कि संघ में प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक पदाधिकारी व्रतधारी हो, चाहे वह बारहव्रती हो अथवा एकव्रती, किन्तु व्रतों की ओर उसकी आस्था और उसका आचरण अवश्य हो। तभी संघ का गौरव बढ़ेगा, व्यक्ति का जीवन सदाचारी एवं नैतिक होगा तथा वह उन्मार्ग की अपेक्षा सन्मार्ग की ओर गति करेगा। यही नहीं परिवार एवं समाज में सौहार्द तथा शान्ति का वातावरण होगा।

संघनायक हीरा का यह भी मानना है कि व्रत चाहे छोटा ही क्यों न अंगीकार किया जाय, किन्तु उसका पालन पूर्ण दृढ़ता से होना चाहिए। यह दृढ़ता आत्मविश्वास को बढ़ाती है तथा व्यक्ति में आध्यात्मिक शक्ति की वृद्धि करती है। भगवान् महावीर के सच्चे अनुयायी राग से विराग की ओर, असंयम से संयम की ओर, अशुभ से शुभ की ओर, हिंसा से अहिंसा की ओर, परिग्रह से अपरिग्रह की ओर तथा आसक्ति से अनासक्ति की ओर आगे बढ़ते हैं। आचार्य हीरा हर व्यक्ति के जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से निरन्तर उन्नत देखना चाहते हैं। अन्याय एवं अनीति से अर्जित धन कितना भी क्यों न हो, किन्तु वह व्यक्ति के लिए हितकर नहीं होता। उनका कथन है- ''जिस व्यक्ति के जीवन में आय के साधन अनीति एवं अन्याय से युक्त हैं, मन में, विचारों में, कार्यों में पवित्रता, निर्मलता नहीं है तो वह विशुद्धि के मार्ग पर चिन्तन नहीं कर पायेगा।'' इसका तात्पर्य है कि आत्मविशुद्धि के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए आजीविका के साधनों को सात्त्विक बनाना चाहिए। चोरी एवं अनीति का एक कारण आचार्य हीरा की दृष्टि में आवश्यकता से अधिक खर्च करने की आदत है। जैन धर्म व्यक्ति को इच्छाओं और आवश्यकताओं को घटाने की सीख देता है। आचार्य हीराचन्द्र जी जब ऊनोदरी तप की बात करते हैं तो साथ में अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं पर लगाम कसने का अनुरोध करते हैं।

आचार्य हस्ती की भांति आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. बालपीढ़ी को संस्कारित करने हेतु बल प्रदान करते हैं। वे प्रवचन सभा में माताओं और पिताओं

को भी सावचेत करते रहते हैं कि यदि आपने बालपीढ़ी को नहीं संभाला तो आपके जीवन के लिए भी अहितकर होगा एवं उन बच्चों का भविष्य भी सदाचार से युक्त नहीं हो सकेगा। एक बार प्रवचन सभा में श्राविकाओं को उन्होंने फरमाया- ''रोज गहनों को चमकाने की बजाय अपने इन चेतन रत्नों को संस्कार देने की कोशिश कीजिए।''

आचारनिष्ठा के प्रति आचार्यप्रवर हीराचन्द्र जी पूर्ण सजग रहते हैं। स्वयं साध्वाचार का निष्ठा से पालन करते हुए प्रत्येक साधु-साध्वी से यही अपेक्षा करते हैं कि वे समाचारी का पालन मनोयोग से करें। जहाँ कहीं प्रायश्चित्त का प्रावधान होता है वहाँ आप आचार्य हस्ती की भाँति प्रायश्चित्त देकर संघहित की परम्परा को निर्मल एवं निरतिचार रखने का प्रयत्न करते हैं। आचार्य हस्ती के द्वारा संथारा सीझने के पूर्व दी गई हर भोलावण का आप सम्मान रखते हुए संघ को आगे बढ़ा रहे हैं। श्रावक संघ के कार्यक्रमों से आप सदा स्वयं को मुक्त ही रखते हैं।

आप दीर्घद्रष्टा एवं प्रभावकारी महापुरुष हैं। किस निर्णय का अथवा किस गतिविधि का क्या प्रभाव होगा, इसका आकलन आपको शीघ्र हो जाता है। आपके दर्शन पाकर एवं आपसे प्रेरणा प्राप्त कर आगन्तुक श्रद्धालु श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं। आपकी मांगलिक को अनेक श्रद्धालु कष्ट निवारक एवं रोग निवारक मानते हैं। किन्तु श्रद्धालुओं की इस मान्यता को आपने कभी बढ़ावा नहीं दिया। आप निस्पृह भाव से अपनी साधना की मस्ती में रहते हैं।

जैन धर्म में अरिहन्त एवं सिद्ध ये दो देव हैं। पंच महाव्रतधारी साधु-साध्वी गुरु हैं। जब कोई लौकिक देवी-देवताओं की पूजा-आराधना करता है तो यह आचार्य हीराचन्द्र जी की दृष्टि में व्यक्ति का अज्ञान एवं मिथ्यात्व है। वह सांसारिक मनोकामनाओं में उलझ कर इन देवी-देवताओं को मनाता है तथा स्वार्थ की सिद्धि करना चाहता है, किन्तु यह भटकाव का मार्ग है। जैन धर्म पुरुषार्थ को महत्त्व देता है। देवी-देवताओं के समक्ष अथवा पत्थर की मूर्तियों के समक्ष हाथ फैलाना शोभा नहीं देता। हमें जिनेश्वर देव पर एवं पंचमहाव्रतधारी सद्गुरुओं पर आस्था होनी चाहिए तथा उनके द्वारा निरूपित मार्ग पर विश्वास होना चाहिए।

जैन धर्म राग बढ़ाने वाला नहीं, अपितु वीतराग बनाने वाला धर्म है। यह आत्मा के भीतर बैठे हुए क्रोधादि शत्रुओं को जीतने का मार्ग प्रशस्त करता है और

उसके लिए सम्यग्ज्ञान पूर्वक आचरण का विधान है। सम्यग्ज्ञान का होना सम्यग्दर्शन पर निर्भर करता है, इसलिए पहले दृष्टि को सम्यक् बनाना आवश्यक है। जो साधना वीतरागता का पोषण करती है वह आचरणीय है। आचार्य हीराचन्द्र जी का मन्तव्य है कि कोई वीतरागता की कोरी बातें करता रहे और एक कदम भी अनासक्ति की ओर न बढ़े तथा धर्माचरण के नियमों की निन्दा करता रहे तो ऐसा व्यक्ति धर्ममार्ग में सफल नहीं हो सकता। सच्ची वीतरागता के लिए समता एवं संयम का आचरण भी आवश्यक है।

व्रताराधन के क्रम में आचार्य हस्ती की भाँति आचार्य हीराचन्द्र जी का भी नियम है कि वे अपनी उम्र के जितने वर्ष पूरे करें, कम से कम उतने आजीवन शीलव्रती अवश्य बनाएँ। आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. का यह संकल्प सवाई सफलता के साथ आगे बढ़ रहा है। इस भोगवादी संस्कृति में विपुल मात्रा में ब्रह्मचर्यव्रती बनाना कोई छोटा अभियान नहीं है। एक सशक्त महापुरुष ही इन अभियानों में सफल होता है। आचार्य हीरा ने अध्यात्म-चेतना वर्ष में रत्नसंघ के चातुर्मास स्थलों के लिए यह संदेश दिया है कि इस वर्ष में अधिकाधिक व्रतधारी श्रावक-श्राविका बनें, ऐसा प्रयत्न हो।

जिस प्रकार आचार्य हस्ती सामाजिक कुरीतियों के निवारण के प्रति सजग थे उसी प्रकार आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. भी जहाँ जाते हैं वहाँ इन कुरीतियों के निवारण हेतु प्रेरणा करते हैं। कुछ शहरों में विवाह आदि समारोहों के भोज में इस कारण द्रव्यों की मर्यादा भी हुई है तथा प्रदर्शन पर उल्लेखनीय रोक लगी है। आचार्यप्रवर सहजता एवं सरलता के साथ लोगों को समझाते हैं, समय-समय पर उनके अन्तर्हृदय को झिंझोड़ते हैं तथा धर्म के मार्ग से जोड़ते हैं।

अध्यात्म-चेतना वर्ष में हम आचार्य हीराचन्द्र जी म.सा. की भावना का आदर करते हुए कोई-न-कोई व्रत अवश्य अंगीकार करें तथा जीवन को आत्मिक दृष्टि से उन्नत बनाएँ। उस नियम का पूर्ण निष्ठा से पालन करें तथा कहीं कोई दोष हो जाए तो उसमें पुनः सुधार कर आगे बढ़ जाएं। किन्तु इस अवसर का लाभ अवश्य उठाएँ। इस वर्ष में जो आजीवन शीलव्रती बने हैं, बारहव्रतधारी बने हैं, तप-त्याग में आगे बढ़े हैं, स्वाध्याय-सामायिक में नियमित हुए हैं तथा व्यसनों से विमुख हुए हैं उनसे भी हम प्रेरणा लें। जैन धर्म पुरुषार्थवादी धर्म है, स्वयं का जीवन निर्माण करने के लिए स्वयं को ही कदम बढ़ाने होंगे। जो जितने कदम आगे बढ़ेगा उसे उतना ही आत्मिक लाभ होगा।

अमृत-चिन्तन

आगम-वाणी

(प्र.) सज्झाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ।

(प्र.) वायणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) वायणाए णं निज्जरं जणयइ। सुयस्स य अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टए। सुयस्स अणुसज्जणाए अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ। तित्थधम्मं अवलंबमाणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ।।

(प्र.) पडिपुच्छणयाए णं भन्ते! जीव किं जणयइ?

(उ.) पडिपुच्छणयाए सुत्तऽत्थ-तदुभयाइं विसोहेइ। कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ।

(प्र.) परियट्टणाए णं भन्ते! जीवे किं जणयइ?

(उ.) परियट्टणाए णं वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ।

अर्थः-

(प्र.) भगवन् स्वाध्याय से जीव को क्या लाभ प्राप्त होता है?

(उ.) स्वाध्याय से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय करता है।

(प्र.) भगवन् वाचना से जीव को क्या प्राप्त होता है?

(उ.) वाचना से (जीव) कर्मों की निर्जरा करता है, और श्रुत के अनुवर्तन से अनाशातना में प्रवृत्त होता है। श्रुत के अनुवर्तन एवं अनाशातना में प्रवर्त्तमान जीव तीर्थ धर्म का अवलम्बन लेता है। तीर्थ धर्म का अवलंबन लेता हुआ साधक कर्मों की महानिर्जरा और महापर्यवसान (कर्मों का सर्वथा अन्त करने) वाला होता है।

(प्र.) भगवन् प्रतिपृच्छना से जीव को क्या प्राप्त होता है?

(उ.) प्रतिपृच्छना से सूत्र, अर्थ और तदुभय (दोनों के तात्पर्य) को विशुद्ध कर लेता है और कांक्षामोहनीय कर्म को विच्छिन्न कर देता है।

(प्र.) भगवन् परिवर्तना से जीव किस (गुण) को प्राप्त करता है?

(उ.) परिवर्त्तना से व्यंजनों की प्राप्ति होती है, व्यंजन-लब्धि को तथा पदानुसारिणी लब्धि को प्राप्त कर लेता है।

-उत्तराध्ययन सूत्र : उनतीसवाँ अध्ययन, सम्यक्त्व पराक्रम, सूत्र-18-21

अमृत-चिन्तन

विचार-वारिधि

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

समाज-सुधार

- जब तक व्यक्ति अपने स्वयं के जीवन का निर्माण नहीं कर लेता तब तक वह दूसरों के समक्ष खड़ा होकर सुधार की कोई बात कहेगा तो उसका स्वयं का मानसिक बल एवं आत्मबल अशक्त और निर्बल होने के कारण उसकी वाणी में ओज तथा तेज का अभाव होगा। उसके कथन का कोई प्रभावकारी परिणाम नहीं होगा। इस प्रकार उसके हाथ में लिया गया समाज-सुधार अथवा विश्व-सुधार का कार्य आगे नहीं बढ़ सकेगा। इसीलिए भगवान महावीर ने फरमाया है कि सुधार की दिशा में सबसे पहले स्वयं को सुधारो और तत्पश्चात् दूसरों के सुधार की बात करो।
- यदि पापी हमारे सद्प्रयत्नों से नहीं सुधर पाता तो उसके ऊपर क्रोध न कर माध्यस्थ भाव की शरण लेनी चाहिए। ऐसा व्यक्ति दया का पात्र है, क्रोध का नहीं। किसी पाप कर्म के कारण किसी भी व्यक्ति को मारने की अपेक्षा उसे समझाने या सुधारने का प्रयत्न करना अच्छा है और यदि प्रयास के बाद भी वह नहीं सुधरे तो तटस्थ भाव को ग्रहण कर लेना चाहिए। क्योंकि समस्त प्राणियों के प्रति प्रेम, मैत्रीभाव एवं दया ही मानवता का मूलोद्देश्य है।
- कोई व्यक्ति धर्म के लिए समाजसेवा या प्रचार में अपना जीवन लगा दे, फिर भी समाज यदि उसके प्रति आदर न करे तो ऐसे व्यक्ति की सत्प्रवृत्ति आगे कैसे बढ़ेगी? कोई सोना, चांदी, भूमि, भवन, पशुधन आदि परिग्रह की अपेक्षा यदि गुणों की ओर अधिक ध्यान लगावे तो ऐसे सद्गुणियों का समाज में आदर होना चाहिए।
- समाज में जन्म, मरण एवं मृत्यु पर अनेक गलत रूढ़ियाँ चल रही हैं, चाहे वे हानिकारक ही हों, किन्तु साधारण मनुष्य इस पर विचार नहीं करते। महिलाएँ तो गलत रीति-रिवाजों में और अधिक डूबी रहती हैं। जलवा पूजना, चाक-पूजन, जात देना, ताबीज बांधना, देव और पितर की पूजा करना, मरे हुए के पीछे महीनों बैठक रखना और रोना- ये सब कुरीतियाँ समाज में दृढ़ता से घर बनाए हुए हैं। इनके निवारण हेतु दृढ़ संकल्प की जरूरत है।

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

क्यों एवं कैसे करें सामायिक-साधना?

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

पूज्य आचार्य प्रवर के द्वारा सिवाना (सिवांची क्षेत्र) में शेषकाल 4 अप्रेल से 11 अप्रेल, 2010 के मध्य जो समता एवं सहनशीलता पर ओजस्वी धाराप्रवाह प्रवचनामृत फरमाये गए, उनका सार श्री जगदीश जी जैन ने संक्षेप में संकलित किया है। जिसका प्रथम अंश प्रकाशित है। दूसरा आगामी अंक में प्रकाशित किया जाएगा-**सम्पादक**

आत्म स्वभाव में रमण करने वाले सिद्ध भगवंतों, आत्मिक गुणों का विकास करने वाले अरिहंत भगवन्तों, साधना से गुणों की ओर बढ़ने वाले संत भगवंतों को कोटिशः वन्दन।

आत्म-स्वरूप की ओर उन्मुख करने वाली साधना का नाम 'सामायिक' है। सामायिक साधना की ओर चरण बढ़ाने से पूर्व इसकी पृष्ठभूमि को समझ लेना उचित लगता है। जैसे- वट वृक्ष ऊपर में जितना विशाल दिखता है, भीतर में उतना ही दूर तक फैला हुआ होता है, जड़ें जितनी गहरी, वृक्ष उतना ही विशाल। इसी तरह मनुष्य की आस्था, श्रद्धा, मान्यता, विचारधारा जितनी दृढ़ होगी, आचार का वटवृक्ष तथा सद्गुणों के फल-फूल उतने ही अधिक लगेंगे। समय आने पर वटवृक्ष के पत्ते जरूर झड़ते हैं, पर तनों से बहती रसधारा उसे फिर हरा-भरा कर देती है, इसी तरह विपत्तियाँ या प्रतिकूलताएँ मनस्वी मनुष्यों का कुछ नहीं बिगाड़ सकती, किन्तु समभाव से उन्हें सहन करने पर वे उनके व्यक्तित्व में चार चाँद लगा देती हैं। इस प्रकार सद्गुणों के मूल को सींचने वाली साधना सामायिक है।

जैसे आकाश सभी द्रव्यों का, पृथ्वी सभी जीवों का, दया सभी धर्मों का आधार है, वैसे ही सामायिक सभी गुणों का भाजन है, आधार है। समता के सहारे ही जीव में सभी गुण या धर्म टिकते हैं। जैसे-अंधेरे में बड़े-बड़े सुनसान महल और किले अटपटे और डरावने लगते हैं वैसे ही आत्मिक भाव, आत्म-विकास के बिना ये ऐश्वर्य और वैभव भी ईर्ष्या, द्वेष एवं लड़ाई के साधन बन जाते हैं। तीर्थंकर भगवान महावीर, गौतम बुद्ध और चक्रवर्ती भरत आदि महापुरुषों के पास रमणियाँ, राजपुत्र, अतुल सम्पत्ति, सुन्दर भव्य भवन, एक छात्र राज्य आदि मन

बहलाने के बड़े-बड़े साधन थे, किन्तु उन्हें ये सब अटपटे एवं डरावने लगे और एक दिन वे इन वैभव विलासों को छोड़, ममत्व को तोड़, आत्मविकास के उज्ज्वल पथ सामायिक या समता भाव की ओर बढ़ चले। आगम वचन सत्य है कि सामायिक व्रत स्वीकार न करने पर श्रावक को अपने जीवन के लक्ष्य का भान नहीं होता। कहा है- **जे के वि गया मोक्खं, जे वि य गच्छंति जे गमिस्संति। ते सव्वे सामाइयप्पहावेण मुणेयव्वं।**

वस्तुतः चिंता, शोक, विपत्ति और अभाव के निवारण के लिये कितना ही धन-वैभव और सुख-साधन जुटा लें, भौतिक विद्या पढ़ लें, बौद्धिक विकास कर लें, वैज्ञानिक आविष्कार करलें, जल-थल-नभ पर आधिपत्य जमा लें अथवा इन सबसे ऊपर उठकर कान छिदवा लें, शिर मुंड़ा लें, धुणी रमा लें, गेरुएँ या श्वेत वस्त्र धारण करलें, वस्त्र मात्र को छोड़ दें, किन्तु जब तक हृदय में समभाव का उदय नहीं होगा तब तक समस्याओं का समाधान न हुआ है और न ही होगा। सामायिक की साधना इन सब समस्याओं का सम्यक् समाधान करती है।

यह तो आप जानते हैं कि यह संसार समरस नहीं है। यहाँ शीत, उष्ण, दिन-रात, कठोर-कोमल, सुख-दुःख एवं जन्म-मरण का भी जोड़ा है। सर्वत्र न सुख है, न दुःख, फिर भी मनुष्य सुख की प्राप्ति, सुख की वृद्धि वाली लालसाएँ पोषित करने की सोच में प्रयत्नशील रहता है। वैसे मनुष्य की सामान्य इच्छाएँ शरीर स्वस्थ हो, साथी अनुकूल हो, हर कार्य में पटुता हो, बुद्धि तीक्ष्ण हो, प्रवचन या वार्तालाप की शैली आकर्षक व मिठास भरी हो, इन सबके अतिरिक्त यदि तत्त्व का ज्ञान भी हो तो सोने में सुहागा ही कहेंगे। इन अनेक कामनाओं की पूर्ति होना या मिलना पुण्यशीलता का परिचायक है। पर इच्छाओं के साथ परिस्थितियाँ भी घेरा किये रहती हैं, वे प्रतिरोध करती हैं, अतः वह पद-पद पर दुःखी होने लगता है। जन्म के साथ रोग का, धन के साथ सात भय का, पद-योग्यता के साथ ईर्ष्या व मनोमालिन्य का कारण जुड़ा है। अतः साधारण व्यक्ति को यह जीवन दुःखों का घर प्रतीत होता है। लेकिन सामायिक की साधना वाले साधक के लिये यह जीवन खेल है। जैसे- बालक क्रीड़ा, विनोद तथा भावी जीवन की तैयारी के लिये खेल खेलते हैं। कल-कारखाना, खेती, व्यापार, उद्योग धंधे प्रारम्भ करने से पूर्व बारीकी से जानकारी का प्रशिक्षण रुचि सहित लेते हैं फिर भी छोटी से बड़ी तक अगणित समस्याएँ प्रतिदिन आती हैं और उनको सुलझाना पड़ता है। सुलझाते भी

हैं,उस समय निराशा के क्षण भी आते हैं। सोचते हैं- ऐसा खेल खेलते कितने जन्म, कितने युग, कितनी परिस्थितियाँ, पात्र और क्षेत्र बदल गये, लेकिन यह खेल अभी तक चल रहा है। यही चिंतन का मूल विषय है। इस खेल को कहाँ तक खेलते रहने की कामना है? या इस पर विराम लगाना है। यदि विराम लगाना है तो दिशा बदलिये, दशा अपने आप बदल जायेगी। इतनी समता से खेलिए कि जन्म ही नहीं लेना पड़े। निश्चय के साथ-आत्मा का विकास, पूर्णता तथा लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु शेष जीवन का खेल खेलने के लिये सहनशीलता में गति कीजिये। गतिशीलता के लिये सामायिक आवश्यक है। सामायिक का सतत अभ्यास हर समस्या का हल निकालता है। सामायिक की साधना वाला विपरीत परिस्थितियों में भी समभाव तथा सहनशीलता का आश्रय लेकर प्रसन्नतापूर्वक कर्त्तव्य पथ पर दृढ़ रहता है।

सामायिक का फल तभी मिल सकता है जब सामायिक व्रत निरन्तर किया जाय। यह नहीं कि सामायिक 1-2 दिन की, फिर छोड़ दी, 8-10 दिन बाद की और फिर महीने भर तक खूंटी पर टाँग दी। जैसे- उद्योग धंधा, शिक्षा, रसोई, वृक्ष को लगन के साथ मेहनत करने पर वर्षों सींचने, खाद डालने पर वह फलदायी बनता है। इसी तरह प्रतिदिन समभाव के अभ्यास से विषम भावनाओं का जंग-कचरा-जाला और ज़हर समाप्त होता है। यदि सामायिक का फल पाना चाहते हो तो शिक्षाव्रत से शिक्षा लें कि जो दुःख एवं असमाधि के कारण हैं उन उपाधियों से मुक्त होना है। साधना उन्हीं की सुफल होगी जो समस्त परिस्थितियों में समभाव पर दृढ़ रहते हैं। समता जबरदस्ती लायी जाने वाली चित्त की अवस्था नहीं है, सामायिक सही समझ का परिणाम है। सामायिक के साधक को इस भ्रम से भी बचना चाहिये कि सामायिक/ प्रतिक्रमण वाला कैसा भी पाप करे, उसका पाप छूमंतर हो जाता है। ऐसी सोच सामायिक का मूल्य घटाने वाली है। मात्र निर्जरा अथवा कर्मक्षय के लिये सामायिक आचार का पालन करना है। दशवैकालिक अध्ययन-9 की गाथा 3-4 संकेत कर सावधान कर रही है- "नो इहलोगट्ठयाए आयारमहिट्ठिज्जा" इस लोक, परलोक एवं सुख समृद्धि, कीर्ति, प्रशंसा आदि की दृष्टि से धर्माचरण नहीं करें। अतः दोषों को टाल, सावद्य प्रवृत्ति से पृथक् हो, निरवद्य प्रवृत्ति के वातावरण में विधि सहित नियमित रूप से साधनापूर्वक सामायिक की आराधना की जाय। सामायिक के साधक को सावद्य प्रवृत्तियों के

प्रेरक-कुसंग, कुसम्पर्क, कुसाहित्य-कुदृश्यप्रेक्षण, दुश्चिंतन, दुर्व्यसन, दुर्ध्यान आदि दुष्प्रवृत्तियों से सतत बचते रहना चाहिये। निंदा, प्रशंसा, मान-अपमान एवं सर्व संयोग-वियोग को क्षणिक मान "इदमपि गमिष्यति" (यह भी चला जाएगा) के सूत्र पर आचरण वाला ही स्थितप्रज्ञ समभावी साधक है।

सामायिक की साधना केवल धर्मस्थान एवं 48 मिनट तक ही सीमित नहीं रहे, अपितु इतनी विराट् हो कि जीवन की छोटी-बड़ी प्रत्येक क्रिया, प्रवृत्ति एवं व्यवहार के माध्यम से अन्यों को भी आकर्षित करे, प्रभाव दिखावे। जैसे- सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की शीतलता, बादलों का पानी, शुद्ध वायु, अग्नि की उष्णता किसी एक क्षेत्र व्यक्ति के अधिकार की बपौती नहीं है। वैसे ही साधना का प्रकाश किसी एक क्षेत्र या व्यक्ति तक सीमित नहीं, अपितु सर्वव्यापक है। धर्मस्थान में समता और बाहर निकलते ही विषमता। यह सच्चे सामायिक साधक का व्यवहार नहीं। उसे प्रतिकूल परिस्थिति में भी सहनशीलता बढ़ाकर दृढ़ता से सम्यक् व्यवहार करना चाहिए। यदि धर्मस्थान में भी अभ्यास कच्चा रहा, समता की उपासना नहीं कर सका, निद्रा, विषय, कषाय, विषमता को हटा न सका, मन-वाणी-काया को नहीं साध सका तो द्रव्य सामायिक भी भाव सामायिक के लक्ष्य से कोसों दूर है। वास्तविक भान पाने वाले के लिये सामायिक के शब्दों की व्याख्या व अर्थ को भी समझें- वास्तव में सामायिक का अर्थ और उद्देश्य प्राणिमात्र को आत्मवत् समझते हुए समत्व का व्यवहार करना है। सम=समभाव, सर्वत्र, आत्मवत् प्रवृत्ति, आय=लाभ, जिस प्रवृत्ति से, क्रिया से समभाव का लाभ हो, वृद्धि हो, वही सामायिक है। राग-द्वेष के प्रसंगों में मध्यस्थ (सम) रहना, विषम न होना सामायिक है।

समस्त जीवों पर मैत्री रखना साम है और उसकी आय सामायिक है। कई आचार्य ज्ञान-दर्शन-चारित्र को सम कहते हैं। भगवती सूत्र में भी आत्मा को ही सामायिक कहा है- 'आया खलु सामाइए।' मोक्षाभिमुखी प्रवृत्ति सामायिक है। गुरुदेव हस्ती के अनुसार दण्ड से अदण्ड में लाने वाली क्रिया का नाम सामायिक है। श्रेष्ठ आचरण को भी सामायिक कहा है। अपने आप में सम हो जाना ही सामायिक है। तत्त्वार्थ टीका के अनुसार- सामायिक एक आध्यात्मिक साधना है। यह बाह्य वैभव, आडम्बर या प्रदर्शन की वस्तु नहीं। गुरुदेव का चिन्तन रहा कि सामायिक में स्वाध्याय आवश्यक है। बिना स्वाध्याय के सामायिक शुद्ध नहीं हो

सकती। शास्त्रकारों ने सामायिक को मोक्ष-प्राप्ति का प्रमुख अंग बताया है। उचित समय पर आवश्यक कर्त्तव्य को भी सामायिक कहते हैं।

उक्त विभिन्न दृष्टिकोणों से यही निष्कर्ष निकलता है कि सामायिक साधना मोक्ष मार्ग को प्रशस्त करने वाली बहुआयामी सद्प्रवृत्ति है। सामायिक साधना वाला सामायिक काल में साधु की जीवन-चर्या से साक्षात्कार कर लेता है। इसकी साधना वाला नारकी एवं तिर्यञ्च गति के ताला लगाकर देव गति व मोक्ष गति को प्राप्त करता है।

सामायिक को हम पहले समझें, फिर स्वीकार करें, तो फिर सामायिक करनी नहीं पड़ेगी, स्वतः हो जायगी। सामायिक सूत्र छह काय के जीवों को अपने समान समझने का रहस्य है। यह सूत्र पाँच इन्द्रियों और छठे मन रूपी छकड़ी के प्रपंच से मुक्त होने का उपाय है। सामायिक का पहला लक्षण आर्त्त-रौद्र का त्याग है। दूसरा लक्षण सावद्य योगों का त्याग है। पाप और सांप को कभी छोटा नहीं समझना चाहिये। ये दोनों ''अण थोवं वण थोवं'' के समान हैं। ऋण, व्रण, अग्नि, कषाय एवं बीज जैसे वृद्धि को प्राप्त हो जाते हैं वैसे ही छोटा पाप भी बढ़ते-बढ़ते पर्वताकार हो जाता है। सामायिक का तीसरा लक्षण सर्वेन्द्रिय संयम बताया है। इन्द्रियों के विषय ठग के समान हैं, जैसे-ठग प्रारम्भ में थोड़ा लोभ दिखाकर किसी भोले प्राणी को बुरी तरह मूंड लेता है, उसी तरह इन्द्रियों के लुभावने, मनोरम विषयों के बारे में समझना चाहिये। सामायिक साधना में आत्मशुद्धि का तत्त्व ही अधिक होता है। सर्वप्रथम **'करेमि भंते! सामाइयं'** से समत्व की प्रतिज्ञा होती है, पश्चात् **'सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'** से निंदनीय वर्णनीय पापों का त्याग होता है तथा इसके पश्चात् आत्मशुद्धि के संदर्भ में 'पडिक्कमामि, निंदामि गरिहामि तथा 'अप्पाणं वोसिरामि' करते हैं, ये चारों साधना रूप शोधन के प्रतीक हैं।

समता के अभाव में की गई सारी साधना प्राण शून्य देह का भार ढ़ोने के समान है। मात्र कपड़े बदलकर, आसन बिछाकर घण्टे भर बैठ जाना, कुछ माला जप, कुछ भजन आदि बोल लेना सामायिक की वास्तविक साधना न होकर आचार्य भगवंत (आचार्य हस्ती) के शब्दों में दस्तूर की सामायिक है। इस औपचारिकता वाली परिपाटी से हटकर गुरुदेव ने सामायिक के साथ ज्ञान साधना (स्वाध्याय) को जोड़ा-फलस्वरूप जो परिणाम आए वे आपके सामने हैं- आज शास्त्रधारी

स्वाध्यायियों की विशाल सेना पर्युषण पर्वाधिराज में संत-सतियों से वंचित क्षेत्रों में समय दान के साथ सेवाएँ दे रही है। उनकी दूरदर्शिता वाली सोच ने स्वाध्याय के प्रति जो रुचि, लगन, उत्साह का अंकुर प्रस्फुटित किया है वह आज सभी परम्पराओं में मूर्तरूप हो चुका है। संकल्प, आदत, स्वभाव और संस्कार के क्रम से मानव जीवन को ध्येय की ओर ले जाने में शिक्षाव्रत बहुत ही सहायक बनते हैं।

भारतीय संस्कृति में मंत्र-जप-ध्यान आदि श्रेष्ठ कार्यों के लिये पूर्व तथा उत्तर दिशा उत्तम मानी गई है। स्थानांग सूत्र एवं विशेषावश्यक भाष्य में भी शास्त्र, स्वाध्याय एवं दीक्षा प्रदान तथा सामायिक, प्रतिक्रमण आदि 13 श्रेष्ठ कार्य एवं धर्म क्रियाएँ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर बैठकर करने का विधान है। पूर्व दिशा जहाँ उदय पथ, प्रगति एवं क्रान्ति की सूचक है, वहाँ उत्तर दिशा दृढ़ता व स्थिरता की सूचक है। दिशा का ध्यान रखते हुए सामायिक में सिद्धासन, पद्मासन या पर्यंकासन से बैठना चाहिये। मेरुदण्ड सीधा, स्फूर्तिमान तथा मन एवं इन्द्रियाँ अडोल रहें, ऐसा प्रयास अपेक्षित है। निरन्तर और विधिपूर्वक की गई क्रिया ही सफलता की सूचक है। भगवान महावीर का सिद्धान्त ही 'कडे माणे कडे' है। अतः वीतरागता का ध्येय बनाकर साधना के समरांगण में कूद पड़ो। क्या कभी दीपक ने ऐसा रोना रोया कि मेरे पास इतने टन तेल हो, इतने किलो रूई हो, इतना बड़ा आकार हो, तब ही मैं अपनी पूरी शक्ति लगाकर इतने अंधकार से लड़कर पूर्ण प्रकाश कर सकूँगा। दीपक को ऐसे निकम्मे, बेकार शेखचिल्लियों के से मनसूबे बांधने की फुरसत नहीं है। आप सब दीपक से शिक्षा लेकर शिक्षाव्रतों का प्रश्रय लेकर गुणवर्धन का लक्ष्य रखें।

तीर्थेश प्रभु महावीर ने दिशा के साथ भाषा का जो अनमोल स्वरूप दिया वह भी स्तुत्य है। जनसाधारण के मध्य सहज-सरल बोले जाने वाली समझ में आने वाली अर्द्धमागधी भाषा में आगम वागरणा का सूत्र दिया। आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि सामायिक साधना देश के किसी भी कोने में हो रही हो या धर्मी भक्त-जन विदेशों में कर रहे हों, उन सबकी भाषा व विधि एक जैसी है। जैन धर्म के साधकों में एकरूपता वाली सामायिक साधना की यह अनूठी मिशाल विशिष्ट पहचान की द्योतक है।

जैन आगमों में सामायिक को छः आवश्यकों में पहला आवश्यक कहा है। ग्यारह अंगों के ज्ञान में (सामाइयमाइयाहिं एकारस अंगाइं) कहकर सामायिक को

ज्ञान का सबसे पहला अंग कहा है। श्रावक के शिक्षाव्रतों में भी इसे पहला शिक्षाव्रत कहा है। श्रावक का धर्म अगार है, पाँच अणुव्रतों को स्वीकार कर श्रावक ने महापाप का त्याग किया, हिंसा आदि आस्रवों का आंशिक त्याग किया, तीन गुणव्रतों के द्वारा क्षेत्र की सीमा करने के साथ, उपभोग-परिभोग की वस्तुओं का परिमाण कर अनर्थ के पाप छोड़े, किन्तु इन सबके बावजूद इस त्याग वृत्ति में स्थायित्व तभी आयेगा, जब वह आत्मस्वरूप का 'भेदविज्ञान' कराने वाली सामायिक की आराधना करे, इसीलिये शिक्षाव्रत का उपदेश है। आचार्य हरिभद्र ने-"साधुधर्माभ्यासः शिक्षा" अथवा "पुनःपुन परिशीलनम् अभ्यासः शिक्षा" शिक्षा का अर्थ करते हुए कहा- जो सद्धर्म की शिक्षा दे, ध्येय की प्राप्ति में विशेष सहायक हो और जिसका बार-बार पालन किया जाय उसे शिक्षाव्रत कहते हैं।

सामायिक की दो प्रमुख शिक्षाएँ हैं-

1. पर प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलना।
2. समागत प्रतिकूलता को हँसते-हँसते सहन कर लेना।

ये दोनों शक्तियाँ समभाव की पराकाष्ठा पर लब्ध होती हैं अर्थात् सामायिक की सम्यक् साधना करने वाले साधक को प्राप्त होती हैं। जब आप विधि सहित सामायिक की साधना करेंगे तभी इसकी प्राप्ति होगी। आपको सामायिक करते-करते कितने वर्ष हो गये हैं? लेकिन आप सामायिक को कितना समझ पाते हैं? संख्या में सैकड़ों-हजारों सामायिक हो गई हैं। लेकिन सामायिक का स्वरूप क्या है, उसकी विधि क्या है? इसकी आराधना में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की शुद्धता कितनी रही है? क्या आपके कुछ ध्यान में आया है? सन्त-सतीगण जब भी सामायिक की प्रेरणा करते हैं तो उनके प्रति श्रद्धा और विनय होने से आप सामायिक कर लेते हैं। कई वर्षों से कर भी रहे हैं और उस सामायिक को स्मरण-भजन-स्वाध्याय के माध्यम से पूरा कर, सामायिक हो गई, ऐसी सन्तुष्टि कर लेते हैं। किन्तु समता की गहराई में जाकर अनुप्रेक्षा के माध्यम से सार निकालने का काम नहीं करते। सामायिक समता का वह सरोवर है, जिसके पास बैठने वाला भी शीतलता का अनुभव करता है, मानसिक शांति के आभास की प्रतीति करता है। सामायिक करने वाला बोले या न बोले, पास बैठने वालों को अनुभव हो कि हमें भी ऐसी ही शांति चाहिये।

वीतराग, सर्वज्ञ, सामायिक साधक भगवन्तों के चरणों में बैठने वाले अपना

वैर विरोध तक भूल जाते हैं। यह तभी संभव है, जब इसका मर्म समझकर शुद्धि सहित सामायिक की जाय। शास्त्र का वचन है- "ते साहुणो जे समयं चरंति" अर्थात् साधु वे हैं- जो क्षमा, सहनशीलता, समता का आचरण करते हैं। विश्व के किसी भी देश और प्रान्त में- चाहे अमेरिका, इंगलैण्ड, कर्नाटक, महाराष्ट्र हो, किसी भी वेष में- भगवा कपड़ा, लंगोटी, श्वेत वस्त्र, नग्नता लिये हो, किसी भी मत या पंथ में- चाहे शैव, रामानुज, बौद्ध, जैन, पारसी हो, किसी भी अवस्था में- बाल, युवा या वृद्ध हो, किसी भी वर्ण में- चाहे ब्राह्मण, क्षत्रिय, ओसवाल, पोरवाल हो; उन सबकी पहचान, परख, कसौटी मात्र एक है कि-वे सब समता के सागर हों। (क्रमशः)

उनका ध्यान और मौन आज भी मेरे ध्यान में है : उमेशाचार्य

प्रस्तुति : डॉ. लक्ष्मीचन्द जैन

1. योगानुयोग से सन् 2009 का समापन और आचार्य शिरोमणि पूज्यपाद हस्तीमल जी म.सा. का सौवां जन्मदिन मनाने का सुअवसर। पावन निश्रा था आचार्यप्रवर उमेशमुनि जी 'अणु' का। आपने अतीत की यादों को दोहराते हुए प्रत्यक्ष सान्निध्य पर प्रमोद भाव व्यक्त करते हुए फरमाया कि उनकी प्रेरणाएँ आज भी मेरे ध्यान में हैं।
2. बीसवीं शताब्दी के युग प्रधान महापुरुष आज 21वीं शताब्दी का पथ प्रदर्शित कर रहे हैं। विश्वकल्याण की उनकी कामना 'व्यसन मुक्त हो विश्व हमारा' आज हम सबका कर्तव्य बना है।
3. आचार्य भगवन्त हस्तीमल जी म.सा. के इतिहास लेखन पर चर्चा करते हुए फरमाया कि वे लेखक के लिए प्रेरणा स्रोत थे। उनके ध्यान और मौन का प्रभाव आज भी मेरे ध्यान में है।
4. उनके स्वाध्याय और सामायिक की प्रेरणा को सबने अपनाकर सामाजिक कर्तव्य को लोकप्रिय बनाया है। मालव केसरी सौभाग्यमल जी म.सा. एवं कविवर्य सूर्यमुनि जी के साथ उनके सान्निध्य का जिक्र करते हुए कहा कि उनमें गजब की आत्मीयता थी।
5. जो भी उस पारस महापुरुष के संपर्क में आया वह सोना तो क्या स्वयं पारस जैसा आत्मिक गुणों से रसमय हो गया।

-छोटी कसरावद, खरगोन (म.प्र.)

प्रवचन

कितनी स्वतन्त्रता, कितनी परतन्त्रता?

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा रविवार, दिनाङ्क 15 अगस्त 2010 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराना मार्केट, पाली-मारवाड़(राज.) में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

पराधीनता को समाप्त कर स्वाधीन बनने वाले अनन्त-अनन्त उपकारी वीतराग भगवन्त और स्वाधीन बनने के लिए पर का सदुपयोग करते हुए पर में रहते हुए भी स्व-अध्ययन-स्व-लीनता द्वारा मुमुक्षुओं को स्व-पर का विवेक जगाने की सतत प्रेरणा प्रदान करने वाले आचार्य भगवन्तों के चरणों में वन्दन करने के पश्चात्-

पन्द्रह अगस्त 1947 को क्या हुआ? डहाणु के उपाश्रय में एक प्रेरक पत्र लगा हुआ था, श्री मनीष मुनि जी ने 2002 के दिसम्बर माह के प्रवास में पढ़ा। 15 अगस्त 1947 को क्या हुआ? श्रोताओं में से- **देश आजाद हुआ।** नहीं, दृश्य पराधीनता को छोड़ कर अदृश्य पराधीनता में प्रविष्ट हुआ। दिखने वाली गुलामी मिट गई, पर नहीं दिखने वाली गुलामी चारों तरफ छा गई है।

डहाणु स्थानक में लिखा सूत्र महत्त्वपूर्ण था। देश अंग्रेजों की दासता से स्वतंत्र हो गया, किन्तु अंग्रेजों के कपड़े जिनकी स्वतंत्रता आन्दोलन में होलियाँ जलाई जाती थीं, आज पाली शहर में ही नहीं, छोटे-छोटे गांवों और कस्बों में विदेशी कपड़ों की दुकाने मिल जायेंगी। आराम से हिन्दी भाषा में काम चलता था, अब अंग्रेजी के कारण छोटे-छोटे बच्चे हिन्दी लिखना तो दूर, बोलना नहीं जानते।

हम 1857 की क्रांति पर दृष्टिपात करें तो पराधीनता कैसी होती है, आँखों के सामने घूम जायेगी। पिंजड़े में बन्द जानवर तड़फ रहे थे। आज सावण सुदी छठ है। इस दिन अरिष्ट नेमिनाथ भगवान की बारात बेरंग लौटी। और तभी से चौमासे में शादी होना बंद हो गया। यह बात आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के प्रवचन में पढ़ने को आई।

आज भगवान अरिष्ट नेमिनाथ का दीक्षा कल्याणक है। दीक्षा के एक साल पहले पराधीनता में जकड़े पशुओं का करुण क्रन्दन सुनकर उन्होंने पूछा था- यह करुण क्रन्दन क्यों? उत्तराध्ययन सूत्र के 22 वें अध्ययन में वर्णन मिलता है। सारथी से पूछा- ये पशु क्यों विलाप कर रहे हैं, रो-चिल्ला क्यों रहे हैं?

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो।
वाडेहिं पंजरेहिं य सण्णिरुद्धा य अच्छहिं।
अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो।
तुज्झं विवाहकज्जम्मि भोयावेउं बहुजणं।।

सारथी ने प्रत्युत्तर में कहा- आपके विवाह प्रसंग के कारण अनेक लोगों के भोजन की तैयारी में इन पशुओं को बांध रखा है। जिस काल में तीर्थंकर जन्मते हैं उस समय चौथे आरे में बारात के लिए बन्द किये गये पशुओं से स्पष्ट है कि उस काल में मांस खाने वाले लोग थे। अन्तगड सूत्र के पाँचवें अध्ययन में वर्णन है जिसमें कहा गया है कि कृष्ण की नगरी द्वारिका का विनाश शराब से होगा। मांस और शराब के कीचड़ में कमल खिलाने वाले महापुरुष बनते हैं। विपरीतता में जीव जल्दी आगे बढ़ सकता है। अगर सही रूप में विपरीतता को देखने का प्रयास करें तो पता लगेगा कि ये जो बाधाएँ है उन्हें और किसी ने नहीं, मैंने खड़ा किया है। अगर मैंने बाहर के पदार्थों से सम्बन्ध नहीं जोड़ा होता तो यह विपरीतता शायद नहीं आती। सूत्रकृतांग सूत्र के पहले अध्ययन की दूसरी गाथा है-

चित्तमंतमचित्तं वा परिगिज्झ किसामवि।
अण्णं वा अणुजाणइ एवं दुक्खा ण मुच्चइ।।

सचेतन-अचेतन पदार्थों को अपना मानकर ग्रहण करना बन्धन है। ममता-आसक्ति-परिग्रह- अटेचमेंट सम्बन्ध रखना बन्धन है। मूल के आठ बोल चलते हैं। सभी गुणों का मूल विनय है तो सभी बन्धनों का मूल आसक्ति है। परिग्रह-ममता-अटेचमेंट इनमें हम पड़ते हैं तो वह खुद की विडम्बना से। हम केवल द्रव्य की स्वतंत्रता की चर्चा करके नहीं रहें, क्योंकि द्रव्य स्वतंत्रता की चर्चा के साथ जब तक जीव भाव बन्धन को नहीं समझेगा तब तक वास्तविक स्वतंत्रता नहीं आ सकती। 1857 की क्रांति की बात आपको ध्यान में होगी। उस क्रांति का कारण खोजा जाय, उसकी योजना बनाने वालों को देखा जाय।

एक कारण रहा कारतूस में चर्बी। पर वह क्यों लगानी पड़ी? उसके लिये देखना होगा लार्ड मैकाले का 2 फरवरी 1835 का भाषण। इंग्लैण्ड की संसद में मैकाले का दिया गया भाषण जो अखबार में आया, वकील साहब शिखरमल जी सुराना के सुपुत्र विनोद जी से वह कटिंग उपलब्ध हुई।*

उसने कहा था- मैं भारत में लम्बाई-चौड़ाई घूम कर आया हूँ, मुझे एक भी भिखारी, चोर-उचक्का नजर नहीं आया। इस देश को गुलाम रखना है तो यहाँ की शिक्षा में बदलाव करना होगा। शिक्षा में बदलाव किए बिना हम इस देश को गुलाम बना ही नहीं सकते। यहाँ के लोगों के हृदय पर आगम-वाणी का प्रभाव, तुलसीकृत रामचन्द्र भगवान का प्रभाव है, यहाँ कृष्ण की गीता का पारायण चलता रहता है। उस समय सैनिकों को यदि यह कह दिया जाता कि जिस कारतूस को वे काम ले रहे हैं उन पर सुअर की चर्बी लगी है तो वे विद्रोह कर सकते हैं। वह लंबा-चौड़ा भाषण नहीं है, आठ-दस पंक्तियों का भाषण है उसमें मुख्य रूप से यही बात कही गई है कि इस देश को गुलाम रखना है तो इस देश की संस्कृति तोड़नी होगी, संस्कार खण्डित करने होंगे। दृश्य पराधीनता छोड़कर अदृश्य पराधीनता में प्रविष्ट कराना है तो शिक्षा-संस्कृति बदलनी होगी।

क्या आज आप स्वतंत्र हैं? ऊपर के शासक जरूर बदल गये, किन्तु सांस्कृतिक दासता कितनी है, चिन्तन करें। शायद आप में से बचपन में कोई इंग्लिश मीडियम स्कूल में नहीं पढ़ा होगा, पर आज आपके बच्चे कहाँ पढ़ते हैं? आज हर घर के बच्चे अंग्रेजी स्कूल में पढ़ते हैं। शिक्षा ने मानसिक रूप से पूरी तरह गुलाम बना दिया है।

*** LORD MACAULAY'S ADDRESS TO THE BRITISH PARLIAMENT ON 2 FEBRUARY,1835**

I have travelled across the length and breadth of India and I have not seen one person who is a begger, who is a thief, such wealth I have seen in this country, such high moral values, people of such caliber, that I do not think we would ever conquer this country, unless we break the very backbone of this nation. Which is her spiritual and cultural heritage and therefor I propose that we replace her old and ancient education system, her culture, for if the Indians think that all that is foreign and English is good and greater than their own, they will lose their selfesteem, their native culture and they will become what we want them a truly dominated nation.

श्रावण शुक्ला षष्ठी का दिवस आत्मोत्थान के लिए न केवल जीवों की मैत्री का दिन है, अपितु बंधन से मुक्ति का भी दिवस है। अरिष्टनेमि इस दिन संसार के बंधन को तोड़कर प्रव्रजित हुए थे। बन्धन क्या? एक हाथ पर दूसरे हाथ को उल्टा रखकर हथलेवा जोड़कर बन्धना-पाणिग्रहण करना। बन्धन मुक्ति का रास्ता है हाथ पर हाथ को सीधा रखना, अर्थात् ध्यान मुद्रा। धर्मध्यान और शुक्ल ध्यान हो तो बन्धन मुक्ति का रास्ता है। आप बन्धन में बंधते हैं तो हाथ कैसे रखते हैं? और बन्धन मुक्ति के लिये भगवान अरिष्टनेमि शादी करते-करते रुक गये। उल्टा काम नहीं किया। हाथ पर हाथ सीधा रखकर ध्यान में लीन हो गये।

अरिष्टनेमिनाथ भगवान बारात लेकर आए थे, पशुओं का विलाप सुना, वापस लौट गये और आत्म-साधना में आगे बढ़कर सदा-सदा के लिए स्वाधीन बन गये।

15 नवम्बर, 1857 को मुगल बादशाह के चिराग पर अंग्रेज सरकार ने धावा बोला। भारत की स्वतन्त्रता का पहला दस्तावेज था अमरचन्द बांठिया, हुक्मीचन्द कानूंगा और मुनीरबेग इन तीनों के हस्ताक्षर युक्त पत्र। काका कालेलकर, राममनोहर लोहिया जैसे लोगों ने लिखा कि अमरचन्द बांठिया और हुक्मीचन्द कानूंगा भारत की आजादी के स्वतंत्रता के प्रथम स्वप्न द्रष्टा थे। दोनों जैन थे। अंग्रेज सरकार की नींद उड़ गई। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को विजय पर दस लाख रुपये दिये थे। इतने टेलन्टेड-बुद्धिमान व्यक्ति थे, वहाँ के राज्य की आय तेजी से बढ़ाई।

आज कितना गिरावट का दौर चल रहा है। आप थोकड़े सीखें, आगम सीखें, भजन सीखें, सबसे वैराग्य आ सकता है। जैन धर्म का मौलिक इतिहास भी प्रेरणा दे सकता है। रतनलाल जी बाफना यहाँ बैठे हैं, इन्होंने जैन धर्म का मौलिक इतिहास की परीक्षा ली। उस परीक्षा में गुजरात के जयन्तीलाल शाह ने पहला स्थान पाया। जयन्तीलाल जी एस.ई.थे। रिटायर हैं। वे बारह महीने एकासन करते हैं। बीच में उपवास-बेंले-तेले भी आते हैं। जैन धर्म का मौलिक इतिहास का संक्षिप्तीकरण का श्रेय भी उन्हीं को जायेगा। सूरत में संत-सतियों को पढ़ाते, जीवन को सार्थक कर गए। (अब वे दिवंगत हो गए हैं।)

संवत् 1906 में आचार्य श्री हमीरमल जी महाराज के सान्निध्य में विनयचन्द जी कुम्भट ने चौबीसी लिखी तो उसी वर्ष एक महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ। रत्नसंघ के वादीमर्दन कनीराम जी महाराज ने 'सिद्धान्तसार' ग्रन्थ की रचना की। यह पुस्तक कुचामन के आस-पास विचरण करने वाले दया, दान सम्बन्धी अलग धारणा देने वाले सन्तों की मान्यता के खण्डन में लिखी गई। इस पुस्तक को हिन्दी भाषियों ने सम्मान नहीं दिया, गुजराती भाइयों ने उसका अनुवाद किया। 'सद्धर्म मण्डन' की रचना पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज ने की। यह रचना सिद्धान्तसार के आधार पर ही हुई। सिद्धान्तसार गुजराती भाषा में छपा। यह हिन्दी भाषियों की पोलपट्टी है कि उनकी स्वाध्याय में आगे बढ़ने की तैयारी नहीं है। हमें इस स्थिति में भी निराश नहीं होना है। हमें जगना है, इसी क्षण से आगे बढ़ना है। हम समय का सदुपयोग नहीं कर रहे हैं। कर्मबन्ध में बढ़ जाते हैं, पर कर्म काटने के लिए कैसी तैयारी है?

हुक्मीचन्द जी कानूंगा के पिता को मार दिया गया। बेटा पकड़ में नहीं आया, सारी वह घटना कहें उतना समय नहीं है, पर 16 जनवरी,1858 को उनकी पत्नी को चांडालों द्वारा निर्वस्त्र किया गया। उस समय मिर्जा मुनीर बेग का भतीजा अफजल बेग वहाँ खड़ा था, उसने कपड़ा डाल कर लज्जा बचाई तो अफजल बेग को गोली से उड़ा दिया गया। आठ साल के उनके बच्चे को लहुलुहान कर दिया गया और फिर उस आठ साल के व दूसरे उन्नीस साल के बच्चे को तोप के आगे रख भारतीय तोपचियों द्वारा चिथड़े-चिथड़े उड़ा दिये गये।

आप इतिहास उठाकर देखें। जीव को कैसे ऊपर उठना है? उनकी पत्नी उमा बहन कालकवलित हो गई। मजिस्ट्रेट द्वारा निर्दोष घोषित करने पर भी 26 जनवरी 1858 को मिर्जा मुनीर बेग और हुक्मीचन्द जी कानुंगा को गोली से उड़ा दिया। हुक्मीचन्द जी कांनूगों को दफनाया गया, मिर्जा बेग को जलाया गया।

हमें देखना है बन्धन तोड़ने वाले संघ में आकर भी हम बंधन बांधने वाले या बन्धन बढ़ाने वाले काम तो नहीं कर रहे हैं? ईमानदारी से दोषों का अन्वेषण करता है। 22 जून 1958 को अमरचंद बांठिया ने फांसी पर लटकने

के पहले सामायिक की अन्तिम इच्छा बताई। वे प्रथम स्वप्नद्रष्टा थे। फांसी पर लटकने से पहले सामायिक की, फिर नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ फांसी के फंदे पर लटक गये। सामायिक आत्म-उत्थान का मार्ग है जिसे हर क्षण याद रखने की जरूरत है। आप में से कई हैं जो अब तक सामायिक नहीं कर पा रहे हैं उनको स्वतन्त्रता के स्वप्नद्रष्टा से सीख लेनी है। आप चाहें तो सामायिक ही क्या, बारह व्रत अंगीकार कर सकते हैं और आगे बढ़ें तो पांच महाव्रत भी धारण कर सकते हैं। आप त्याग-तप करें। खाने-पीने-पहनने के पदार्थों की मर्यादा करें, दिशाव्रत की मर्यादा करें। पराधीनता दुर्दशा देने वाली है। और भी सुना है भगतसिंह के साथ फांसी पर झूलने वाले 20 में से 10 जैन थे।

मुम्बई से 'भूलने के विरुद्ध' किताब निकली है उसमें बहुत सारे आंकड़े दे रखे हैं कि आज भारतीय कैसे गुलामी की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं। आप बाहर की द्रव्य-आजादी को भी जीवित रखें, क्योंकि आजादी में धर्म का पालन सहज हो सकता है। आप पाकिस्तान में धर्म का पालन करना चाहें तो मुश्किल से होगा। प्राचीनकाल में जिस नगर में धर्म-साधना होती है उसका वर्णन शास्त्रों में मिलता है। रिद्धत्थिमिय समिद्धे जैसे विशेषण नगर के बताए गए हैं। ऋद्ध का मतलब है भवन-महलों आदि से युक्त। स्तमित का मतलब है बाहरी व भीतरी खतरों से मुक्त- आतंककारी -चोर-लुटेरे नहीं और समृद्ध का मतलब है धन-धान्य से भरापूरा भण्डार। रहने का मकान हो, बाहर-भीतर से खतरा नहीं हो और समृद्धि हो, ऐसा सुखविपाक जैसे सूत्र में विस्तार से वर्णन है। तभी नगर रहने के योग्य होगा, तभी धर्म संघ सुरक्षित होगा। तभी धर्म साधना की जा सकती है।

देश की सुरक्षा- स्वाधीनता आवश्यक है। बाहर से खतरा नहीं रहेगा तो धर्म-ध्यान निर्विघ्न हो सकेगा। आचार्य भगवन्त कृपाकर पधारे हैं, आप आचार्य श्री के मुखारविन्द से स्वाधीनता क्यों जरूरी है, सुनें। हम आपश्री की सन्निधि का लाभ उठाकर पूर्ण स्वाधीन बनने का प्रयास करेंगे तो सदा के लिए पराधीनता समाप्त कर सकेंगे।

प्रवचन

उपकारी का मानें उपकार

श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा.

श्रद्धेय श्री लोकचन्द्र जी म.सा. द्वारा, 10 अगस्त, 2010 को स्वाध्याय भवन, गोटन में फरमाए गए इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन मेहता, सह-सम्पादक, जिनवाणी ने किया है। **-सम्पादक**

धर्मप्रेमी बन्धुओं!

जो परम भाव में स्थित होते हैं वे परमेष्ठी कहलाते हैं। हम भी परमभाव से युक्त बनें। इसके लिये हमारी अनन्त काल से यात्रा चल रही है। इस यात्रा में हमारे जो भी सहयोगी बने हैं उनको धन्यवाद देना चाहता हूँ। आपको कोई स्टेशन पहुँचा देता है तो आप उसका धन्यवाद करते हैं। किसी को कोई रास्ता बताता है तो उसके सहयोग के लिए धन्यवाद दिया जाता है। इसी प्रकार अनादि काल से हमारी यह यात्रा चल रही है। इस यात्रा में परमभाव हेतु जो भी सहायक बने हैं, उन सबको धन्यवाद देना चाहिये।

धन्य है पुण्य प्रभु जिससे शरण में आपके आये।
चित्त में चार मंगल की, अखण्डित भावना भाये।

हम कर्मों से आबद्ध हैं। कर्म आठ हैं। कर्म की एक सौ अड़तालीस प्रकृतियां होती हैं। जो भी घाती कर्म हैं, जो घात करते हैं, उन्हें पाप कर्म के रूप में गिना जाता है। कुछ अघाती कर्म हैं वे आत्मा को आगे बढ़ाने में सहयोग कर सकते हैं। वे कर्म अनुकूलता देते हैं, सहायक होते हैं, समाधि देते हैं, जिससे हम मंजिल के निकट आ सकते हैं।

यह भगवान बनने का मार्ग है। इस मार्ग को निकट करना होगा। इस मार्ग में कई अवरोधक तत्त्व हैं तो कई पुण्य कर्म सहायक हैं। मनुष्य गति किसके कारण से मिली है? मनुष्य गति पुण्य के कारण से ही तो प्राप्त हुई है। हम जड़ को नहीं, आत्मा के पुरुषार्थ को धन्यवाद दे रहे हैं। यह परोक्ष रूप से पुण्य का धन्यवाद है। हम आर्यक्षेत्र में अवतरित हुए। आर्य क्षेत्र में अवतरण हुआ तो कहना होगा जीव पुण्य की पूंजी लेकर आया, इसीलिए आर्य क्षेत्र मिला। आर्य क्षेत्र आप-हमको नहीं, अनेक को मिला है। गोटन में बहुत लोग हैं, पर जिन्हें

भी जिनवाणी श्रवण का अवसर मिला है उसमें भी पुण्य सहायक है। जैन कुल की प्राप्ति के उपरान्त भी कई लोग धर्म-साधना नहीं कर पाते, उन्हें कुछ न कुछ रोग है। रोग से ग्रस्त धर्म-साधना नहीं कर सकता। आपकी पुण्यवानी तो इतनी प्रबल है कि आपको न केवल जैन कुल मिला, अपितु स्वस्थ शरीर भी मिला। इन्द्रियों की विकलता भी नहीं है। इन्द्रियां नीरोग हैं, फिर सुगुरु का सुन्दर सुयोग प्राप्त होना भी पुण्य का कारण है। हम प्राप्त सुयोग का सुन्दर सदुपयोग कैसे करें इसकी चर्चा करनी है। आपके सामने भोजन की थाली आ गई। कोई आपके रिश्ते-नाते वाला कवे दें, तो भी चबाने एवं पचाने का पुरुषार्थ तो आपको ही करना होगा। पुण्य के कारण आपको हमको सभी अनुकूलताएँ प्राप्त हो गईं। गुरु पुण्य के कारण से मिल गये। कहना होगा- आपको आर्य क्षेत्र मिल गया, पर आर्यवत् आचरण बने, इसके लिए पुरुषार्थ करना होगा। इन्द्रियाँ तो मिल गईं, पर इन्द्रियों का सदुपयोग कर अनिन्द्रिय बनने के लिए पुरुषार्थ तो करना ही होगा। गुरु भगवन्त की कृपा का प्रसाद हमें पुरुषार्थ से मिलेगा। हमारा अन्तःकरण उस सुयोग में निमग्न हो जाय, श्रद्धा और समर्पण भाव हो तो हमें गुरु कृपा का प्रसाद मिलेगा ही।

आप गुरु से मांगलिक सुनते हैं। आपको कभी कहीं बाहर जाना हो, दुकान पर जाना हो, ऑफिस जाना हो तो आप मांगलिक लेकर जाते हैं। मांगलिक मंगल करने वाली है। कर्म बांधने के लिए किए जाने वाले काम के पहले भी आप मांगलिक लेते हैं। क्यों? अमंगल में हमारा मन उलझ कर न रह जाय। हमारा चित्त मंगल कार्यों में ही लगा रहे। परन्तु स्थानक में आने के बाद घर याद आता है तो यह मंगल में अमंगल है। संसार की इच्छा होना, घर-गृहस्थी की याद आना मंगल में अमंगल है, वह गुड़-गोबर जैसा ही हो गया। कई अमंगल में धर्म रूप कार्य हो इसके लिए मांगलिक सुनते हैं। आप सुनते हैं- चार शरणां, मांगलिक करणां। आप शरणा ग्रहण नहीं करेंगे तो दुर्गति कैसे टलेगी? सब कुछ अनुकूल संयोग है, बाजार में सोने के भाव ऊँचे चल रहे हैं, पर शटर बन्द करके बैठे रहे तो? जरूरत है अन्तश्चेतना को जागृत करने की। ठाणांग सूत्र और सूत्रकृतांग सूत्र में महत्त्वपूर्ण सूत्र है- **संबुज्झह किं न बुज्झह**।

जागो, जानो और तोड़ो इतना सा पुरुषार्थ हम कर लें तो बेड़ा पार है। गुरु भगवन्त कहते हैं- जागो। क्यों नहीं शाश्वत को छोड़कर अशाश्वत की

दिशा में आगे बढ़ रहे हो? हमें ज्ञान करना है, भान करना है। हमारी श्रद्धा कहाँ? आप सांसारिक साधनों को जुटाने में हित तो नहीं मान रहे? अधिकांश लोग चाहते हैं कि हमारे संसार के साधन बढ़ते रहें। क्या बाहरी साधन श्रद्धा के विषय हो सकते हैं?

हम माता-पिता को श्रद्धेय मानते हैं। ठाणांग सूत्र के तीसरे ठाणे में तीन जनों के उपकार की बात कही है। आपने सुन लिया- यह धन-दौलत, कुटुम्ब-परिवार कुछ भी हमारा नहीं है। माता-पिता क्या हमारे सहायक, श्रद्धाभूत, हितकर नहीं बन सकते? ठाणांग सूत्र में तीन का उपकार बताया, उस उपकार से उऋण होना मुश्किल है। उपकारी हैं- माता-पिता, उपकारी हैं- शिल्पाचार्य जो व्यावहारिक-शैक्षणिक ज्ञान करवाते हैं। इसी तरह धर्माचार्य-धर्मगुरु-धर्मोपदेशक का भी हम पर उपकार है। धर्माचार्य के ऋण से भी हम उऋण नहीं हो सकते।

माता-पिता का उपकार है, पर वे सदा नहीं रहेंगे। माता-पिता के साथ इस भव में हमारा सम्बन्ध नया नहीं है। माँ-बाप और परिवारजनों के साथ एक बार नहीं, कई-कई बार सम्बन्ध रह चुका।

कभी पितु बना माता, कभी रंक कभी राया,
नहीं जीव बचा कोई, सम्बन्ध न हो पाया।
झूठे इन रिश्तों में, मैंने नाश किया भारी,
आत्म का हितकारी, दीक्षा है सुखकारी।
पथ मुक्ति का श्रेयकारी, दीक्षा है सुखकारी।।

हम सच्ची खोज में लगें। हमें पंच परमेष्ठी की खोज में लगना है। साइन्टिस्टि खोज करता है। हमारे सबसे बड़े साइन्टिस्ट हैं सिद्ध भगवान। वे सिद्ध शिला पर अवस्थित हैं। उन्होंने आत्मा की सम्पूर्ण खोज कर ली। हम बोलते भी हैं- जो एगं जाणेइ से सव्वं जाणेइ। सिद्ध भगवान अशरीरी हैं। उन्होंने समस्त गुण प्रकट कर लिए। सिद्ध भगवन्त के पश्चात् अरिहन्त भगवन्त भी साइन्टिस्ट हैं जिन्होंने ज्ञान को प्रकट कर लिया। अरिहन्त भगवन्त संसार को उपदेश देते हैं। जैसे साइन्स टीचर पढ़ने वाले बच्चों को ज्ञान करवाते हैं, अरिहन्त भगवन्त भी हमें ज्ञान करवाते हैं। आचार्य भगवन्त, उपाध्याय भगवन्त आत्मा

की खोज करने में लगे हैं, वे हमें भी सत्पथ दिखाते हैं, सन्मार्ग पर लगाते हैं। संत-मुनिराज भी शांति में अल्पभाषी बनकर आत्मा की खोज में लगे हैं। संत अपने सान्निध्य में आने वालों के साथ चर्चा करके खुद आगे बढ़ना चाहते हैं, जिनसे चर्चा करते हैं उन्हें भी आगे बढ़ाना चाहते हैं।

विज्ञान किसे कहते हैं? वर्तमान में जो ज्ञान है वह विकृत ज्ञान भी हो सकता है। भगवती सूत्र में गाथा आती है-

सवणे णाणे य विण्णाणे।

श्रवण से ज्ञान चेतना जागृत होती है। ज्ञान से विज्ञान अर्थात् विशिष्ट ज्ञान प्राप्त होता है। माता-पिता का और शिल्पाचार्य का हमारे पर उपकार है। माता-पिता जन्म देते हैं इसलिये उपकारी हैं तो शिल्पाचार्य जीवन की कला सिखाते हैं। जीवन कैसे चलाना यह शिल्पाचार्य का काम है, पर धर्माचार्य जन्म-मरण के चक्र को नष्ट करने वाले होते हैं। आज हम ऐसे धर्माचार्य-धर्मगुरु का स्मरण कर रहे हैं। गुरु का महान् उपकार होता है।

पाया है मानव का तन, यतना से करना यतन।
पालना प्रभु के वचन, यति धर्म लवलीन बन॥

माता-पिता का उपकार है, इसलिए उनकी सेवा करनी चाहिये। श्रवण कुमार के समान कोई कावड़ में बैठाकर तीर्थ यात्रा कराए तो भी ऋण से उऋण नहीं हो सकता। रामचन्द्र जी चौदह साल वनवास में रहे तो क्या माता-पिता के ऋण से उऋण हो गये? ऋण से उऋण होने में बाहर का कोई कर्त्तव्य काम का नहीं है। जो जन्म देते हैं उन माता-पिता को धर्म के मार्ग पर लगाने से, उन्हें धर्म में स्थिर करने पर और कभी शिथिल बन जाय तो वापस धर्मभावना से ओत-प्रोत कर ऋण से उऋण हो सकते हैं। संसार का ज्ञान करवाने वाले शिल्पाचार्य को फीस देकर हम उऋण नहीं हो सकते हैं। दो उपकारी तन के हैं और एक जीवन के हैं।

गुरु से ही परम गुरु की प्राप्ति होती है। पूज्य आचार्य श्री शोभाचन्द्र जी महाराज ने अपने शिष्य को शिष्य ही नहीं रखा, उसे परम गुरु बना दिया। गुरु शिष्य को भगवान के साथ जोड़ते हैं। जो गुरु अपने साथ जोड़े वह जुड़ाव आत्महित की दृष्टि से कल्याणकारी नहीं हो सकता। हम गुरु भगवन्तों की वास्तविक शरण प्राप्त करें। ■

आचार्य हस्ती जन्मशती

अमरत्व का वह उपासक (10)

आलेखन - श्री सम्पतराज चौधरी

श्रद्धेय मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के विशिष्ट गुणों का प्रशस्ति गान एवं उनके प्रति अपने अहोभाव चर्चा-वार्ता में समय-समय पर व्यक्त किये। गुरुदेव के जन्म-शताब्दी वर्ष में मुनि श्री के भावों का प्रस्तुतीकरण श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली नेअपने शब्दों में धारावाहिक रूप में किया है।

भरलूँ इस छवि से अन्तरतम

पथिक,

अतीत में अतिमुक्त कुमार को
लघुवय में ही एक गौतम मिल गये
जो उसे महावीर तक ले गये।
वह शीघ्र ही संबोधि पा, सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गया।
शिशु हस्ती को भी
हरखचन्द स्वामी के रूप में एक गौतम मिले
जो उन्हें शोभागुरु के रूप में महावीर तक ले गये।
उन्हें जिनधर्म का आलम्बन मिला।
वे ज्ञान से संपृक्त होकर
शील की विभूति हो गये,
सत्पथ के दीपक बन गये।
वैराग्य के साथ विनय का वैभव पाया,
पुरुषार्थ के साथ मैत्री का माधुर्य पाया,
तेज के साथ सहृदयता का रस पाया,
सत्त्व के साथ क्षमा के फूल पाये,
अप्रमत्तता के साथ शांति के स्वस्तिक पाये,

स्व-पर का बोध पाया और
वे संबोधि के संवाहक हो गये।
उनका श्रमणत्व आकर्षण का उत्स्रोत बन गया।

पथिक,
आत्म-बोध की पहली किरण में
शिष्यत्व को साधना होता है।
हस्ती ने शिष्यत्व को साधा तो गुरुत्व को पाया।
उनके स्नेह, वात्संल्य, प्रेम, विनय, शील और त्याग में
एक ज्योति उद्भूत हुई जिसके प्रकाश में
उनके संसर्ग में आने वाले जगमगा उठे।
वे समस्त भेदभाव को भेद कर
सर्व हित के अभिलाषी हो गये,
विरोध से परे हो गये।
ऐसे ही संत पुरुषों के लिये कहा है-
संत विटप सरिता गिरि धरनी।
पर हित हेतु सुबन्ह कै करनी॥
संत, सरिता, शैल और तरु
इन सबका काम दूसरों का उपकार करना है।

पथिक,
गुरु हस्ती एक अलग टीले पर खड़े होकर
शिष्यों को उपदेश देने वाले गुरु नहीं थे,
वे उनके जीवन में मिलकर
उनके हर कर्म को मनोहरता प्रदान करने वाले
एक सहधर्मी एवं नायक थे।
एक कलाकार जब किसी मूर्ति को गढ़ता है तो
उसमें बाहर का सौन्दर्य दिखाई देता है।
गुरुदेव जब जीवन्त मूर्तियों को गढ़ते थे तो

उनमें अन्दर का सौन्दर्य दिखता था।

मुनिवर,
ऐसा प्रतीत होता है कि
इस दुषम काल में भी
वे अपने अनुयायियों के लिये
एक आश्चर्यजनक अवलंबन थे।
उस परम माहात्म्यवंत सद्गुरु का
जिसे भी सान्निध्य मिला,
उनके प्रति जिसकी भी श्रद्धा जगी,
वह निश्चय ही भाग्यवंत है।
आपको उनमें अपूर्व श्रद्धा है।
आपके जीवन को संवारने में भी
उस महाशिल्पी का महत्त्वपूर्ण पृष्ठ-पोषण होगा ही?

पथिक,
केवल मैं ही नहीं, उनके सभी शिष्यों की साधना को
सौन्दर्य प्रदान करने में उन्हीं का प्रत्युपकार था।
जैसे वायु प्राणदायी होते हुए भी
उसमें दीपक बनने की सामर्थ्य नहीं होती है,
वह सम्भावना तो मिट्टी में ही होती है,
उसी प्रकार गुरुदेव भी व्यक्तियों में छुपी
सम्भावनाओं को देखकर उन्हें गढ़ते थे
ताकि उनकी स्वाभाविक विशिष्टताएँ उत्कर्षता को प्राप्त हों।

पथिक,
यद्यपि कहने के लिये तो मुझमें
ऐसी कोई विशिष्टता नहीं है, फिर भी यह सही है कि
यदि गुरुदेव का वात्सल्य नहीं मिला होता
तो मैं श्रमण-पथ पर चलने के योग्य नहीं होता।

गुरुदेव का सामीप्य
मेरे लिये मात्र कोई घटना नहीं थी,
वह तो जीवन की निरन्तर बहती हुई धारा हो गई,
जिसमें अवगाहन करके
मैंने साधना की निर्मलता का साक्षात्कार किया।
मेरे जैसे नादान शिष्यों को गढ़ने की उद्‌भावना
उन जैसे महापुरुषों के मानस में ही सम्भव होती है,
अन्यथा, मुझमें क्या पात्रता थी?

उन्होंने मुझ जैसे एक अबोध बालक को जगाया।
मैंने घर छोड़ दिया।
उन्होंने हाथ पकड़ लिया और बोले-
"गौतम, तुम अगणित संसारों के अवसान
और उदय के बाद भी अपना घर नहीं पा सके।
बीता समय तुम्हारा नहीं था,
अब समय में आ जाओ..........
मेरे साथ चलो..........अपना घर खोजने।"
गुरुदेव मानो मेरे हितसंपादन के लिये
मेरी अन्तःप्रवृत्ति में प्रवेशकर
अपने भावों की व्यंजना कर रहे थे।
ससीम धरती और असीम आकाश के
संधि-स्थल पर
उनके वात्सल्य की लाली प्रस्फुटित होने लगी।
एक ज्योति किरण निकली
जिसके प्रकाशन में गुरुदेव ने
मुझे वात्सल्य के अक्षय-धन के साथ
अनुशासन का महाकोश भी थमा दिया और बोले-
"जीवन के उषाकाल में ही इसे पढ़लो।"

पथिक,

मुझे मुनि जीवन में पग रखते ही
उनके अमित प्रेम का पाथेय तो मिला ही,
साथ ही साथ
साधु के आचार और कर्त्तव्य के निर्वहन का बोध भी मिला।
उन्होंने मेरी अंगुली थामी
ताकि मैं भटक न जाऊँ।
मुझे संवारने में वे कभी
कोमल हुए तो कभी कठोर,
कभी करुण हुए तो कभी उदासीन,
लेकिन मेरे योगक्षेम में वे कभी निरपेक्ष नहीं रहे।
कभी नासमझी के लिये उपालम्भ भी मिला तो
कभी अनुशासन के अतिक्रमण पर
उनका कोप भाजन भी बना।
मेरी साधना के पोषण में अमृत का घूंट तो पिलाते ही थे,
भयाकुल होने पर अभय की छाँव भी देते थे।

पथिक,

जीवन के उपवन में एक माली मिल जाये तो
एक छोटा सा बीज भी वृक्ष बन जाता है।
बाल्य जीवन की छोटी-मोटी घटनाएँ
अभी भी मेरे स्मृति कोश में हैं
जो मेरे जीवन को निरन्तर परिष्कृत कर रही हैं।
एक बार मैं ज्वर से पीड़ित हो गया।
मुझे लगा कि कुछ भी खाया-पिया तो वमन हो जायेगा,
अतः जब पेय पदार्थ मुझे दिया गया तो
मैंने वमन हो जाने के डर से पीने से इन्कार कर दिया।
उस समय गुरुदेव एक वात्सल्यमयी माँ की तरह बोले-
"पी लो, मैं बैठा हूँ ना! कोई उल्टी नहीं होगी।"

उनके वात्सल्य के रसायन से मेरा ज्वर शांत हो गया।
आहार के समय कई बार गुरुदेव
अपने संविभाग का कुछ न कुछ हम लोगों को दे देते।
जब उनसे कहा जाता कि
आप तो ऐसे भी अल्प-आहार लेते हैं,
फिर उसमें से भी हमें बाँट कर क्यों कमी करते हैं?
विनोदपूर्वक गुरुदेव कहते-
"अरे भाई, मेरा नाम हस्ती है और
हाथी जब भी खाता है तो उछाल-उछाल कर खाता है।"
विनोद में भी मानो गुरुदेव कह रहे थे
"असंविभागी ण हु तस्स मुक्खो"
स्वधर्मियों में आहार आदि का संविभाग नहीं करने वाला
मोक्ष को प्राप्त नहीं होता।
एक दिन मैं सहज ही में गुरुदेव से पूछ बैठा-
"गुरुदेव, क्या मैं भी कभी प्रवचन करने
के योग्य बन सकूँगा?"
मेरी जिज्ञासा के साथ ही
मानो गुरुदेव मेरे प्रणेता बनकर
अपने हाथ से मेरे लिये प्रवचन लिखने लगे।
मुझे प्रवचन करने का अभ्यास कराया और
प्रोत्साहित करते हुए बोले-
"तुम बोलना, मैं हूँ ना!"
मैंने साहस कर प्रवचन किया।
प्रवचन कुशलता अर्जित करने के लिये
गुरुदेव मुझे कई दिनों तक अभ्यास कराते रहे।
यह गुरुदेव की प्रवचन प्रभावना थी तो
मेरे बोध का जागरण।

उनका ज्ञान धर्म-ग्रन्थों के पृष्ठ थे
जिन्हें सुनकर मेरी स्वाध्याय के प्रति प्रीति हो गई।
आज भी जब मेरे अपरिपक्व कंठ से
जिनवाणी का प्रवचन होता है तो
गुरुदेव की प्रेममयी मूर्ति के दर्शन होते रहते हैं।

पथिक,
श्रमणाचार की पालना में
गुरुदेव की भूमिका एक कुम्भकार की तरह होती थी,
जो घड़े को गढ़ने, उसे ऊपर से चोट देता है
पर भीतर से कोमल हाथों का सहारा देता है
ताकि घड़ा टूट न जाये।
आहार के समय मुनिजनों के लिये
मौन रखना आवश्यक है।
मैं नादान ठहरा।
एक दिन आहार करते हुए
बीच में बोल दिया और
बाल चपलता के साथ हंसी आ गई।
गुरुदेव बहुत नाराज हुए।
मुझे उनकी फटकार मिली।
यही फटकार मेरे भविष्य के लिये
एक नसीहत हो गई।

दिल्ली चातुर्मास के पहले गुरुदेव ने
मुझे अन्तगड़दशा सूत्र का वाचन करना सिखाया।
और जब हम संतों ने मांगलिक ले चातुर्मासार्थ प्रस्थान किया,
तब गुरुदेव विदा देने उपाश्रय के बाहर तक आए
प्रेम से सिर पर हाथ रखा और आशीर्वाद दिया।

वह वरदहस्त आज भी मेरा संबल है।
इतना अनुराग करते हुए भी वे पूर्णतः निस्पृही थे।
पद-प्रतिष्ठा एवं यशगान की कामना से विरक्त थे।
मैं एक दिन बड़ी लगन से
उनके जीवन के कुछ संस्मरणों का
संकलन कर रहा था।
दूर विराजित गुरुदेव ने मेरी तन्मयता देखकर
बड़े लाड़ से पूछा-
"बच्चू! इतनी लगन से क्या कर रहे हो?"
मैंने कहा-
"भगवन्! आपके जीवन के कुछ संस्मरणों का संकलन कर रहा हूँ।
गुरुदेव बोले-
"अरे, इतनी लगन से यदि आगम पढ़ेगा
तो सच कहता हूँ तू एक दिन पंडित बन जायेगा।"
गुरुदेव यश कामना को साधना में
बहुत बड़ा व्यवधान मानते थे।
फिर भी उन जैसे आत्मनिष्ठ साधक
जन-जन के हृदय में अपने आप ही प्रतिष्ठा पा जाते हैं।

पथिक,
छन्द के बन्धनों से जैसे काव्य बन्धा रहकर भी
हृदय की गहराई को अभिव्यक्ति दे देता है
वैसे ही गुरुदेव का अनुशासन मेरी उन्मुक्ति का
मंगल प्रसाद हो गया।
उन्होंने मेरी निर्बलता को,
मेरे दोषों को,
मेरी अभावग्रस्तता को
कभी प्रेम से, कभी करुणा से,
कभी तर्जना से, कभी उपालम्भ से
और कभी आवश्यक हुआ तो उदासीनता से दूर किया।

मैं प्रकट रूप में जब उनके पास नहीं होता
तब भी वे अपने संदेशों में
आगम सूत्रों के माध्यम से
मुझे जीवन निर्माण की भोलावण देते रहते थे।
जैसा निर्मल जीवन उन्होंने जिया,
वे चाहते थे कि
उनके अन्तेवासी भी वैसा ही जीवन जीयें।
उनकी हित शिक्षा
मेरे उत्कर्ष में रूपान्तरित हो गई।
उनका प्रयास था कि
मैं साधना मार्ग पर निर्विघ्न गतिमान रहूँ।
उनकी आत्मीयता से मेरी साधना सरस हो गई।
आज भी मुझे गुरुदेव की प्रत्यक्ष प्रतीति का
अनुभव हो रहा है,
आज भी उनकी हलचल मुझे सुनाई दे रही है,
आज भी मानो वे कह रहे हैं कि,
स्वयं की खोज में कहीं दुनियाँ में मत खो जाना।

मुनिवर,
वस्तुतः गुरुदेव अपने गुणों से ही
चारित्र निर्माण की शिक्षा देते थे,
अतः उनके सान्निध्य में रहने वाले को
किसी चारित्र ग्रन्थ को पढ़ने की
क्या आवश्यकता रह जाती है?
मैंने तो गुरुदेव को समझकर
एक सच्चे गुरु की व्याख्या समझ ली है।

पथिक,
उनके सान्निध्य में
हृदय शंकाओं से आवृत्त नहीं होता था,

क्योंकि वे शंकाओं का तत्काल समाधान दे देते।
हमें दोषों की ओर जाने से रोककर
हमारे चारित्र की रक्षा करते थे।
आज भी वे अपने दायित्व-बोध का निर्वहन करते हुए
मानो संदेश दे रहे हैं-

जब प्राप्त तुम्हें सब तत्त्व यहाँ
फिर जा सकता यह सत्त्व कहाँ
तुम स्वप्न सुधारस पान करो
उठके अमरत्व विधान करो।

हे गुरुदेव!
मेरे जीवन निर्माण में
तुम्हारी भूमिका बहुत गहरी और गम्भीर थी।
आज भी जब कभी मेरी कश्ती सैलाब में आ जाती है,
तुम मेरा हाथ थामे ख्वाब में आ जाते हो।
पर,
जितना तुमसे पाना चाहिए,
जितना तुमसे लेना चाहिए,
जितना तुमसे समझना चाहिए,
उतना न पा सके, न ले सके और न समझ सके।
जब तुम चले गये तो
लगा वो प्रकाश कहाँ
अन्तराभिमुख हुआ तो मन कहने लगा-

है अंधेरी रात पर, दीवा जलाना कब मना है।
वे गये तो सोचकर यह, लौटने वाले नहीं है।
खोज मन के मीत तू, लौ लगाना कब मना है।

(क्रमशः)

शोधालेख

जैन ब्रह्माण्ड और आधुनिक ब्रह्माण्ड की तुलनात्मक समीक्षा

डॉ. जीवराज जैन

ब्रह्माण्ड का वैज्ञानिक स्वरूप

(अ) ब्रह्माण्ड का गणित:-

- हमारा सूर्य अपने, ग्रह, उपग्रह, पुच्छल तारे सहित आकाश गंगा की एक भुजा में अवस्थित है।
- एक मंदाकिनी अर्थात् आकाशगंगा का औसत विस्तार 1 लाख प्रकाश वर्ष है।
- ब्रह्माण्ड में 100 अरब से ज्यादा मंदाकिनियाँ (आकाशगंगा) हैं। एक मंदाकिनी में औसतन 100 अरब तारे हैं। हर तारा सूर्य का रूप है। लेकिन ऊर्जा के अनुसार कुछ इससे बूढ़े हैं, तो कई इससे जवान या शैशव अवस्था में हैं।
- दो मंदाकिनियों की दूरी औसतन 2 करोड़ प्रकाश वर्ष हैं। यानी पास की दो मंदाकिनियों के बीच बहुत बड़ी खाली जगह रहती है।
- ब्रह्माण्ड के सुदूर छोर से प्रकाश को आने में 15-20 अरब वर्ष लगेंगे। कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति 15-20 अरब वर्ष पूर्व हुई थी।
- प्रकाश की गति 3 लाख कि.मी. प्रति सैकेण्ड है। यानी $3X10^5$ km/s

  (1 प्रकाश वर्ष = $9.40X10^{12}$ कि.मी. = 10,000 अरब कि.मी.)
- ऐसा माना जा रहा है कि ब्रह्माण्ड में समूचे द्रव्यमान का-

  (1) 25% कृष्ण पदार्थ (ज्यादातर श्याम विवर के रूप में)

  (2) 70% कृष्ण ऊर्जा (यह एक तरह का विकर्षण बल है, जो दिक् के प्रसरण के लिए जिम्मेदार है।)

  (3) 4% हाइड्रोजन और हीलियम का है।

(4) शेष 1% में, 0.5 % तारों से पूर्ति और 0.5% अन्य पदार्थ।

(आ) ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति : वैज्ञानिकों के मत:-

1. महाविस्फोट सिद्धान्त:-

पहले ब्रह्माण्ड का समस्त द्रव्य बहुत ही कम जगह में केन्द्रित था। वहाँ उसका घनत्व और तापमान अपरिमेय था। एक महाविस्फोट की स्थिति बनी। महाविस्फोट के तुरन्त बाद, ब्रह्माण्ड में विकिरण ऊर्जा थी और तापमान बहुत अधिक था। बाद में कुछ ठंडा होने पर इलेक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन जैसे मूलकणों की उत्पत्ति उस विकिरण ऊर्जा से हुई।

बाद में इसमें हाइड्रोजन और हीलियम जैसे हल्के तत्त्व बने। तारों में दूसरे तत्त्वों का निर्माण हुआ। तारों में ऊर्जा का स्रोत तो आण्विक नाभिकीय क्रियाएँ (nuclear reactions) ही हैं।

2. स्थिरावस्थावान विश्व:-

इसके अनुसार यद्यपि विश्व विस्तृत हो रहा है, फिर भी उसमें नई जड़ राशि उत्पन्न हो रही है। अतः विश्व में जड़ की घनता स्थिर रहती है। प्रो. नारलीकर के अनुसार ब्रह्माण्ड के लघुक्षेत्रों में सृजन प्रक्रिया चलती रहती है।

3. आइन्स्टीन का विश्व:-

यह विश्व बेलनाकार है। इसमें दिक् और काल की सततता के ताने बाने से गुजरता हुआ एक पिंड, इसमें उसी तरह झोल पैदा करता है, जैसे कि रबड़ की चादर पर रखी हुई लोहे की वजनी गेंद। यदि धन वक्रता वाला विश्व है, तो वह सान्त और बद्ध है। और यदि ऋण वक्रता वाला है तो वह अनन्त और खुला विश्व है। जैन दर्शन आकाश को अनन्त मानता हुआ भी, निवासित आकाश (लोकाकाश) को सांत मानता है। लोकाकाश की वक्रता धन और अलोकाकाश की ऋण वक्रता मान लेने पर, जैन दर्शन का विश्व सिद्धान्त पुष्ट हो जाता है। (म.मु. पृ0 287)

विश्व 'सान्त है या अनन्त', इस प्रश्न को सुलझाने के लिए वैज्ञानिक 'आकाश की वक्रता' की कल्पना करते हैं। जैन दर्शन इसका समाधान-

(1) ऋण-धन ईथर और

(2) आकाश के विभागीकरण के निरूपण से करते हैं। (म. मुनि)

4. हालांकि अधिकतर वैज्ञानिक विस्तारवान विश्व को मान्यता देते हैं, लेकिन फिर भी यह असंदिग्ध सिद्धांत नहीं है।

जैन दर्शन के अनुसार 'लोकाकाश' का विस्तार नहीं होता है। आकाशीय पिंडों की गति के कारण आपसी दूरियाँ बदलती रहती हैं। यह स्वतः संचालित कम्पनशील विश्व, चक्रीय विश्व के अनुरूप चल रहा है। काल प्रवाह के साथ-साथ निर्माण और ध्वंस की क्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं।

5. चन्द्रशेखर लिमिट/सीमा:-

यदि किसी तारे का द्रव्यमान, सूर्य के द्रव्यमान से 1.44 गुणे से अधिक है, तो वह तारा श्वेत-वामन नहीं बनेगा। इस द्रव्यमान को चन्द्रशेखर सीमा कहते हैं। वस्तुतः तारे संतुलित रहते हैं, अर्थात् गुरुत्वाकर्षण का दबाव, आंतरिक दबाव को संतुलित रखता है। यह आंतरिक दबाव तारे के गर्भ (भीतर) में हो रहे आंतरिक आण्विक प्रक्रियाओं के द्वारा उत्सर्जित विकिरण के कारण पैदा होता है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जब आण्विक भट्टी क्षीण होने लगती है, तो आंतरिक दबाव भी कम होने लगता है। एक स्थिति के बाद यह आंतरिक विकिरण बल, गुरुत्वाकर्षण के दबाव को संतुलित रखने में असमर्थ हो जायेगा। उस परिस्थिति में, गुरुत्वाकर्षण का बल तारे के द्रव्य को निचोड़ना शुरु करेगा। इससे तारा सिकुड़ना शुरु करेगा। इस प्रक्रिया से तारों की 3 अंतिम अवस्थाएँ पैदा हो सकती हैं- 1. श्वेत वामन, 2. न्यूट्रोन तारा, 3. कृष्ण विवर। यदि तारे का भार चन्द्रशेखर सीमा से 1.44 गुणा से ज्यादा है, तो गुरुत्वाकर्षण का दबाव, आंतरिक विकिरण के बहिर्गामी दबाव से ज्यादा रहेगा। तारा सिकुडने की प्रणाली में आकर, आखिर में न्यूट्रोन स्टार में परिवर्तित हो जायेगा।

यदि तारे का द्रव्यमान चन्द्रशेखर सीमा 1.44 गुणा से कई गुणा ज्यादा हो तो वह तारा आखिर में एक कृष्ण विवर (Black hole) बन जायेगा।

(इ) ब्रह्माण्ड का घनत्व:-

दिक् में संकेन्द्रित पदार्थ बहुत विरलता में मौजूद है। ब्रह्माण्ड में पदार्थ के घनत्व

(Ω) के हिसाब से ब्रह्माण्ड की समतलता या उसके स्वरूप का निर्धारण होता है। घनत्व का एक मान 'क्रांतिक' (Ω_c) माना गया है। घनत्व के मान के अनुसार दिक् के 3 भिन्न-भिन्न रूप हो सकते हैं। यदि घनत्व क्रांतिक से ज्यादा है- ब्रह्माण्ड का विस्तार रुकेगा और वह सिकुड़ने लगेगा। फिर पुनः वह उसी तरह के लगभग शून्य परिमाण के बिन्दु में समाहित हो जायेगा। (यानी घनत्व बढ़ता है, तो बढ़ता ही जायेगा) ऐसे ब्रह्माण्ड में एक त्रिभुज के कोणों का योग 180^0 से अधिक होगा तथा उसकी वक्रता 'धनात्मक' कहलाती है।

ऐसा दिक् एक गोल की तरह बंद होगा। अर्थात् मानो कि दिक् स्वयं ही पलटकर, लौटकर वापस जुड़कर अपने आप को बंद कर लेता है। ऐसे दिक् को 'संवृत' या 'अंडाकार' (eliptical) आकाश कहते हैं। ऐसा दिक् अनन्त तो नहीं होगा, किन्तु अपरिबद्ध (unbounded) या परिसीमित होगा। त्रिआयामी गोले की तरह।

■ घनत्व Ω के मान पर दिक् की समतलता या उसका रूप निर्भर करता है। यह घनत्व निर्धारित करता है कि दिक् समतल है या वक्र है। किसी गोले की तरह परिसीमित है या समतल की तरह खुला है।

■ यदि ब्रह्माण्ड का घनत्व Ω_c से कम है, तो ब्रह्माण्ड फैलता ही जायेगा, और लगभग शून्य में परिणत हो जायेगा। ऐसे ब्रह्माण्ड में एक त्रिभुज के कोणों का योग 180^0 से कम होगा। उसकी वक्रता ऋणात्मक कहलायेगी। ऐसा दिक् अनन्त होगा। ऐसे दिक् को खुला या विवृत दिक् या अति परवलय दिक् कहते हैं।

■ अभी के ब्रह्माण्ड का घनत्व क्रांतिक के लगभग बराबर है। अतः दिक् लगभग समतल माना जा रहा है।

(ई) विज्ञान की मान्यता में सौर-मण्डल:-

1. पृथ्वी:-

यह सौर-परिवार का एक ग्रह माना गया है, जो अपनी धुरी पर भी घूमती है। यह नारंगी की तरह गोल पिंड है।

(1) इसके ऊपर की पपड़ी या भूपटल कुछ सौ किलोमीटर मोटा माना गया

है। इसमें खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। (चित्र-1)

(2) उसके नीचे ठोस और सख्त चट्टानों का ऊपरी कवच है, जो 1000 कि.मी. मोटा है। इसके भीतर के पदार्थों का तापक्रम 1600°C तक हो सकता है। जहाँ लोहा भी पिघला हुआ रहता है।

(3) इस कवच के आगे, 1900 कि.मी. मोटाई का भीतरी गर्म कवच है। इसमें पाये जाने वाले पदार्थ बहुत अधिक दबाव व तापक्रम पर होने के कारण, लई के रूप में हो सकते हैं। (कीचड़ की तरह अर्धठोस)। इनका तापक्रम 2000-2500°C तक होगा।

(4) उसके 2100 कि.मी. नीचे तक एक मोटा बाहरी गुदा है, जो पिघले हुए पदार्थों से बना है। इसका तापक्रम 5000°C तक हो सकता है। कई पदार्थों का दबाव व तापक्रम तो, उसके क्रांतिक बिन्दु तक पहुँच जाता है।

(5) उसके नीचे केन्द्र में करीब 2740 कि.मी. व्यास का, घनी ठोस चट्टानों का एक क्षेत्र है। यह अत्यधिक दबाव का क्षेत्र है।

2. सूर्यः-

इस विशाल आकाशीय पिंड पर आण्विक क्रियाओं द्वारा सतत ऊर्जा पैदा होती रहती है। इसके परिवार में कई ग्रह और उपग्रह हैं, जो इसका चक्कर

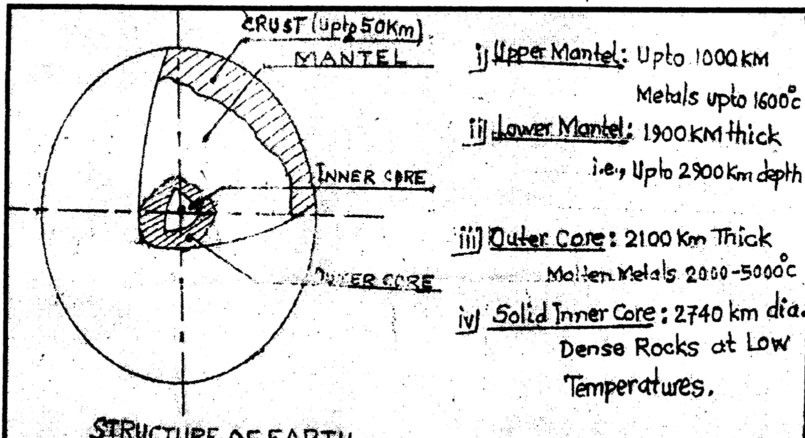

STRUCTURE OF EARTH

चित्रः 1 पृथ्वी की आंतरिक संरचना

लगाते हैं। इसके धरातल पर पदार्थ अपनी चौथी अवस्था, 'प्लाज्मा' रूप में पाया जाता है। यहाँ हाइड्रोजन गैस निरन्तर हीलियम गैस में परिवर्तित होती रहती है। विकिरण द्वारा यह ऊर्जा, ब्रह्माण्ड में विसर्जित होती रहती है। इसकी भट्टी में नीचे गहराई से ईंधन के रूप में, नये पदार्थों की आपूर्ति होती रहती है। फिर उसके नीचे, पदार्थ अपनी अन्य अवस्थाओं में, यथा ठोस, तरल आदि में उपलब्ध होता है। यहाँ तक कि उसका केन्द्र या मूल तो अत्यधिक दबाव के चलते, ठोस, जमी हुई घनीभूत चट्टानों से बना हो सकता है।

3. अंतरिक्ष में दूरियाँ:-

ब्रह्माण्ड में कई निहारिकाएँ, जो एक दूसरे से लाखों प्रकाश-वर्ष दूर हैं, गमन कर रही हैं। एक-एक निहारिका में अरबों तारे हैं, जिनके अपने-अपने सौर-मंडल या परिवार हैं। परिवार के सदस्यों का, साधारणतया अपना ऊर्जा स्रोत नहीं होता है। इन तारों व ग्रहों की रचना अधिकतर अपने सूर्य-परिवार की तरह ही है।

लेकिन इस ब्रह्माण्ड में ऐसे भी असंख्य तारे हैं, जिन पर पदार्थ अपनी उच्च अवस्था में, यानी आइंस्टीन-बोस संघनित, फरमियोन-डेरेक संघनित और पारदर्शी-स्फटिक अवस्था में पाया जाता है। ये अवस्थाएँ पृथ्वी पर केवल प्रयोगशालाओं में पैदा की जा सकती हैं।

अभी भी ब्रह्माण्ड में ऐसे अनेक तारा-पुंज हैं, जो सबसे शक्तिशाली, हब्बल जैसी दूरबीनों से भी नहीं देखे जा सकते हैं। फिर ग्रहों का तो कहना ही क्या? असंख्य सूर्य और ग्रह यहाँ से इतने दूर हैं कि उनका असली अवस्थान निर्धारित करना, आज के वैज्ञानिक के लिए भी दुष्कर है।

4. बिना दूरबीन का ब्रह्माण्ड (आज से 500 वर्ष पहले तक):-

रात्रि में असंख्य चमकते हुए तारे दिखाई देते थे, जिनमें या तो-

(1) स्वयं में ऊर्जा पैदा होती थी (आण्विक भट्टी) या

(2) ये चमकते तारे/ग्रह, दूसरे सितारों से आये प्रकाश और ताप को सोखते या परावर्तित करते हैं।

(3) इनमें बहुत सी ऐसी पृथ्वियाँ हो सकती हैं, जहाँ हमारी जैसी सभ्यताएँ होंगी

या कोई अन्य प्रकार के तिर्यंच होंगे।

फिर भी असंख्य तारे मानव दृष्टि के बाहर ओझल रहते थे। इस परिप्रेक्ष्य में यदि कोई साधारण आदमी, किसी सर्वज्ञ से पूछता कि इस विशाल ब्रह्माण्ड में कहाँ-कहाँ, किन-किन पृथ्वियों या तारों पर प्राणी उपलब्ध हैं, तो एक अनगिनत पृथ्वियों और तारों की भीड़ में, जिनमें से कई दृष्टिगम्य भी नहीं थे, वे सर्वज्ञ सभी कुछ देखते/ जानते हुए भी, उस साधारण बुद्धि वाले मानव को कैसे, एक बोधगम्य भाषा में, समझायें कि अमुक जगह पर जीव विचरण कर रहे हैं। ऐसा निर्धारित अवस्थान दिखाना दुर्गम्य ही लगता है।

ऐसी समस्या आज के वैज्ञानिकों के सामने भी आने वाली है। हालांकि उन्होंने कई आधुनिक मानक तैयार किये हैं, नामकरण के लिए कि एक वैज्ञानिक, दूसरे को गम्य भाषा में जानकारी दे सके।

फिर भी जैसे-जैसे असंख्यात या अनन्त संख्या की ओर बढ़ेंगे, तो आज के वैज्ञानिक उपकरण और प्रणालियाँ भी छोटी पड़ सकती हैं। (क्रमशः)

-कमानी सेण्टर, दुसरा माला, बिस्तापुर, जमशेदपुर-831001

अभिमत

डॉ. जवाहर लाल नाहटा

जिनवाणी के दो-तीन अंक पढ़े। इसमें प्रकाशित लेख एवं सामग्री बहुत रोचक, ज्ञानवर्द्धक एवं सूचनाप्रद लगी। घर बैठे ही चारित्र आत्माओं के प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रायः देखा जाता है कि अधिकतर धार्मिक पत्रिकाएँ अपने गुरु, संघ, सम्प्रदाय की प्रशंसा एवं प्रचार हेतु प्रकाशित की जाती हैं। जिनवाणी इस प्रकार की क्षुद्र साम्प्रदायिक मानसिकता से मुक्त परिपक्व पत्रिका है।

पिछले 67 वर्षों से अनवरत प्रकाशित होने वाली यह प्रतिष्ठित पत्रिका चिरकाल तक प्रकाशित होकर जिन-धर्म तथा जिन-संस्कृति की सेवा करती रहे। यह मंगल कामना है।

-सेवानिवृत्त प्राध्यापक,

बरपेटा रोड़, वार्ड नं. 7, बरपेटा रोड़, असम-781315

कविता

बन्ध कर्मों के तप से हटाते चलो

तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा.

(तर्ज : सिद्ध अरिहंत में मन रमाते चलो.....)

मुक्ति पथ में सदा, पग बढ़ाते चलो,
बन्ध कर्मों के तप से हटाते चलो।। टेर।।

वीर प्रभु ने हमें ज्ञान सच्चा दिया,
ममता सक्ति व इच्छा ने कच्चा किया,
तन की ममता को दूर भगाते चलो।।1।।

आस्था विश्वास और श्रद्धा पूरी करे,
झूठी शान जो तन की, वो चूरी करे,
तप की अग्नि में मल को जलाते चलो।।2।।

आंधी तूफान धूल उड़ाती यदा,
खिड़की बन्द जो होवे वो घर की तदा,
कर्म धूलि को हरदम रुकाते चलो।।3।।

योग दुष्ट को तज के संयम वरो,
दीक्षा लेके सदा श्रेणी गुण की चढ़ो,
तेला, चोला, अठाई बढ़ाते चलो।।4।।

कष्ट सहना तितिक्षा का धर्म कहा,
दूषण तजना तपस्या का मर्म रहा,
सिद्ध गुण भी इकतीस उनको वरो।। 5।।

हस्ती जन्मशती महिमा हीरा बढ़ी,
इन्दु की बाला तप के शिखर पे चढ़ी,
मुदिता भवोदधि पार करो।।6।।

(श्रद्धेय प्रमोदमुनि जी म.सा. द्वारा रचित तथा तप अनुमोदनार्थ महासती सिन्धु जी व वर्षा जी म.सा. द्वारा प्रवचन सभा में उच्चरित एवं नरेश सुराणा-नागौर द्वारा संकलित।)

तत्त्वज्ञान प्रश्नोत्तरी (क्रमशः 62)

आओ मिलकर ज्ञान बढ़ाएँ

(पुलाक-निर्ग्रन्थ)

श्री धर्मचन्द जैन

जिज्ञासा- पुलाक लब्धि कितने भवों में प्राप्त हो सकती है?

समाधान- पुलाक लब्धि यदि किसी साधु को प्राप्त हो तो कम से कम एक भव में तथा अधिक से अधिक तीन भवों में प्राप्त हो सकती है। चाहे लगातार हो चाहे अन्तर से हो, किन्तु तीन भवों से अधिक में प्राप्त नहीं होती है।

जिज्ञासा- पुलाक लब्धि का प्रयोग कितनी बार किया जा सकता है?

समाधान- पुलाक लब्धि का प्रयोग यदि कोई साधु करे तो एक भव में कम से कम एक बार, अधिक से अधिक तीन बार किया जा सकता है। दूसरे भव में अधिकतम दो बार, तीसरे भव में दो बार इस प्रकार तीन भवों में मिलाकर अधिकतम सात बार पुलाक लब्धि का प्रयोग किया जाता है। सात बार की संख्या तीन भवों में दो तीन, दो अथवा दो, दो, तीन, अथवा तीन,तीन एक अथवा एक, तीन, तीन, इस प्रकार अनेक विकल्पों से हो सकती है।

जिज्ञासा- क्या जन्म से नपुंसक साधु पुलाक लब्धि वाले हो सकते हैं?

समाधान- जन्म से नपुंसक साधु बन सकता है तथा दस पूर्वों का ज्ञान करके पुलाक लब्धि भी प्राप्त कर सकता है। यहाँ तक कि जन्म से नपुंसक मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

भगवती सूत्र शतक 26 से 30 तक में बन्धी शतक व समवशरण के वर्णन से स्पष्ट होता है कि अनन्तर उपपन्नक अर्थात् उत्पत्ति के प्रथम समय वाले नपुंसक वेदी मनुष्य में भी आयुकर्म की अपेक्षा चौथा भंग(आयुकर्म बांधा था, वर्तमान में नहीं बांधता है तथा भविष्य में भी नहीं बान्धेगा) मिलता है। चतुर्थ भंग वाला उसी भव में अथवा अगले भव में मोक्षगामी होता है।

जिज्ञासा- स्थानांग सूत्र के तीसरे ठाणे में तथा बृहत्कल्प सूत्र के चतुर्थ उद्देशक में नपुंसक को दीक्षा देने का निषेध है, तो फिर जन्म नपुंसक साधु बने बिना पुलाक लब्धि कैसे प्राप्त कर सकता है?

समाधान- स्थानांग सूत्र के तीसरे ठाणे में एवं बृहत्कल्प सूत्र के चतुर्थ उद्देशक में नपुंसक को दीक्षा देने का जो निषेध किया है वह छद्मस्थ, अपूर्वधर आदि श्रुतव्यवहारी के लिये है।

विशिष्ट ज्ञानी, आगम व्यवहारी जन्म से पुरुष-नपुंसक वेदी को दीक्षा प्रदान कर सकते हैं तथा वह नपुंसक वेदी साधु पुलाक लब्धि वाला भी हो सकता है।

जिज्ञासा- पुलाक लब्धि वाला साधु काल करके किस गति में जाता है?

समाधान- पुलाक लब्धि वाला साधु यद्यपि पुलाकपने में न तो आयुष्य का बन्ध करता है और न ही मरण को प्राप्त होता है, किन्तु भूतकालीन पर्याय की अपेक्षा से पुलाक लब्धि वाले साधु का मरण कहा जाता है। पुलाक लब्धि वाला साधु आलोचना करके शुद्ध हुआ, कषाय कुशील बना, वहाँ कषाय कुशीलपने में अन्तर्मुहूर्त में काल कर जाये तो वह पूर्व पर्याय पुलाक निर्ग्रन्थ की होने से पुलाकपने का आराधक कहलाता है। ऐसा पुलाक काल करके देव गति में जाता है।

जिज्ञासा- पुलाक निर्ग्रन्थ देव गति में कौनसे देवलोकों में जाकर उत्पन्न होता है?

समाधान- आराधक बना हुआ पुलाक निर्ग्रन्थ देवलोकों में जघन्य पहले वैमानिक देवलोक में तथा उत्कृष्ट आठवें सहस्रार देवलोक में जाकर उत्पन्न होता है तथा कम से कम पृथक्त्व पल्योपम (2 पल्योपम) तथा अधिक से अधिक 18 सागरोपम की स्थिति प्राप्त करता है।

जिज्ञासा- पुलाक क्या वैमानिक देवलोकों में ही जाता है, अन्य स्थानों में नहीं?

समाधान- पुलाक लब्धि का प्रयोग किया हुआ साधु यदि पुलाक लब्धिगत दोषों की आलोचना कर शुद्धिकरण नहीं करे तो वह विराधक बन जाता है। विराधक बन जाने पर वह भवनपति, वाणव्यन्तर,

ज्योतिषी देवलोकों में भी जा सकता है, यहाँ तक कि नरक, तिर्यञ्च आदि गतियों में भी जा सकता है।

जिज्ञासा– 'पुलाक', पुलाक पने को छोड़कर उसी भव में सीधे किन-किन अवस्थाओं को प्राप्त करता है?

समाधान– 'पुलाक' पुलाकपने को छोड़कर अन्तर्मुहूर्त के बाद या तो कषायकुशील निर्ग्रन्थ बन जाता है अथवा फिर असंयम में चला जाता है। किन्तु संयमासंयम, बकुश, प्रतिसेवना, कुशील, निर्ग्रन्थ स्नातक इन अवस्थाओं को सीधा प्राप्त नहीं कर पाता है। पुलाकपने में रहा साधु आराधक अवस्था में कषाय कुशील में अन्तर्मुहूर्त रहने के पश्चात् निर्ग्रन्थ और स्नातक भी बन सकता है तथा उसी भव में मोक्ष को भी प्राप्त कर सकता है।

जिज्ञासा– पुलाक निर्ग्रन्थ वैमानिक देवलोकों में जाकर उत्पन्न होता है तो वह कितनी पदवी प्राप्त कर सकता है?

समाधान– इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंशक, लोकपाल तथा अहमिन्द्र ये पाँच पदवियाँ देवलोकों में होती हैं। आराधक पुलाक वैमानिक देवलोकों में इन्द्र, सामानिक, त्रायस्त्रिंशक व लोकपाल इन चार पदवियों को प्राप्त कर सकता है, किन्तु अहमिन्द्र की पदवी प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि अहमिन्द्र पदवीं नव ग्रैवेयक और पाँच अनुत्तर विमान के देवों में ही होती है, जबकि अविराधक पुलाक आठवें देवलोक तक ही जा सकता है, उससे ऊपर नहीं।

जिज्ञासा– पुलाक निर्ग्रन्थ को कब तक पुलाक कहना चाहिए?

समाधान– पुलाक लब्धि का प्रयोग कर चुकने के अन्तर्मुहूर्त बाद तक वह पुलाक निर्ग्रन्थ कहलाता है। अन्तर्मुहूर्त बाद आराधक हो जाने पर वह कषाय कुशील कहलाता है। यदि कषाय कुशील बनने के बाद अन्तर्मुहूर्त में काल नहीं करे, अन्तर्मुहूर्त व्यतीत हो जाने के बाद काल करे तो वह कषायकुशील निर्ग्रन्थ का मरण माना जायेगा, न कि पुलाक निर्ग्रन्थ का।

जिज्ञासा– क्या वर्तमान में पुलाकपना प्राप्त हो सकता है?

समाधान– भरत-ऐरवत क्षेत्र में वर्तमान में पुलाकपना (पुलाकलब्धि) संभव नहीं है। क्योंकि स्थानांगसूत्र, इतिहास, पट्टावली आदि में

उल्लेख है कि जम्बू स्वामी के मोक्ष गमन के साथ 10 बोलों का विच्छेद हो गया है। दस बोलों में पुलाक लब्धि भी शामिल है। महाविदेह क्षेत्र में पुलाकपना वर्तमान में भी मिल सकता है।

-रजिस्ट्रार- अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर(राज.)

हर लो, मेरी भव-भ्रांति प्रभो!

श्री देवेन्द्रनाथ मोदी

आचार्यप्रवर श्री हस्ती के सद्बोध से
वीतराग की खोज में
जब इक कदम आगे बढ़ाया
मान, ईर्ष्या, द्वेष सारा
न जाने कब कहाँ खो गया।
विनम्रता आंगन बुहारे
सरलता अल्पना सजाए
करुण सजल नयनों से
मन की सूखी क्यारियों को सींच जाए।
क्षमा पथ के कंकरों को,
एक-एक कर बीन दे
सत्य घी के दीपकों से
दृष्टि उज्ज्वल आँज जाए।
ज्ञान का सूरज अब आँगन में है उगता
दर्शन का चाँद अब आँगन में है हँसता
चारित्र के तारे अब घुटनों चलते
और चाँदनी धुंध हटाकर
अज्ञान तम भगाती।
सारा विश्व महावीरमय हो गया
सारा जगत वीतरागमय हो गया
आचार्यप्रवर श्री हस्ती कृपा से
रत्नसंघ हीरा-मान मय हो गया।
इस आकुल अंतर को कर दो शीतल शांत प्रभो!
अपनी पावन अनुकम्पा से
हर लो, मेरी भव-भ्रांति प्रभो!

-'हुकुम', 5 ए/1, सुभाषनगर, पालरोड़, जोधपुर-342008(राज.)

Tattva bodha

OSWAL JAIN STATESMEN IN PRINCELY STATE OF RAJASTHAN (2)

Dr. A.L. Gandhi (M.A.,LLB, Ph.D)*

BIKANER

In Bikaner State too, there have been a few Oswal statesmen who not only controlled the civil affairs of the state with great skill but took even in Military affairs. Among them, the name of NAGRAJ is well known, He was a faithful servant of his master JAITRA SINGH. When Maldeve, the Ruler of Jodhpur wanted to conquer Bikaner, Jaitra singh sent Nagraj to the count of Shershah for help. Jaitra Singh lost his life fighting against. Maldeva who took possession of Bikaner. At this stage, Nagraj successfully pursued Shershah for the invasion of Marwar in which Maldeva was badly defeated and it enabled Kalyan Singh, the son of Jaitra Singh to restore his hereditary Kingdom of Bikaner. Nag Raj was a great man in all respects. He was a most God fearing person whose every act was inspired by lofty ideals. He gave charities and respected saints of all sects and religions.

Karamchand

He was another Oswal in Bikaner who was Chief Minister of Ray Singh. He was an able Administrator, a great general and a pious religious person. When Abhay Singh, the ruler of Jaipur invaded Bikaner, Karamchand advised his master to make peace because the state was not prepared for the disastrous war. But when Mirza Ibrahim of Nagaur attacked Bikaner, Karmchand repulsed him. Later on, he fought against Gujarat and also extended the borders of Bikaner State by Occupying Sojat, Jalore and some portions of Sindh.

*Dr. Amrit Lal Gandhi sent this article before his demise.

Karamchand rendered valuable services to Oswal Community and Jain religion. He led many Sangh to holy places of Palitana and Girnar (Junagadh) in Gujarat. In 1555 A.D. he celebrated the official entry of Jinchand Suriji at Bikaner with rejoicings. During the famine of 1578 A.D., he made every endeavor to relieve the starving population by setting up depots for free distribution of grains and grass. He recovered a large number of Jain idols from Mohamedans in whose hands they had fallen and deposited them in Chintamani Parshvanath Jain Tample of Bikaner, It was through his efforts that Jainism secured a respectful place in the hearts of Akbar. In 1592 A.D. on his suggestion, Akbar invited Jain Acharya Jinchandra Suriji from Cambay in Gujarat and received the holy Dada guru at Lahore with high honours.

Karamchand was a far sighted Statesman. When Ray Singh, the Ruler of Bikaner was becoming more and more extravagent, he made the last and determined effort to bring the king to senses at the cost of his personal loss. The treasury became empty and the future of the state appeared gloomy. But Karamchand's enemies poisoned the ears of the Raja against him and Ray Singh planned to arrest him. But at this stage, he fled from Bikaner and sought the protection of Akbar who treated him with respect and assigned him a honourable place in his Court.

Surana Amarchand

He was another important OSWAL in the state of Bikaner during the reign of Maharaja Surat Singh, In the beginning, he was General in the army and when he successfully made to surrender Jabtakhan, the chief of the Bhatis, he was oppointed Diwan of Bikaner State.

In 1808 A.D. Surat Singh despatched a large force under the command of Amarchand to check the march of advancing army under Inderraj Singhvi sent by Maharaja Man Singh of Jodhpur. However no major incident took

place and it was with his good offices that the reconcillation between the two states was brought about.

Surana Amarchand was later on appointed to suppress the rebellious nobles of Bikaner and he carried out his task most successfully with iron hand.

Maharaja Surat Singh appreciated his services and conferred on him special honours, But this could not be borne by his enemies who formed a conspiracy to bring down his downfall. In 1857 A.D. he was falsely accussed of intriguing with Amir Khan, the leader of Pindaries and was executed in a most brutal manner by the same Maharaja Surat Singh.

JAIPUR

In the history of Jaipur State too, some of the OSWAL statesmen have occupied high and prominent places as Diwan and Ministers. Notable among was VIMAL DAS who was Diwan of both Maharaja Ram Singh First (1668-1690 A.D.) and Vishan Singh. He was a great warrior who lost his life in the battle of lalsot where a Chhatri was built in his memory.

After Vimaldas, his son RAMCHANDRA became the Chief minister and served both Vishan Singh and his successor SAWAI JAISINGH. He restored the kingdom of Amber to Sawai Jai Singh, Ram Chandra was famous as a man of Justice. Hence when there was a possibility of conflict between the chiefs of Jodhpur and Jaipur over the Sambher lake, he was appointed as an intermediary from both sides. He divided Sambher lake equally between the two and his decision was accepted. In return for his services, he was given about 5000 Mounds of salt yearly as Gift.

RAYCHAND was another OSWAL Diplomat who settled the much disputed marriage question of Krishna Kumari between the Rulers of Jaipur and Jodhpur, Krishna Kumari, the daughter of Maharana Bhim Singh of Udaipur was first settled to be married to Ruler of Jodhpur. But

because the Ruler of Jodhpur died before the marriage, it was decided to marry her to Jagat Singh, the Chief of Jaipur. This was considered to be an insult of Jodhpur house by Maharaja Man Singh. In about 1850 A.D. the preparations for the struggle started on both sides. Anyhow Raychandra settled the question peacefully between the two parties. Both Jaipur and Jodhpur Chiefs promised not to marry Krishna Kumari for the sake of good relationship between them. In stead, the sister of Sawai Jagat Singh of Jaipur was married to Maharaja Man Singh of Jodhpur and the daughter of Man Singh of Jodhpur was married to Sawai Jagat Singh of Jaipur.

But the peace thus established did not last long. Again there started a struggle on the question of Dhokal Singh of Jodhpur. Hearing the news of invasion of Jaipur by the Jodhpur forces with the help of Pindari Amir Khan, Jagat Singh had to raise the siege of Jodhpur Fort and march towards Jaipur. At this critical time Raychandra made Amir Khan to his side and saved both the town and life of his master.

It is also an admitted fact that one of the main factor for Jainism to flourish in Rajasthan is the influence of leading Jain Houses. Their influence was helpful indirectly for the spread of Jainism in Rajasthan and welfare of their community fellows.

SIROHI

The above is the enumeration of the heroic deeds of some of the important OSWAL statesmen, Soldiers and administrators in the Chief Princely states of Rajasthan. They have also played similar role in smaller states particularly in Sirohi, Jaisalmer and Shahpura. In the small princely state of sirohi, Singhi Jawerchand was appointed Diwan by Maharao Kesari Singh in 1892 A.D. who continued in the post for petty long years but with breaks. He was honoured with the title of 'Rai Bahadur' by British Government in 1900 A.D. for very well managing Famine activites in the state.

Besides, there was large number of Oswal Businessmen and a few of them were even Multi-milionaires. Some were mighty Bankers and the Rulers and Jagirdars who suffered from Chronic want of necessary funds for maintaining the armies and running the administration depended mostly on loans from these rich magnates. Thus the Mercantile Oswal Community also wielded a great influence in the Princely States of Rajasthan.

- 738, Nehru Park Road, Jodhpur

क्षमायाचना

छद्मस्थता में त्रुटि स्वाभाविक है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए हमने भाद्रपद शुक्ला 5, रविवार, 12.09.2010 को सांवत्सरिक प्रतिक्रमण कर सर्व जीवयोनि से विशुद्ध हृदय से क्षमायाचना की है। हम पूज्य आचार्यप्रवर-उपाध्यायप्रवर प्रभृति संत-सतीवृन्द से अविनय-आशातना के लिए करबद्ध क्षमाप्रार्थी हैं, वहीं संघ-समाज के सभी भाई-बहनों से हार्दिक क्षमायाचना करते हैं।

क्षमाप्रार्थी

सुमेरसिंह बोथरा, अध्यक्ष — गौतमचन्द हुण्डीवाल, कार्याध्यक्ष — पूरणराज अबानी, महामंत्री

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

पी.एस. सुराणा, अध्यक्ष — सम्पतराज चौधरी, कार्याध्यक्ष — विरदराज सुराना, मंत्री

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

मधु सुराणा, अध्यक्ष — मंजू भण्डारी, पूर्णिमा लोढ़ा, कार्याध्यक्ष — शशि टाटिया, महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर

बुधमल बोहरा, अध्यक्ष — राजकुमार गोलेच्छा, कार्याध्यक्ष — मनोज कांकरिया, महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर

सुशीला बोहरा, संयोजक — गौतमचन्द कवाड़, सह संयोजक — राजेश कर्णावट, सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

नवरतन डागा, संयोजक — राजेश भण्डारी, सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर

विमला मेहता, संयोजक — धर्मेश चौपड़ा, सह संयोजक — सुभाष हुण्डीवाल, सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर

चिन्तन

अणुव्रतों का आर्थिक एवं सामाजिक महत्त्व

डॉ. दिलीप धींग

भगवान महावीर ने गृहस्थाचार के रूप में श्रावक के लिए बारह व्रतों की व्यवस्था की है। इनमें पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षा-व्रत हैं। इन व्रतों के आचरण से जीवन सुखी, शान्त, निर्भय, तनावरहित एवं संयमी बनता है। यही नहीं इन व्रतों के आचरण से समाज एवं देश के लिए योग्य नागरिकों का निर्माण भी होता है। अर्थशास्त्रीय दृष्टि से चिन्तन करें तो ऐसा नागरिक सीमित संसाधनों का उपयोग करने वाला होता है। संक्षेप में इस दृष्टि से यहाँ विचार प्रस्तुत हैं-

पांच अणुव्रतः-

1. अहिंसाः- इस अणुव्रत के पाँच अतिचारों के अध्ययन से सिद्ध होता है कि आगम युग में कृषि एवं पशुपालन एक मुख्य व्यवसाय था तथा मवेशियों व पशु-पक्षियों के प्रति दयाभाव और कर्मचारियों के प्रति मानवीय दृष्टिकोण अपनाने पर जोर दिया जाता था। वर्तमान के श्रम व सुरक्षा कानून तथा पशु-पक्षी क्रूरता-निवारण अधिनियम के प्रावधानों को इन अतिचारों के सम्बन्ध में देखा जा सकता है। श्रमिकों के शोषण के विरुद्ध जो आवाज उठाई जाती है, श्रावकाचार में उसका प्रावधान ढाई हजार वर्ष पूर्व हो गया था।

2. सत्यः- इस व्रत में आर्थिक, परम्परागत, बैंकिंग, न्याय प्रणाली व वित्तीय गतिविधियों तथा चल व अचल सम्पत्तियों के क्रय-विक्रय के संबंध में पारदर्शिता का सन्देश दिया गया है। व्यवसाय में विश्वास की परम्परा को स्थापित करने के लिए मृषावाद विरमण व्रत एक 'व्यवसाय-मन्त्र' की तरह है। इसमें पारस्परिक सम्बन्ध और सामाजिक जीवन में भी सच्चाई पर बल दिया गया है।

3. अस्तेयः- यह व्रत वाणिज्य जगत में राज्य के नियमों के परिपालन पर जोर

(मद्रास विश्वविद्यालय के जैनविद्या विभाग और इंटरनेशनल स्कूल ऑफ जैन स्टडीज, नई दिल्ली द्वारा चेन्नई में 26 फरवरी 2010 को आयोजित 'सामाजिक चेतना और जैन दर्शन" विषयक संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र का सारांश)

देता है। यह तस्करी, चोरी, मिलावट आदि पर नैतिक अंकुश लगाता है। किसी की चीज हड़पना, वेतन, किराया, ब्याज, पारिश्रमिक आदि नियमों से परे जाकर दुर्भावना से फेरबदल करने का निषेध इस व्रत में किया गया है। दूसरे और तीसरे व्रत के अतिचारों के निषेध को 'व्यवसाय के आदर्श नीति-नियम' निरूपित किया जा सकता है।

4. **ब्रह्मचर्यः-** यह व्रत सदाचार और सामाजिकता की नींव है। जिस समाज और राष्ट्र का चरित्र उज्ज्वल होता है, वह यशस्वी, अजेय और सम्पन्न होता है। बलवान, समर्थ और सम्पन्न नागरिकों का वहाँ अधिवास होता है। यह व्रत मूल्यात्मक अर्थव्यवस्था के समर्थक अर्थशास्त्रियों की इस बात का समर्थन करता है कि आर्थिक क्रियाएँ सदाचारिक होनी चाहिये। इस व्रत के अन्तर्गत सुन्दर समाज व्यवस्था, समर्थ सन्तति और चरित्रवान नागरिक निर्माण के सारे नियम मौजूद हैं। समाज की शान्ति और समृद्धि से इस व्रत का गहरा सम्बन्ध है।

5. **अपरिग्रहः-** समाज और देश में आर्थिक समता की स्थापना और विषमता के निवारण में अपरिग्रह व्रत की युगान्तरकारी भूमिका रही है। यह व्रत साम्यवाद और पूंजीवाद के दोषों का निराकरण करता है। यह इन वादों से कई गुना अधिक प्रभावशाली, निरापद और विकासोन्मुख है। उपासकदशांग में इसका नाम इंच्छापरिमाण व्रत है, जो अत्यन्त अर्थपूर्ण है। इच्छाओं के परिसीमन के लिए बाहरी परिग्रह का परिसीमन भी आवश्यक है। आजकल मध्य व उच्च वर्गीय परिवारों के घर अनेक प्रकार की अनावश्यक चीजों से भरे होते हैं। गृहस्थ को सभी प्रकार की वस्तुओं की मर्यादा करनी चाहिये। मर्यादा से अधिक संग्रह को सत्कार्यों में लगाकर व्रत का निरतिचार पालन करना चाहिये। महात्मा गांधी का ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त अपरिग्रह पर आधारित है।

तीन गुणव्रतः-

भगवान महावीर ने पाँच अणुव्रतों के साथ तीन गुणव्रतों की व्यवस्था की, यथा-दिशा परिमाण, उपभोग-परिभोग परिमाण और अनर्थदण्ड-त्याग। गुणव्रत अणुव्रतों के परिपालन में सहायक बनते हैं। साथ ही गृहस्थाचार को अधिक उन्नत व परिपूर्ण बनाते हैं। आर्थिक दृष्टि से गुणव्रत अत्यधिक महत्त्वशाली है।

6. दिशा-परिमाण व्रत (दिग्व्रत):- दिग्व्रत धारण करने से मनुष्य की असीम लालसाएँ सीमित हो जाती हैं। यह व्रत संसार की अनेक आर्थिक, सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक समस्याओं का समाधान करता है। घुसपैठ और प्रतिभा पलायन की समस्या का समाधान इस व्रत की आचार-संहिता में समाहित है। गांधीजी के स्वदेशी का मूलस्रोत भी दिशा-परिमाण है। भगवान महावीर की आचार-संहिता में से तीन नियम आविर्भूत होते हैं- विकेन्द्रित अर्थनीति, विकेन्द्रित उद्योग और स्वदेशी प्रयोग। उपनिवेशवादी मनोवृत्ति पर अंकुश लगाने में दिग्व्रत की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। विश्व में लोकतंत्र के प्रसार के साथ भौगोलिक/राजनैतिक साम्राज्यवाद के विरुद्ध कुछ माहौल बना तो आर्थिक साम्राज्यवाद फैलता जा रहा है। क्रय-विक्रय, आयात-निर्यात आदि में मुक्त व्यापार-प्रणाली और उदारीकरण से विश्व में आर्थिक उपनिवेश की आशंका जताई जा रही है। इनके अलावा हथियारों के वैध-अवैध व्यापार और इनके आयात-निर्यात से संसार भय और हिंसा से आक्रान्त है। ऐसे विकट समय में दिशा-परिमाण व्रत दिशा-सूचक यंत्र की तरह सबका दिशा-बोध कर रहा है।

7. उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत:- सातवाँ व्रत गरीब की सम्पन्नता का और सम्पन्न की सन्तुष्टि का अर्थशास्त्र है। भगवान महावीर ने व्यक्ति को संयमपूर्वक जीने की राह दिखाई। उस राह का बहुत सारा पाथेय इस व्रत में उन्होंने प्रदान किया है। इस व्रत के अन्तर्गत उपभोग और परिभोग का सीमाकरण किया जाता है। उपभोग के अन्तर्गत उन वस्तुओं को लिया जाता है जिनका उपयोग एक बार ही किया जा सकता है, जैसे- जल, भोजन, खाने-पीने की चीजें, शृंगार प्रसाधन सामग्री, एकल उपयोग वस्तुएँ (Use & Throw Items) आदि। परिभोग के अन्तर्गत एक से अधिक बार उपयोग की जा सकने वाली वस्तुएँ आती हैं, जैसे- वस्त्र, वाहन और अन्य ऐसी वस्तुएँ। मर्यादा का जीवन स्वास्थ्य और बजट के लिए अनुकूल होता है।

पन्द्रह कर्मादान:- उपभोग-परिभोग के अन्तर्गत भोजन-सम्बन्धी मर्यादा और व्यवसाय-सम्बन्धी मर्यादाओं की व्यवस्था की गई है। व्यक्ति की जीवन-चर्या और जीविकोपार्जन में सह-सम्बन्ध होता है। इस दृष्टि से इस व्रत

के अन्तर्गत व्रती श्रावक के लिए निषिद्ध व्यवसायों की सूची दी गई है। वह ऐसे व्यवसाय नहीं करें जिससे समाज, संस्कृति, पर्यावरण और अर्थतन्त्र पर विपरीत असर पड़े। ऐसे पन्द्रह धन्धों को पन्द्रह कर्मादान के रूप में जाना जाता है। पन्द्रह कर्मादान सद्गृहस्थ के लिए वर्जित हैं। ये वर्जनाएँ, समाज, देश, अर्थ-तंत्र और पर्यावरण के लिए स्थायी रूप से हितकारी हैं। वर्तमान में जल, जंगल और जमीन के लिए आन्दोलन हो रहे हैं। कर्मादानों के निषेध में समष्टि का हित जुड़ा है। सिर्फ व्यवसाय में हिंसा की खिलाफत से पूरे समाज और जन-जीवन में हिंसा के विरुद्ध प्रभावशाली माहौल बनाया जा सकता है। श्रेष्ठ पर्यावरण, सामाजिक समता और आर्थिक समृद्धि के लिए यह प्रयोग ढाई हजार वर्ष पूर्व सफल रहा था। आज इसे पुनः दोहराने की आवश्यकता है।

8. अनर्थदण्ड विरमण व्रतः- यह धर्मशास्त्र का आठवाँ व्रत है; इसे अर्थशास्त्र का प्रथम व्रत कह सकते हैं। जीवन-व्यवहार और व्यापार में जितनी भी उद्देश्यहीन, अपव्ययकारी और अनुत्पादक गतिविधियाँ और प्रवृत्तियाँ हैं, वे सब अनर्थदण्ड के अन्तर्गत आती हैं। सावधानीपर्वूक ऐसी वृत्तियों से विरत होना अनर्थदण्ड विरमण व्रत है। आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली में अपव्यय अत्यधिक बढ़ गया है। उसे न जनता रोक पा रही है, न सरकार। पच्चीस-छब्बीस शताब्दियों पूर्व तीर्थंकर महावीर जन-जीवन में ऐसी चेतना जागृत कर रहे थे कि समय, श्रम, साधनों और संसाधनों का अपव्यय बिल्कुल नहीं हो। समग्र रूप में राष्ट्रीय उत्पादन, राष्ट्रीय आय और सम-वितरण पर जनता की अपव्ययकारी वृत्तियों का विपरीत प्रभाव होता है।

चार शिक्षाव्रत :-

शिक्षाव्रत के आचरण से अणुव्रत पुष्ट होते हैं तथा जीवन में शुचिता की वृद्धि होती है।

9. सामायिक-व्रतः- सामायिक के स्वरूप पर दृष्टिपात करने से यह निष्कर्ष आसानी से निकाला जा सकता है कि सामायिक करने वाला व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासित, सहिष्णु, परिश्रमी, स्वावलम्बी और समयज्ञ होता है। जीवन को कुशलता पूर्वक चलाने, श्रेष्ठ प्रबन्धन और धनोपार्जन करने के लिए जिन योग्यताओं की आवश्यकता होती है, सामायिक से वे सहज निष्पन्न होती

हैं।

10. देशावकाशिक व्रतः– पाँचवें, छठे और सातवें व्रतों–परिग्रह परिमाण, दिशा परिमाण और उपभोग–परिभोग परिमाण का इस शिक्षाव्रत में प्रशिक्षण और अभ्यास किया जाता है। इस व्रत का आर्थिक पक्ष यह है कि जो व्यक्ति स्वदेशी का प्रचार करते हैं, वे कुछ समय के लिए ही लोगों को स्वदेशी अपनाने का संकल्प करवायें। इससे लोग सहज रूप से ऐसे नियम स्वीकार कर सकेंगे और बड़ी प्रतिज्ञा के लिए तैयार होने की पात्रता अर्जित कर लेंगे। विदेश–यात्रा तथा आयात–निर्यात की नियमावली व्यक्तियों और वस्तुओं की मुक्त आवा-जाही को तरह–तरह से नियमित और नियन्त्रित करती है। गाँव में रहने वाले यह ध्यान रखें कि वे वस्तुएँ जो गाँव में उत्पादित या उपलब्ध होती हैं, उन्हें गाँव से ही खरीदेंगे। इससे ग्रामीण/स्थानीय अर्थ–व्यवस्था सुदृढ़ होगी, वस्तुओं को लाने–लेजाने के लिए परिवहन खर्च बचेगा तथा शहरीकरण पर अंकुश लगाने में मदद मिलेगी।

11. पौषधोपवास व्रतः– सांसारिक और व्यावसायिक कार्यों से दिवस भर की विश्रान्ति के लिए पौषध व्रत की आराधना उपवास के साथ की जाती है। इस व्रत का महत्त्व आध्यात्मिक अधिक है। जो व्यक्ति एक दिन के लिए भी इन चीजों का त्याग करता है, वह त्याग की दिशा में आगे बढ़ता है। ऐसी आराधनाओं से समाज में निर्लोभता, त्याग, शुचिता आदि प्रशस्तताओं को बढ़ावा मिलता है।

12. अतिथि संविभाग व्रतः– संविभाग का अर्थ है– सम्+विभाग। सद्गृहस्थ को अतिथि और साधु सदृश योग्य पात्र के लिए अपने आहार, धन, साधन और संसाधन आदि का उचित भाग करना चाहिये। भगवान महावीर कहते हैं– 'असंविभागो न हु तस्स मोक्खो' जो अपने धन व साधनों का संविभाग नहीं करता है, उसका कल्याण सम्भव नहीं है।

इस प्रकार द्वादश व्रतों के माध्यम से आगम–ग्रन्थों में उत्तम नागरिक संहिता बताई गई है, जो व्यक्ति व समाज तथा राष्ट्र एवं विश्व को सुखी तथा समृद्ध बनाती है। व्यावसायिक नीतिशास्त्र के लिए अणुव्रत प्रेरक दस्तावेज है।

–53, डोरे नगर, उदयपुर–313002 (राज.)

युवा-स्तम्भ

उपभोक्ता संस्कृति और अपरिग्रह

डॉ. जवाहर लाल नाहटा

उपभोक्ता संस्कृति और अपरिग्रह परस्पर विरोधी विचारधाराएँ हैं। उपभोक्ता संस्कृति कहती है- अधिक से अधिक वस्तुओं का प्रयोग करो। इसके विपरीत अपरिग्रह की विचारधारा कहती है- कम से कम वस्तुओं का प्रयोग करो। उपभोक्ता संस्कृति भोगवाद की ओर प्रवृत्त करती है, अपरिग्रह आत्म संयम की ओर। एक अनन्त इच्छाओं का अन्तहीन सिलसिला है, दूसरा इच्छाओं का परिसीमन। उपभोक्ता संस्कृति भौतिक इन्द्रियों का सुखवाद है, अपरिग्रह आत्मवादी इन्द्रिय-निग्रह। उपभोक्ता संस्कृति भौतिक विकास से जुड़ी हुई है, अपरिग्रह आत्मिक विकास से।

पिछले बीस वर्षों से उपभोक्ता संस्कृति पूँजीवाद के एक नये संस्करण के रूप में प्रकट हुई है। 1991 में साम्यवाद के सबसे बड़े दुर्ग सोवियत संघ के टूटने के बाद नियंत्रित समाजवादी अर्थव्यवस्था से सब देशों का मोहभंग हो गया और पूरे विश्व में आर्थिक उदारीकरण और खुले बाजार की बयार बहने लगी। अधिक उत्पादन (सकल घरेलू उत्पाद) किसी देश के विकास का मापदण्ड हो गया। पूँजी, उत्पादन और बाजार के विस्तार के लिए बहुराष्ट्रीय निगमों को खुली छूट मिल गई। वैश्वीकरण के नाम पर उपभोक्ता को, चाहे वह किसी देश का हो- ललचा कर, उसके मन में अनावश्यक डर पैदा करके, अपने उत्पादों के साथ उसकी उच्च प्रतिष्ठा का भाव जाग्रत करके अर्थात् विज्ञापनों के हर मनोवैज्ञानिक प्रभाव का उपयोग करके अपनी आवश्यक-अनावश्यक वस्तुओं को बेचकर उपभोक्ताओं से अधिक से अधिक पैसा खींचना इनका मुख्य उद्देश्य हो गया। विश्व के आर्थिक मंच पर पूँजीवाद की यह सबसे बड़ी विजय है। इसी के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई है उपभोक्ता संस्कृति। इसमें मनुष्य अपनी जरूरत, जेब, स्वास्थ्य और देश के लाभ-हानि की चिन्ता न करते हुए-नाना प्रकार की वस्तुओं को खरीदता है, भोगता है और जी भर जाने पर उन्हें फेंक कर वातावरण को दूषित करता है। आर्थिक रूप से कमजोर व्यक्ति जो ऐसा नहीं कर

पाते, वे हीन भावना से ग्रसित होकर एक विषादपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं और उनकी पूर्ति हेतु नाना प्रकार के आर्थिक अपराधों में लिप्त होने को बाध्य होते हैं।

आज छप्पन भोगों से भी आगे बढ़ कर- अमेरिकन, जापानी, चाइनीज, मंचुरियन, कोन्टिनेंटल, साउथ इण्डियन, पंजाबी, गुजराती खाद्य सामग्रियों का भोग करते हुए जरूरत से ज्यादा खाना एवं नित्य नये बदलते फैशन डिजाइन वाले ब्राण्डेड परिधान, सौन्दर्य प्रसाधन और भव्य पार्टियों, बियर बारों में नृत्य-संगीत-मनोरंजन से भरपूर आधुनिक जीवन-शैली उपभोक्ता संस्कृति की देन है। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है' जैसे कथन उल्टे हो गये हैं। अब पहले आविष्कार-उत्पादन होता है, उसके बाद प्रचण्ड प्रचार तंत्र के बल पर माँग और बाजार अपने आप तैयार हो जाते हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जरूरी-गैर जरूरी जो भी बनायें विश्व की छः अरब आबादी में सबकुछ खप जाता है। इसीलिए भारत और चीन जैसी बड़ी आबादी वाले विशाल चरागाह बहु राष्ट्रीय निगमों को बहुत आकर्षित करते हैं। आज की उपभोक्ता संस्कृति के कारण अरबों रुपयों वाले अनेक नये-नये उद्योग और सेवाएँ चल पड़ी हैं। अर्थशास्त्री इसे आर्थिक विकास का सूचक मानते हैं, किन्तु इस अतिभोगवादी संस्कृति के भावी दुष्परिणामों का चिन्तन करने वाले कम ही रह गये हैं। क्योंकि विकास की तात्कालिक चमक-दमक तो सबको नज़र आती है, किन्तु भोगवादी संस्कृति के मूल में निहित आर्थिक, सामाजिक और प्राकृतिक असन्तुलन किसी को दिखाई नहीं देता। विषाक्त औद्योगिक कचरा और शहरों में बढ़ते हुए कूड़े के ढेर भी लोगों को सावधान नहीं करते।

अधिक भोग का अर्थ है-अधिक उत्पादन। अधिक उत्पादन के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधिकाधिक दोहन और ऊर्जा की अधिक खपत। परिणाम- प्राकृतिक असन्तुलन और प्रदूषण। सिकुड़ते जंगल, वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड की बढ़ती हुई मात्रा, परमाणु रियेक्टरों से फैलता हुआ रेडियो धर्मी विकिरण आज वैज्ञानिकों की चिन्ता के विषय बन गये हैं। इसी के परिणाम स्वरूप हमारे ग्रह का बढ़ता हुआ तापमान, विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ और नाना प्रकार के असाध्य रोग खतरे की घंटी बजा रहे हैं। यदि हालात नहीं बदले तो इक्कीसवीं सदी के मध्य तक भीषण प्राकृतिक विप्लव की

आशंका वैज्ञानिकों को हो रही है। उपभोक्ता संस्कृति शनैःशनैः आत्मघाती विनाश की ओर अपने कदम बढ़ा रही है। प्रकृति के सारे संसाधनों का भोग हम ही कर लेंगे भले ही हमारी भावी पीढ़ी भूखों मरे। 'यूज एण्ड थ्रो' संस्कृति का यही तो परिणाम होगा।

जैन विचारधारा भोगवाद की इस समस्या के प्रति प्राचीन काल से ही सावधान रही है। तपस्या और निवृत्ति-भावना के साथ-साथ भगवान महावीर ने पाँच महाव्रतों के रूप में मनुष्य को आदर्श जीवन दर्शन दिया है। सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अस्तेय, ब्रह्मचर्य - ये पाँच व्रत हमारे जीवन की आचार संहिता है और यही सार्वभौमिक धर्म है। इन पाँच व्रतों में अपरिग्रह भोगवाद की समस्या का सही निदान है। अनन्त इच्छाओं की पूर्ति के लिए धन, सम्पत्ति और भोग-सामग्री का आसक्तिपूर्वक ग्रहण परिग्रह कहलाता है और इसका अभाव अपरिग्रह। भोग-सामग्रियों का आसक्तिपूर्ण परिग्रहण और संग्रह की मानसिकता व्यक्ति और समाज दोनों के लिए एक समस्या है। यह समस्या महावीर के युग में भी थी और आज भी है, क्योंकि इच्छाएँ अनन्त हैं, और इनकी पूर्ति के साधन सीमित। अग्नि शिखा के समान जलती हुई ये इच्छाएँ पतंगे के समान मनुष्य को आकर्षित करती हैं। तृष्णा की इन रक्तिम ज्वालाओं में मनुष्य जीवन भर अपने को जलाता है, किन्तु कभी भी तृप्ति का अनुभव नहीं होता। इच्छाओं के भोग से सुख प्राप्त करना एक ऐसी मृग मरीचिका है जिसे पाने के लिए मनुष्य जीवन भर संघर्ष करता है, किन्तु अतृप्ति के अहसास के साथ ही मरना पड़ता है। आज के भागदौड़, संघर्षरत और तनावपूर्ण जीवन का मुख्य कारण यही है कि हमने अपनी इच्छाओं को बहुत बढ़ा लिया है। महावीर के युग से कई गुणा अधिक। इस अभिशप्त-असंतृप्त जीवन से मुक्ति पाने का एक ही रास्ता है। वह है उपभोक्ता संस्कृति के मोह का परित्याग और इच्छाओं का परिसीमन अर्थात् अपरिग्रह।

जैन श्रावक के बारह व्रतों में-'स्थूल परिग्रह-विरमण व्रत' और 'उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत' इसी इच्छा परिसीमन का एक व्यावहारिक रूप है। इसमें संकल्पबद्ध होकर कम से कम वस्तुओं के प्रयोग से जीवन निर्वाह का अभ्यास किया जाता है। जैन कथाओं में पूणिया श्रावक अपरिग्रह संस्कृति का

आदर्श चरित्र है जिसमें वह दिन-भर रूई से पूणियाँ बनाता है और उन्हें बेचकर जितना धन प्राप्त होता है, उसी में अपने परिवार का पालन-पोषण करते हुए सन्तुष्ट रहता है। महात्मा कबीरदास भी ऐसे ही अपरिग्रही थे। पूणिया श्रावक की तरह वे भी कपड़ा बुनकर अपने परिवार का पालन-पोषण करते और ईश्वर की भक्ति में मस्त रहते-

सांई इतना दीजिये जामें कुटुम्ब समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

इच्छाओं का परिसीमन करते हुए कबीरदास ने अपना मन फकीरी में लगा दिया। इस फकीरी में ही उन्हें अनुपम सुख की अनुभूति होती है, क्योंकि-

चाह मिटी चिन्ता गई मनुवा बेपरवाह।
जिन्हें कछु न चाहिये, वे ही शहनशाह।।

आधुनिक युग में महात्मा गांधी ने भी कम से कम वस्तुओं का प्रयोग करते हुए सादगी और सदाचार की साधना की और जीवन भर वे सत्य-अहिंसा-अपरिग्रह के प्रयोग करते रहे। यह बात उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रति मेरे प्रयोग' में स्पष्ट रूप से वर्णित है। किन्तु आज के उपभोक्तावादी युग में गाँधी के आर्थिक सिद्धान्त और सादगी की अवधारण को कौन पूछता है?

उपभोक्ता संस्कृति के कारण आज जो अनेक आर्थिक, सामाजिक समस्याएँ हमारे सामने उपस्थित हो रही हैं उनमें सबसे विकराल है आर्थिक-विषमता। औद्योगीकरण और अति उत्पादन एक तरफ अमीरी बढ़ा रहे हैं तो दूसरी तरफ उसी अनुपात में गरीबी भी बढ़ रही है। राष्ट्रों और व्यक्ति-व्यक्ति के बीच की यह आर्थिक विषमता हमारी अशान्ति और हिंसा का मूल कारण है। उपभोक्ता संस्कृति ने हमारे युग को गलाकाट प्रतिस्पर्धा के युग में धकेल दिया है। भोगों का लोभ मनुष्य को अनैतिक, अकरुण, स्वार्थी और निष्ठुर बनाता है। अतः एक संवेदनशील कल्याणकारी समाज के लिए अपरिग्रह की संस्कृति अनिवार्य है। समतापूर्ण समाज की यही आधारशिला है।

-वार्ड नं. 7, बरपेटा रोड़, असम-781315

इच्छाएँ आकाश के समान अनन्त हैं। उन पर विवेक से नियन्त्रण करने वाला ही सुख एवं शान्ति का अनुभव करता है।

श्रद्धापुंज का संस्मरण

जीवन निर्माता गुरुदेव

श्री धनरूप चन्द मेहता

धार्मिक संस्कार वाले घर में मेरा जन्म हुआ। मेरे पिताजी श्री नेमीचन्द जी मेहता गुरु-सेवा और संघ-सेवा में सदैव अग्रणी रहते थे। वे आचार्य हस्ती के परम भक्त थे। बात उस समय की है जब मैं सन् 1980 में मुम्बई में कपड़े का व्यवसाय करता था। एक बार व्यापार के कार्य से मेरा मद्रास जाना हुआ। मैं वहाँ एक होटल में ठहरा हुआ था। मेरा एक मित्र श्री प्रकाश मूथा मद्रास में रहता था। मुझे उससे ज्ञात हुआ कि गुरुदेव (आचार्य हस्ती) यहाँ विराज रहे हैं। हम दोनों ने उनके दर्शन करने की योजना बनाई और दूसरे दिन दोपहर में गुरु-दर्शन के लिए पहुँच गए।

आचार्य श्री के दर्शन कर मैं प्रफुल्लित था, किन्तु उनके चेहरे को देखकर लगा कि वे कुछ खिन्न हैं। मैं समझ नहीं पाया कि बात क्या है? तभी गुरुदेव ने मुझसे पूछा- तुम किसके बेटे हो? मैंने शीघ्रता से प्रत्युत्तर दिया- श्री नेमीचन्द जी मेहता पीपाड़ वाले का। गुरुदेव ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा और बोले- ''नाम तो मैं तेरे दादा का भी जानता हूँ। मेरे पूछने का मतलब है कि नेमीचन्द जी कैसे श्रावक थे, उनका कैसा जीवन था और उनके पुत्र को मैं किस रूप में देख रहा हूँ।'' यह बात सुनकर मुझे उनकी खिन्नता का कारण समझ में आ गया कि उन्हें मेरे लम्बे-लम्बे बाल, फैन्सी कपड़े, हाथ में फिल्मी किताबें, मुँह में पान व गुटखे को देखकर अच्छा नहीं लगा।

गुरुदेव ने पूछा कि मद्रास कैसे आना हुआ? मैंने बताया कि व्यापारिक कार्य से आया हूँ। उन्होंने फरमाया कि तीन दिन बाद पर्युषण आने वाले हैं। पर्युषण में नेमीचन्द जी आठ दिन दुकान बन्द रखकर स्वाध्यायी के रूप में सेवा देते थे और तुम.........? यह सुनकर मैं बहुत शर्मिंदा हुआ। मुझे अपने कृत्यों पर ग्लानि हुई। समय के औचित्य को जानकर गुरुदेव ने मुझे धर्म-मार्ग की ओर प्रेरित किया, तब से मेरे जीवन में धर्म की भावना जगी। उस समय मेरे खान-पान भी गलत थे, उनका भी मैंने त्याग किया। मन में आया कि जब भी अवसर मिलेगा, गुरुसेवा करूँगा, संघ-सेवा करूँगा।

उस दिव्य द्रष्टा और जीवन-स्रष्टा ने मेरे जैसे अधर्मी को धर्म में लगा दिया, उनके एक उपदेश से ही मेरे जीवन में परिवर्तन प्रारम्भ हो गया। गुरु भगवन्त के साथ बीते वे पल आज भी स्मृति-पटल पर चल-चित्र की भांति घूमते हैं, उनके संदेश अब भी कानों में गूंजते हैं। कहते हैं-ज्योतिषी भविष्य बताते हैं, किन्तु हमारे गुरुदेव भविष्य बनाते हैं, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मेरा जीवन है।

-उपाध्यक्ष, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, बैंगलुरू (कर्नाटक)

घटना का पूर्व बोध रहता था उन्हें

श्री गौतमचन्द ओस्तवाल, बेंगलूरू

सन् 1980 के मद्रास चातुर्मास के पूर्व अक्षय तृतीया के बाद बेंगलूरू से विहार कर मद्रास पधारते समय-सुंगाछत्रम् ग्राम के नजदीक स्कूल में-युगद्रष्टा, युग मनीषी, इतिहास मार्तण्ड, असीम आत्म शक्ति के धनी, अल्पभाषी, अल्पभोजी, दिव्य आभामण्डल के स्वामी, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, स्थानकवासी जैन समाज के प्रभावशाली आचार्य पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. अपनी शिष्य मण्डली के साथ रात्रि विश्राम हेतु विराज रहे थे। सायंकाल प्रतिक्रमण, कल्याण मंदिर स्तुति के उपरांत सहसा, उपस्थित हम सभी श्रद्धालु संवर आराधक श्रावकों को आचार्य भगवन्त ने लोगस्स के काउस्सग का संकेत किया एवं स्वयं ध्यानस्थ रहे। करीब घंटे भर बाद मद्रास से दर्शन-वन्दन की भावना से पधारने वाले दो-तीन कारों में आए श्रावकों ने सूचना दी कि जयपुर में विराजमान खरतरगच्छीय महासाध्वी श्री विचक्षणश्रीजी म.सा. का देवलोक गमन हो गया है। मैं यह सब देखकर-सुनकर अवाक् रह गया कि युगदष्टा आचार्य श्री हस्ती का आत्मज्ञान कितना उच्च कोटि का है कि उन्होंने हमें इस घटना का पूर्व में संकेत किया और लोगस्स के ध्यान में हम रहे। न मोबाइल, न फोन, न किसी व्यक्ति द्वारा संदेश-सिर्फ और सिर्फ आत्म ज्ञान (टैलीपेथी) से यह सब जाना। ऐसे अलिप्त त्यागी, महान् वैरागी, निर्मल चारित्र के धनी, अखण्ड बाल ब्रह्मचारी परम आस्था के केन्द्र थे-गुरुदेव आचार्य श्री हस्ती। अतिशय युक्त उस युग पुरुष को शतशः श्रद्धा नमन, गुण स्मरण!

-Moksh Dwar (Gautam) J-91, 9th Cross, Ist Floor, L.N.Puram, Srirampuram, Bangalore-560021

चिन्तन

कृपाश्री की तपस्या और ज्ञान-पिपासा

दीपा दुधेड़िया (एडवोकेट)

(1) वैराग्य की ज्योतिः- वर्ष 2006 में महासती श्री सोहनकँवर जी म.सा. ठाणा-6 का सवाईमाधोपुर के हाउसिंग बोर्ड में चातुर्मास था। उस वर्षावास में जिनवाणी श्रवण करके सुश्री समता में वैराग्य की ज्योति जल उठी। 15 मई 2010 को रत्नसंघ में एक ही दिन अलग-अलग स्थानों पर जो दस दीक्षाएँ हुई, उनमें से एक दीक्षा साध्वी सोहनकँवर जी के सिंघाड़े में मुमुक्षु समता की थी। छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करते हुए आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने समता जी को साध्वी कृपाश्री नाम प्रदान किया।

(2) उदाहरणीय तपः- साध्वी कृपाश्री अपने वैराग्य काल से ही उपवास, बेला, तेला, पाँच उपवास, अठाई, नौ उपवास आदि तपस्याएँ करने लग गई थीं। 30 दिसम्बर 2009 से उनके एकान्तर तप चल रहा था। उसी में उन्होंने मासखमण तप प्रारम्भ किया। अल्पवय और अल्प दीक्षा पर्याय में ऐसी दीर्घ तपस्या उदाहरणीय है। लोग करने लग गये- "कद छोटा, तप मोटा।"

(3) मुझे नहीं सोनाः- मासखमण तप प्रारम्भ करने के बाद साध्वी कृपांश्री ने उन्नीस दिनों तक प्रतिदिन दो-तीन हजार पद परिमाण स्वाध्याय किया। बीस उपवास के बाद प्रतिदिन एक हजार पद परिमाण स्वाध्याय किया। स्वाध्याय तप के साथ नित्य एक माला लोगस्स का जप भी चलता रहा। महासती श्री विश्राम के लिए बोलते तो कृपाश्री कहती- "पूज्य महेन्द्र मुनि जी तो तपस्या में गोचरी-पानी के लिए भी जाते हैं। मैं बैठी-बैठी माला ही तो जप रही हूँ। मुझे नहीं सोना।"

(4) अनूठी आगम-निष्ठा :- साध्वी कृपाश्री में आगम-स्वाध्याय की भी अनूठी ललक है। उन्होंने वैराग्य अवस्था में ही जैन सिद्धान्त थोक संग्रह भाग 1-2-3, पन्नवणा सूत्र का पहला भाग, छः कर्मग्रन्थ आदि कई थोकड़ों के साथ 15 आगम कण्ठस्थ कर लिये थे। अब वे 16वाँ आगम कण्ठस्थ कर रही हैं। वैराग्यवस्था में ही उन्होंने स्वाध्यायी के रूप में चार वर्ष तक पयुर्षणकालीन

सेवाएँ दीं। दीक्षा से पूर्व ही उन्होंने एक ही दिन में 31 किलोमीटर का विहार करके अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति का परिचय दिया।

(5) गौरवशाली परिवारः- साध्वी कृपाश्री के सांसारिक पिता श्री नरेन्द्र मोहन जी जैन स्वाध्यायी है। उनकी बहिनें भी ज्ञान-ध्यान में निरन्तर आगे बढ़ रही है। भाई श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल में पिछले 7-8 वर्षों से सेवाएँ दे रहे है तथा वे साधु-साध्वियों को अध्यापन भी करवाते हैं।

(6) नई धर्म-जागृतिः- आचार्य श्री की कृपा, साध्वी श्री विमलावती जी ठाणा-4 के चातुर्मास तथा साध्वी कृपाश्री की तपस्या से मीरानगरी मेड़ता के श्रावक-श्राविकाओं में एक नया जोश, नई उमंग और नई जागृति आ गई है। यहाँ त्याग-प्रत्याख्यान और धर्म-ध्यान क ठाट लगा हुआ है। मेड़ता श्री संघ अध्यक्ष श्री जबरचन्द जी चोरडिया, मंत्री श्री हस्तीमल जी डोसी सहित सभी मेड़तावासी संघ और जिनशासन की सेवा में जुटे हुए हैं।

-धाड़ीवालों का मौहल्ला, मेड़ताशहर (राज.)

प्रभु से प्रार्थना

हे प्रभो! मुझे आप वह शक्ति प्रदान कीजिए, जिससे जीवन में मेरा कभी अधःपतन न होवे। विश्व के प्रलोभन मुझे किंचित् भी आकृष्ट न कर सकें। मुझे सांसारिक पदार्थों की तृष्णा या विषय-वासना नहीं सतावे, ऐसी सन्मति प्रदान कीजिए। मेरी एकमात्र यही इच्छा है, यही याचना है कि मेरा विश्वास, मेरी श्रद्धा अन्यत्र न जाकर केवल आप ही के चरणों में केन्द्रित रहे।

दूसरी याचना यह है कि जब कभी सत्य व शील के मार्ग से मेरा मन विचलित होने लगे उस समय आप मेरी सहायता अवश्य करावें। सांसारिक साधन रहे या न रहे इसकी तो कोई चिन्ता नहीं है, पर इस विशुद्ध अन्तःकरण में कोई कुसंस्कार न जागे। कोई जड़ पदार्थ धन, मकान, शरीर, कुटुम्ब, परिवार आदि में राग-भाव, ममत्व-भाव आ जाय; मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, अहंभाव, स्वार्थ की वृत्ति इस अन्तरात्मा में तूफान मचाने लगे, उस समय मेरी सजगता रखें।

संकलन - स्व. श्री राजेन्द्र जी भण्डारी, बैंगलुरू

नारी-स्तम्भ

छोटी बहू का जादू

श्री जशकरण डागा

एक परिवार में वृद्ध माता-पिता उनके पाँच पुत्र, पाँच पुत्र-वधुएँ, दो पुत्रियाँ एवं चार पौत्र, यों कुल अठारह सदस्य थे। छोटे पुत्र का विवाह कुछ दिन पूर्व ही हुआ था। परिवार में परस्पर प्रेम न होने से प्रायः नित्य तू-तू, मैं-मैं होती थी। छोटी बहू की चारों जेठानियां घर के कार्यों से जी चुराती थीं। वे काम कम करने और आराम अधिक करने की मनोवृत्ति वाली थीं। घर के कामकाज के लिए वे परस्पर झगड़ती और उनको झगड़ते देखकर पड़ौस के भाई-बहिन भी एकत्रित हो जाते। छोटी बहू प्रथम बार ससुराल आई। वहाँ के क्लेशपूर्ण, अशान्त वातावरण को देख कर घबरा उठी। वह उत्तम घराने की सुसंस्कारित लड़की थी। वह मन ही मन प्रभु को सुमरन कर सोचने लगी- "हे प्रभो! क्या इस क्लेश पूरित नारकीय घर में रहना ही मेरे भाग्य में लिखा था? मैंने कौनसे दुष्कर्म किए थे जिससे मुझे इस घर में आना पड़ा? मैं यहाँ अपना जीवन शान्ति से कैसे व्यतीत कर सकूँगी?" रात्रि में भी काफी समय तक नींद नहीं आती थी। वह परमेष्ठी मंत्र जपने लगी जिससे कुछ समय में निद्रागस्त होकर सोने लगी। निद्रा में ही उसे एक दिव्य बोध सुनाई पड़ा - 'पुत्री घबरा नहीं, इस घर के सुधार के लिए ही तुझे यहाँ भेजा गया है। तेरी जैसी सुसंस्कारित लड़की की यहाँ आवश्यकता है।" इन शब्दों को सुनकर उसे बड़ी सान्त्वना मिली। उसने मन ही मन अपना कर्त्तव्य निश्चित कर, घर के वातावरण को सुधारने का संकल्प लिया। वह पंच परमेष्ठी का सुमरण कर शय्या से उठी।

घर में कभी क्लेश व अशान्ति न हो, इसके लिए छोटी बहू उपाय सोचने लगी। उसने विचार किया इस घर में आने से मुझे सेवा का सुंदर अवसर प्राप्त हुआ है। वह एक दिन बड़ी जेठानी (जिसकी खाना बनाने की बारी थी) के पास जाकर कहने लगी- 'मैं आप सबसे छोटी हूँ। मेरे रहते आप रसोई का कार्य करें, यह उचित नहीं है आपके बच्चे भी हैं। अतः आप कृपा कर सेवा का कार्य करने का मुझे मौका दें। आप कुछ दिन आराम कर लें। इसी तरह अन्य तीन जेठानियों

से भी जो काम से जी चुराती थी, निवेदन कर, छोटी बहूने उन सबका कार्य अपने जिम्मे ले लिया।

अब छोटी बहू रसोई का एवं अन्य कार्य भी बड़ी कुशलता से शीघ्र निपटा लेती थी। वह खाना भी सबको खिलाने के बाद खाया करती। कभी मेहमान आ जाते तो उन्हें भी बड़े प्रेम से आवभगत कर भोजन कराती। आतिथ्य सत्कार में वह बड़ा लाभ मानती। एक दिन सासू ने सारा कार्य छोटी बहू द्वारा दक्षता पूर्वक करते देख उससे कहा- "पुत्री! तूने घर का सारा कार्य अपने जिम्मे क्यों ले लिया?" उत्तर में वह बड़ी नम्रतापूर्वक बोली-"माताजी! मेरे माता-पिता ने यही शिक्षा दी है कि यह शरीर तो एक दिन मिट्टी में मिल जाने वाला है, अतः इसे अधीकाधिक दूसरों की सेवा में लगाकर उपयोग कर लेना चाहिए।" अतः आप मुझे सेवा हेतु बराबर प्रेरणा दें, उत्साहित करती रहें। सासू छोटी बहू का यह उत्तर सुनकर चकित हो गई। वह विचारने लगी, यह कोई सामान्य मानुषी नहीं, वरन् मानुषी रूप में देवी है। अब सभी का समय बड़ी सुख शान्ति से निकलने लगा। एक बार श्वसुर जी बाजार से बीस साड़ियाँ खरीद कर लाए तथा उन्होंने प्रत्येक बहू को चार-चार साड़ी वितरित कर दी। छोटी बहू ने चारों जेठानियों को यह कह कर कि मेरे पास पीहर की साड़ियाँ रखी हैं, अधिक संग्रह हुआ और मरते वक्त इन साड़ियों में मन रहा तो भूत-प्रेत की योनि में भटकना पड़ सकता है, अतः आप मेरी छोटी से भेंट स्वीकार करें तो मुझे प्रसन्नता होगी। छोटी बहू ने एक एक साड़ी चारों को भेंट कर दी। छोटी बहू का यह स्नेह पूर्ण व्यवहार देख सभी चकित रह गई तथा वे सभी छोटी बहू को विशेष रूप से चाहने लगी। उसका कार्य भार हलका करने के लिए सभी ने छोटी बहू से आग्रह कर अपनी-अपनी भोजन एवं अन्य कार्यों की बारी भी सम्हाल ली।

इस पर छोटी बहू ने सबसे आग्रहकर बर्तन मांजने का कार्य सम्हाल लिया। सासू के पूछने पर कहा-"सासूजी, रसोई का कार्य प्रेमपूर्वक एवं यतना सहित करने से एक वर्ष में आत्म कल्याण संभव है, वहाँ यतना सहित बर्तन साफ करने, झाडु-पौंचा लगाने का कार्य करने से, छह माह में ही आत्म-कल्याण हो जाता है, ऐसी शिक्षा मेरे माता-पिता से प्राप्त की है। अतः मुझे इस पुनीत सेवा के कार्य से वंचित न करें।" यह कथन सुनकर उसकी चारों जेठानियाँ बड़ी प्रभावित हुईं

और बर्तनों का काम भी वे बारी-बारी से करने लगीं। इस पर छोटी बहू ने आटा पीसने एवं कुएँ से पानी लाने का कार्य सम्हाल लिया। तब सासू एवं श्वसुर ने छोटी बहू से कहा-"तुम्हारे तो सुख भोगने एवं आराम करने का समय है, यह कठोर कार्य तुम्हारे करने योग्य नहीं है।" इस पर बहू ने पुनः विनयपूर्वक कहा-आप मेरे धर्म के माता-पिता हो। मुझे पीहर में ऐसी शिक्षा दी है कि जहाँ रसोई के कार्य करने से एक वर्ष में, बर्तन, झाडु-पौंचा करने से छह माह में आत्म-कल्याण होता है वहाँ आटा पीसने एवं कुएँ से पानी लाकर सेवा करने में तीन माह में ही आत्म-कल्याण हो जाता है। अतः अब कृपा कर मुझे इस अंतिम सेवा के कार्य को करने से न रोकें।

छोटी बहू के इस प्रकार विवेक पूर्ण विनम्र व्यवहार और आत्मीयता पूर्वक सभी की सेवा करने एवं घर का कार्य, कुशलता पूर्वक संचालित करने से सभी का हृदय उसने जीत लिया। एक वर्ष में ही उसने सुख, शान्ति, आनन्द एवं प्रेम का ऐसा वातावरण स्थापित किया कि वहाँ नाटकीय दुर्वृत्तियाँ समाप्त हो गईं और घर में स्वर्ग उतर आया। अब "तू-तू, मैं-मैं," के बजाय नित्य सुबह-शाम प्रभु-प्रार्थना होने लगी। सभी आने-जाने वाले भाई-बहिन सुसंस्कारित छोटी बहू की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते, और कहते-'बहू हो तो ऐसी।'

इस प्रेरक घटना से सभी माता-बहिनें प्रेरणा लेकर अपनी संतानों को सुसंस्कारित करें तो घर-घर में स्वर्ग सुख, शान्ति और आनन्द की अनुभूति की जा सकती है।

-डागा सदन, संघपुरा, पो. टोंक-304001 (राज.)

क्षमा-याचना

'जिनवाणी' पत्रिका के समस्त पाठकों एवं लेखकों से हमारा नियमित सम्बन्ध रहता है। हमारी ओर से रही भूल के कारण आपके हृदय को ठेस पहुँचना स्वाभाविक है। हम अपनी भूल का परिमार्जन करते हुए आपसे इस पर्वाधिराज पर्युषण पर्व की आराधना करते हुए निर्मल हृदय से क्षमा याचना करते हैं। आशा है आप क्षमा करेंगे।

-सम्पादक, सह सम्पादक एवं जिनवाणी परिवार

बाल-स्तम्भ

क्षमा का प्रभाव

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा.

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित कहानी को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 नवम्बर 2010 तक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.) के पते पर प्रेषित करें। श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरूणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-250 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-200 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 150 रुपये तथा 100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार।

करीब एक हजार वर्ष पुरानी बात है। एक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसका नाम था- बोधा। अपने जीवन निर्वाह के लिये वह घी-तेल का व्यापार करता था। वह बहुत छोटा और भोला व्यापारी था। किसी तरह दो-तीन सेर वजन का एक कुल्हड़ कभी घी से भरकर, तो कभी तेल से भरकर निकटवर्ती नगर में ले जाता और बेच आता। उससे जो मामूली आय होती, उसी से वह अपना जीवन-निर्वाह करता था।

बोधा अपनी गरीबी से बड़ा दुःखी रहता था। उसे अपने दुर्भाग्य पर विचार करते-करते संसार से विरक्ति हो गई। एक बार जैनाचार्य यशोभद्रसूरि के दर्शन और उपदेश-श्रवण का उसे अवसर मिला। आचार्यश्री के वैराग्य से ओतप्रोत उपदेश सुनकर बोधा की विरक्ति प्रबलतर हो गई। उसने आचार्यश्री के पास दीक्षा ले ली और मुनि बन गया।

बोधा मुनि ने तीन वर्ष तक आचार्य यशोभद्र की सेवा में रहते हुए तपस्याएँ कीं और तप के साथ-साथ आगम ग्रंथों का स्वाध्याय भी किया। एक बार बोधा मुनि के मन में विशेष तपस्या करने का भाव जगा। उन्होंने अपने गुरु आचार्य यशोभद्र के समक्ष अपनी भावना रखी। गुरु से आज्ञा प्राप्त करके बोधा मुनि वन, उपवन, मरघट, गिरि, कन्दरा जैसे स्थानों में जाकर घोर तपस्याएँ करने लगे। अपने तप-साधनामय जीवन में वे सभी प्रकार के कष्टों, उपसर्गों और परीषहों को समभाव से सहन करते हुए आत्म-चिन्तन में लीन रहते थे।

एक बार वे अवन्ती नगरी के समीपस्थ धामनोद ग्राम के तालाब के निकट वन में ध्यान-तप में लीन थे। धामनोद के बालक और किशोर तालाब के पास घूमने आते थे। उन किशोरों ने जब बोधा मुनि को ध्यानस्थ देखा, तो उन्हें शरारत सूझी। वे मुनि को ताड़न-तर्जन करते हुए हँसी-ठट्ठा करने लगे। पर बोधा मुनि अपने गहरे आत्म-ध्यान से विचलित नहीं हुए। उन्होंने किसी भी प्रकार का आक्रोश और प्रतिकार नहीं किया। साधना के साथ-साथ इस प्रकार की क्षमा, समता और सहनशक्ति के फलस्वरूप मुनि को अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त हो गई थीं।

एक दिन वे उस तालाब की पाल के पास श्मशान से कुछ दूरी पर एक विशाल वृक्ष के नीचे ध्यानस्थ खड़े थे। उसी समय उस ग्राम के वे उद्दण्ड किशोर फिर वहाँ आए और उत्पात मचाने लगे। वे किशोर धनाढ्य माता-पिता की सन्तान थे, किन्तु उनमें विवेक और संस्कार नहीं थे। मुनि को ध्यान से डिगाने के लिए वे उन पर ढेलों, पत्थरों और यष्टिकाओं से प्रहार करने लगे। इससे मुनि को भयंकर पीड़ा होने लगी। किन्तु बोधा मुनि अडोल, अकम्प और ध्यानमग्न खड़े रहे।

इतनी मार के उपरान्त भी मुनि को निश्चल खड़ा देख वे उद्दण्डी छोकरे उन पर तीव्र वेग से पत्थरों और डण्डों की बौछार करने लगे। इससे बोधा मुनि के शरीर के कई स्थानों से लहू की धाराएँ बहने लगीं। इतना होने पर भी मुनि के मन में अणुमात्र भी क्रोध या उत्तेजना उत्पन्न नहीं हुई। "इन अबोध बालकों द्वारा मेरे कर्म बंधन काटे जा रहे हैं" यह सोचकर क्षमा के सागर बोधा मुनि शुभ ध्यान में लीन रहे।

निरपराध बोधा मुनि पर उन उद्दण्ड किशोरों द्वारा किये जा रहे निर्दयतापूर्ण प्रहारों को देखकर वहाँ श्मशान में अवस्थित कोई दिव्य शक्ति क्रुद्ध हो उठी। उस अदृश्य शक्ति के कोप से तत्क्षण उन उद्दण्ड किशोरों के मुख-नासिकाओं से अनवरत लहू की धाराएँ प्रवाहित होने लगीं। क्षणभर में ही डर के मारे वे किशोर अपने-अपने घरों की ओर ऐसे भागे मानो एक धमाके के शब्द से चिड़ियों का झुण्ड उड़ा हो।

अपने पुत्रों के मुख और नाक से बहती हुई खून की धाराओं को देखकर उनके माता-पिता, स्वजन-स्नेही एवं पास-पड़ौसी उन किशोरों के चारों ओर एकत्रित हो गए। लहू के प्रवाह को रोकने के अनेक उपाय किये,

पर सब व्यर्थ। एक वृद्ध वैद्य ने कहा- "सबके एक साथ समान रूप से खून बह रहा है, अतः यह कोई व्याधि नहीं, अपितु दैवी प्रकोप लगता है।"

उन किशोरों को सांत्वना भरे शब्दों में पूछा गया कि यह सब कैसे हुआ। उनमें से एक किशोर ने रोते-रोते सारी हकीकत बताई। उसने कहा- "ये लोग प्रतिदिन इसी प्रकार उन मुनिराज को सताते हैं। परन्तु मुनिराज तो चोट खाकर भी चुपचाप खड़े रहते हैं। मैं क्या करूँ मुझे भी साथ में पकड़कर ले जाते हैं। बुरी संगति का फल मुझे भी भोगना पड़ रहा है।"

वहाँ उपस्थित लोगों को सारी बात समझ में आ गई। उन सभी किशोरों को तालाब की पाल पर ले जाया गया। किशोरों के साथ-साथ गाँव के लोग भी तालाब की पाल के निकट उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ बोधा मुनि ध्यानस्थ खड़े थे। उन्होंने देखा कि मुनि का अंग-प्रत्यंग चोटों से क्षत-विक्षत हो गया है। घोर तपश्चरण के कारण उनके शरीर का रक्त तो सूख चुका है, किन्तु घावों में रुधिर कण चमक रहे हैं। सभी ग्रामवासी उन उद्दण्ड एवं निर्दय किशोरों की ओर घृणापूर्ण दृष्टि से देखने लगे।

प्रकोपग्रस्त किशोरों के माता-पिता ने बोधा मुनि के चरणों में नमन किया। वे मुनि के समक्ष अपना सिर झुकाकर अपने पुत्रों को क्षमा कर देने का निवेदन करने लगे। बोधा मुनि ध्यान मुद्रा में निश्चल खड़े थे। उनके मुखमण्डल पर प्रशांत महासागर के समान शान्ति का अखण्ड साम्राज्य था।

स्थिति देखकर एक वयोवृद्ध ग्रामीण ने सुझाव दिया- "ये तो क्षमामूर्ति हैं। इनके लिए उपकारी और अपकारी दोनों समान हैं। ये मन से भी किसी का बुरा नहीं सोच सकते। यह तो इनकी उपासिका किसी दिव्य शक्ति का प्रकोप है। मुनिराज के चरणों में वन्दन कीजिये। उनके चरणों की धूलि को छोकरों के मुख, मस्तक व तन पर छिड़किए तथा नमस्कार मंत्र का जाप कीजिए। जल्दी करो, मेरा विश्वास है कि अभी ये सब पूर्ण स्वस्थ हो जाएँगे।"

ग्रामवृद्ध के कहे अनुसार करने से उन सबका रक्त प्रवाह रुक गया। किशोरों के माता-पिता और सभी ग्रामवासियों ने राहत की साँस ली। सबने उन महामुनि के चरणों में अपना मस्तक रख अपने भाल पर उनकी चरणरज लगाई।

बोधा मुनि की उत्तम क्षमा से प्रभावित होकर सब लोग उन्हें खिम ऋषि अर्थात् क्षमा ऋषि कहने लग गये। उसके बाद खिम ऋषि से प्रभावित उन

किशोरों ने बहुत सारा धन इकट्ठा किया और उसे ले जाकर चरणों में रख दिया। किन्तु धन-दौलत के त्यागी उन महर्षि ने उस धन की ओर आँख तक उठाकर नहीं देखा। इससे वे किशोर, उनके माता-पिता और ग्रामवासी बहुत प्रभावित हुए। उन किशोरों ने मन ही मन क्षमा, त्याग, अनुशासन और सेवा का संकल्प किया। अन्ततोगत्वा वह धनराशि जीवदया और मानवसेवा के कार्यों में व्यय की गई।

तप का सार क्षमा है और क्षमा से ही साधुता गौरवान्वित होती है। वास्तव में खिम ऋषि एक सच्चे तपस्वी मुनिराज थे।

-सम्पादन व प्रस्तुति : डॉ. दिलीप धींग

(जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-3 में उल्लिखित घटना पर आधारित)

प्रश्नः-

1. बोधा को विरक्ति कैसे हुई?
2. बोधा अपना जीवन निर्वाह कैसे करता था?
3. बोधा मुनि को सिद्धियाँ किस प्रकार प्राप्त हुईं?
4. क्षमा, समता और सहनशक्ति में अन्तर बताइये?
5. दैवी प्रकोप से आप क्या समझते हैं?
6. अर्थ लिखिए- मरघट, कन्दरा, अडोल, प्रतीकार, व्याधि, सेंर, ढेला।
7. "क्षमा से ही साधुता गौरवान्वित होती है।"- समझाइये।

बाल-स्तम्भ [अगस्त-2010] का परिणाम

जिनवाणी के अगस्त-2010 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'समझदार बहू' कहानी के प्रश्नों के उत्तर 33 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए, उनमें से प्रतियोगिता के विजेता इस प्रकार हैं। पूर्णांक 20 में से दिये गये हैं-

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-250/-	श्वेता आंचलिया-नरडाणा	20
द्वितीय पुरस्कार-200/-	मीनाक्षी छाजेड़-समदड़ी	18.75
तृतीय पुरस्कार- 150/-	मोहित नाहटा-नागौर	18.50
सान्त्वना पुरस्कार- 100/-	दीप्ति जैन-कोटा	18.25
	मेघना जैन-जोधपुर	18.25
	सुदर्शन जैन-गंगाशहर	18.25
	गर्व लुंकड़-कोटा	18.25
	सुनयना जैन-बोरावड़	18.25

विशिष्ट प्रश्नोत्तर

दशवैकालिक सूत्र से पायें तात्त्विक बोध (9)

प्रश्न 9. दशवैकालिक में वर्णित पाप-कर्म-बंध के कौन-कौन से कारण हैं?

उत्तर : 1. दशवैकालिक सूत्र अध्ययन 4, गाथा 1 से 6 में निरूपित है कि अयतनापूर्वक गमन करने से, खड़ा रहने से, बैठने से, सोने से, भोजन करने से और बोलने से त्रस एवं स्थावर की हिंसा होती है, जो कटु फल दायक है। इससे यह बात ध्यान में आती है कि ये सब कर्म-बंध, प्रमाद के कारण से हैं।

अतः प्रमाद के निमित्त हों तो ही प्रमाद आये-यह कोई नियम नहीं है। जो एक बार प्रमाद में खो गया वह लंबे समय तक प्रमाद में रह सकता है, जैसे- निद्राधीन व्यक्ति। जब तक वह सोया रहता है तब तक वह प्रमाद में ही रहता है, क्योंकि निद्रा स्वयं प्रमाद है। इससे यह बात सिद्ध हुई कि शरीर जितने आराम में रहता है- उतना अधिक व्यक्ति प्रमाद से घिर जाता है। उसे चलने से खड़े रहने में, खड़े रहने से बैठने में, बैठने से बोलने में, बोलने से खाने में, खाने से भी जीव को सोने में अधिक आराम मिलता है। अतः उत्तरोत्तर प्रमाद की कालावधि बढ़ सकती है और विराधना भी अधिक हो सकती है। वास्तव में प्रमाद से ही अयतना, और अयतना से जीव कटुक पाप-कर्मों का बंध करता है।

2. पंचम अध्ययन द्वितीय उद्देशक, गाथा 32 में बताया है कि अकेला गोचरी गया हुआ साधु, सरस आहार प्राप्त करके इस लोभ से छिपा लेता है कि मुझे मिला हुआ यह सरस आहार गुरु को दिखाया गया तो वे स्वयं ले लें और मुझे न दें, इस भावना से केवल अपना पेट भरने में लगा हुआ स्वाद लोलुपी साधु बहुत पाप करता है।

3. पाँचवा अध्ययन, द्वितीय उद्देशक, गाथा 35, में कहा गया है कि पूजा का अर्थी, यश-कीर्ति पाने का अभिलाषी तथा मान-सम्मान

की कामना करने वाला साधु बहुत पाप-कर्मों का उपार्जन करता है और माया शल्य का आचरण करता है। आगमकारों ने दो प्रकार की माया की चार प्रवृत्ति बताई है- (1) भिक्षा प्राप्त सरस आहार को गुरु से छिपाकर स्वयं सेवन करने की प्रवृत्ति। (2) सरस-श्रेष्ठ आहार को एकांत में सेवन करके उपाश्रय में नीरस आहार लाना। दोनों में से प्रथम प्रकार की प्रवृत्ति वाला साधु निजी स्वार्थ को प्रमुखता देकर बहुत पाप-कर्म उपार्जित करता है। वह सदैव नीरस आहार से असंतुष्ट रहता है एवं मोक्ष से दूर हो जाता है। दूसरे प्रकार की प्रवृत्ति वाला साधु बहुत मायाचार करता है। वह प्रशंसा और प्रसिद्धि पाने की दृष्टि से ऐसा करता है। ताकि वे उसे आत्मार्थी, संतोषी, नीरस आहारी, रूक्ष-जीवी समझें। ऐसे साधु की मनोवृत्ति का स्पष्ट चित्रण करते हुए-शास्त्रकार कहते हैः- वह पूजा, सत्कार पाने का इच्छुक यशोलिप्सु एवं सम्मान-कामना से प्रेरित हो, तीव्र माया शल्य का सेवन करता है। जिसके फलस्वरूप अनेक पाप-कर्मों का बंध कर लेता है।

4. छठेह अध्ययन की गाथा 65 में बताया है, कि विभूषा के निमित्त से साधु चिकने कर्म बाँधता है। जिसके कारण वह दुष्तर संसार-सागर में जा पड़ता है। विभूषा का त्याग साधक के लिए नितान्त आवश्यक है। क्योंकि विभूषा करने से अनेक हानियाँ होती हैः- (1) विभूषा से देह-भाव बढ़ता है। जिससे शरीर पर ममता भाव बढ़ता है। (2) अहर्निश शरीर-सज्जा पर ध्यान रहने से चित्त अशुद्ध हो जाता है। (3) विभूषा के लिए अनेक आरम्भ-समारम्भ युक्त साधनों का उपयोग करना, हिंसानुप्राणित होने से वह असंयमवर्धक है, सावद्य बहुल है। (4) शरीर पर अत्याधिक मोह एवं आसक्ति होने से विभूषा चिकने कर्म-बंधन का कारण है।

5. सप्तम अध्ययन, गाथा 5 में निरूपित है कि जो मनुष्य सत्य दिखाने वाली असत्य वस्तु का आश्रय लेकर बोलता है उससे भी वह पाप से स्पृष्ट होता है। आगे गाथा 11 में बताया है कि जो भाषा कठोर हो तथा बहुत प्राणियों का उपघात करने वाली हो, वह सत्य होने पर भी

बोलने योग्य नहीं है। क्योंकि ऐसी भाषा से पाप-कर्मों का बंध होता है।

6. अष्टम अध्ययन- गाथा 37 में बताया है कि क्रोध-मान-माया और लोभ ये चारों पाप को बढ़ाने वाले हैं। ये चारों आध्यात्मिक दोषों के मूल हैं। इनसे राग-द्वेष का घनिष्ठ संबंध है- जिससे आत्म-गुणों की हानि होती है और पाप-कर्मों की वृद्धि होती है। यहाँ तो सीधा पाप-कर्म-बंध मूल में ही समाया हुआ है- साथ ही इस पूरे आगम में जिन-जिन कार्यों का, भाषणों का, चिंतनों का निषेध है- उनके सेवन से पाप-कर्म बंध होता है। जैसे तीसरे अध्ययन वाले किसी भी अनाचार-सेवन से। (क्रमशः)

जैन इतिहास में आचार्य हस्ती की सूक्तियाँ

संकलन- श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. इतिहास अतीत के अवलोकन का चक्षु है।
2. जिसे अपने इतिहास का ज्ञान नहीं, उसे एक प्रकार से चक्षुविहीन कहा जा सकता है।
3. सम्यक् विचार और सम्यक् आचार से रागादि दोषों को जीतने का मार्ग ही जैन धर्म है।
4. जैन धर्म किसी जाति या देश विशेष का नहीं, वह तो मानव के लिए शुद्ध स्वरूप की प्राप्ति का मार्ग है।
5. यह मानव की दुर्बलता है कि वह प्रायः भोग एवं भोग्य सामग्री की ओर सहज ही आकृष्ट हो जाता है।
6. सम्यक् विचार और आचार रूप धर्म हृदय की वस्तु है।
7. धर्म एवं धार्मिक इतिहास में मुख्यतः त्याग-तप की बात होती है।
8. धार्मिक मानवों का इतिहास ही धर्म का इतिहास है।
9. जैन इतिहास बहुत गहरी सुदृढ़ नींव पर खड़ा है।
10. तीर्थंकर स्वकल्याण के साथ-साथ परकल्याण की विशिष्ट योग्यता रखते हैं।

अध्यक्ष : सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल

61-63, डॉ. राधाकृष्णन मार्ग, मैलापुर, चेन्नई-600004

महावीर-निर्वाण

प्रभु ऐसा अनुपम ज्ञान दो

श्री मोहन कोठारी 'विनर'

सुख साता उपजे हर घट में, प्रभु ऐसा अनुपम ज्ञान दो,
सद्बुद्धि प्रकटे हर जन में, प्रभु ऐसा पावन ध्यान दो।
सुख साता उपजे हर घट में....... ||टेर ||

क्रोध, कषाय नहीं आवे मन में, विषयों से हम दूर रहें,
जैन धर्म पर रहे आस्था, प्रभु भक्ति में चूर रहें।
त्यागमय हो सबका जीवन, ऐसी नव पहचान दो,
सुख साता उपजे हर घट में....... ||1 ||

बैर भाव नहीं आवे मन में, सब जीवों से प्रेम रहे,
सम भावों से जीएं ज़िन्दगी, दृष्टि सबकी नेक रहे।
संघ, समाज में बढ़े प्रतिष्ठा, ऐसा नव वरदान दो,
सुख साता उपजे हर घट में....... ||2 ||

न्याय, नीति से चलें सदा हम, सद्गुण का भंडार रहे,
'सत्य', 'अहिंसा' को अपना कर, सदा सुखी संसार रहे।
जीवन सार्थक बने हमारा, ऐसा नव उत्थान दो,
सुख साता उपजे हर घट में....... ||3 ||

दीन, दुःखी को गले लगाएँ, अनुकम्पा घट में धारें,
रस लोलुपता को त्यागें हम, अपने मन को हम मारें,
पाएं मोक्ष की पावन धरती, ऐसे मन अरमान दो।
सुख साता उपजे हर घट में....... ||4 ||

धर्म साधना होवे निशदिन, प्रतिपल प्रभु का ध्यान रहे,
धन-वैभव पाकर के मन में, न कोई अभिमान रहे।
धर्म भावना बढ़े निरन्तर, ऐसा मन अनुराग दो,
सुख साता उपजे हर घट में....... ||5 ||

-जनता साड़ी सेण्टर, स्टेशन रोड़, दुर्ग-491001 (छत्तीसगढ़)

दीपावली

सफाई एवं सजावट में विवेक

श्री सुरेशचन्द्र धींग

1. अपने घर और व्यावसायिक प्रतिष्ठान को सजाने के लिए मछली-घर अथवा जलजीवशाला (एक्वेरियम) का उपयोग कभी नहीं करें। जलजीवशाला मछलियों और जलीय जीवों का पिंजरा होती है। इसमें ये जलीय जन्तु प्राकृतिक तथा स्वतंत्र जीवन नहीं जी पाते हैं। इनके भोजन की किस्म, मात्रा और समय में बदलाव हो जाने से ये जीव बीमार पड़ जाते हैं। इस तरह जलजीवशाला में कैद मछलियाँ और जीव-जन्तु जल्दी मर जाते हैं। इसके अलावा इन जीवों के लिए बाजार में उपलब्ध तैयार भोजन प्रायः मांसाहार होता है। अहिंसा, करुणा और आजादी में विश्वास रखने वालों को ऐसी सजावट से दूर ही रहना चाहिये। कुछ लोग वास्तु के नाम पर भी घर, दुकान या कार्यालय के निर्दिष्ट कोने या दिशा में ऐसी जलजीवशालाएँ लगा देते हैं। लेकिन ऐसी बातों का कोई तर्कसम्मत आधार नहीं है। दया-दान और जप-तप से सब प्रकार के अशुभ टल जाते हैं अथवा अशुभ शुभ में परिवर्तित हो जाते हैं।
2. तोते तथा अन्य सुन्दर पक्षियों को पालना भी ठीक नहीं है। पिंजरे में बन्द पंछी अपनी आजादी का आनन्द और उड़ने की क्षमता खो देते हैं।
3. घर/दफ्तर की सजावट में उन चीजों का उपयोग नहीं करें, जिन्हें पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं को मारकर प्राप्त किया जाता है।
4. घर को पहले से ही साफ-सुथरा और व्यवस्थित रखें, जिससे जीव-जन्तु नहीं उत्पन्न हो। जीवदया, यतना,साधना, स्वाध्याय, पढ़ाई आदि के लिए स्वच्छता आवश्यक है।
5. घर और दुकान पर होने वाले चूहों, काकरोच आदि को विष आदि से नहीं मारें। ऐसे जीवों को अहिंसक विधियों से विवेकपूर्वक दूर करें।
6. अतिथि कक्ष में जलपान मेज (टी टेबल) पर कोई न कोई धार्मिक, आध्यात्मिक, शिक्षाप्रद पत्रिका या पुस्तक अवश्य रखें।
7. बाहरी सजावट व स्वच्छता के साथ मन को भी हमेशा प्रसन्न, प्रेमपूर्ण और सजा-सँवरा रखें। अपने घर आए अतिथि और आगन्तुक का अहोभाव से सत्कार करें।

-बम्बोरा- 313706, उदयपुर (राज.)

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. धर्मचन्द जैन

मोक्ष मार्ग प्रवचन (भाग 1 एवं 2)- श्री उदयमुनि जी, ***प्रकाशक***- भारत जारोली, जारोली भवन, नीमच-458411 (म.प्र.), फोन नं. 07423-220866, 93010-38314 अन्य प्राप्ति स्थान- श्री श्रीचन्द जैन, दिल्ली-011-27120001, श्री दिनेश जैन, चाँदनी चौक, दिल्ली-011-27604168 आदि। ***पृष्ठ भाग-1***- पृष्ठ 36+800, ***भाग-2,*** पृष्ठ 40, ***मूल्य*** 700 रुपये मात्र, ***सन्*** - 2008 (द्वितीय संस्करण)

विधिवेत्ता एवं स्वाध्यायी श्री उदयलाल जी जारोली से जैन मुनि बने श्री उदयमुनि जी के दिल्ली चातुर्मासों के व्याख्यानों का संकलन पहले अलग-अलग सात खण्डों में प्रकाशित हुआ था, अब उन सात खण्डों को मोक्षमार्ग प्रवचन के प्रथम भाग में संयोजित किया गया है तथा द्वितीय भाग में विभिन्न विषयों पर जिज्ञासा समाधान दिए गए हैं। प्रथम भाग के प्रथमखण्ड में सम्यग्दर्शन, द्वितीय खण्ड में स्वपर का भेद-विज्ञान, तृतीय खण्ड में पर्युषण, चतुर्थ खण्ड में आत्मा के कर्तृत्व-भोक्तृत्व, पंचम खण्ड में कर्मों के आस्रव और संवर, षष्ठ खण्ड में पररुचि से स्वरुचि की ओर तथा सप्तम खण्ड में ध्यानादि से मोक्ष विषयक प्रवचन संकलित हैं। प्रवचनों का लेखन स्वयं उदयमुनि जी ने किया है। उनकी अपनी शैली एवं नयदृष्टि है। विषय का विवेचन वे बखूबी करते हैं। वे प्रवचन में करारी चोट करते हैं तथा तत्त्व को निश्चय से हृदयंगम कर राग से विराग की ओर बढ़ने की प्रेरणा करते हैं।

संवाद के लिए प्रश्न

निम्नाङ्कित प्रश्न का उत्तर सम्पादक के पते पर 10 नवम्बर के पूर्व प्रेषित करें।

प्रश्नः- कर्म सिद्धान्त के अनुसार पुण्य से सुख एवं पापोदय से दुःख प्राप्त होता है। भाग्य से अधिक और समय से पहले कुछ नहीं मिलता है। फिर पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है?

-अरविन्द कुमार सुमेरमल गाँधी, रत्नागिरी (महा.)

श्राविका-मण्डल

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (10)

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा संचालित)

आचार्य श्री हस्ती जन्म-शताब्दी (अध्यात्म-चेतना वर्ष) के उपलक्ष्य में अ. भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.) से प्रकाशित पुस्तक **जैन धर्म का मौलिक इतिहास (भाग एक-तीर्थंकर खण्ड)** के आधार पर मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता की यह दसवीं किश्त है। प्रतियोगी के उत्तर लाइनदार पृष्ठ पर मय अपने नाम, पते (अंग्रेजी में), दूरभाष न. सहित Smt. Vajainti Ji Mehta, C/o Shri Anil Ji Mehta, 91, 5th main, 5th A cross, III Block, Tayagraj Nagar, Banglore-560028 (Karnataka) Mobile No. 09341552565 के पते पर 10 नवम्बर 2010 तक मिल जाने चाहिए। (प्रश्न अगले पृष्ठ पर हैं।)

सर्वश्रेष्ठ तीन प्रतियोगियों को क्रमशः राशि 500, 300, 200 तथा 100-100 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार दिए जायेंगे। इसके अतिरिक्त शताब्दी वर्ष के अन्त में 12 माह तक प्रतियोगिता में भाग लेने वाले और सर्वश्रेष्ठ रहने वाले प्रतियोगी को विशेष पुरस्कार दिए जायेंगे। - *मधु सुराणा, अध्यक्ष*

मासिक प्रश्नमंच प्रतियोगिता (8) का परिणाम

जिनवाणी अगस्त, 2010 में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर 314 व्यक्तियों से प्राप्त हुए। 25 अंक प्राप्त विजेताओं का चयन लॉटरी द्वारा किया गया है।

प्रथम पुरस्कार- श्रीमती दीपमाला नितीन जी सिंघवी, पाली-मारवाड़ (राज.)

द्वितीय पुरस्कार- श्री नरेन्द्र शाह झंवर, बेलगाँव (कर्नाटक)

तृतीय पुरस्कार- श्री प्रसन्न कोठारी, जोधपुर (राज.)

सान्त्वना पुरस्कार-

1. श्रीमती कमला लेखराज जी सेठिया, मसूदा-अजमेर (राज.)
2. श्रीमती पुष्पा जी जैन, जयपुर (राज.)
3. श्रीमती संगीता रविन्द्र जी छाजेड़, चालीसगांव (महा.)
4. श्रीमती सरला ललित कुमार जी गोलेछा, ब्यावर (राज.)
5. सुश्री हेमा जी बाघमार, सिंकदराबाद (आ.प्र.)

(शेष परिणाम पृष्ठ 84 पर)

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-1

(पृष्ठ 576 से 670 तक से प्रश्न)

नीचे दिये गये रिक्त स्थानों को तीन-तीन अक्षरों से भरकर पूर्ण करें-

1.	नौ				ण
2.	रो				री
3.	य				न
4.	प्रे				क
5.	ऋ				त्त
6.	सु				ला
7.	क्ष				द
8.	ऋ				का
9.	छ				श
10.	मा				र
11.	जि				त
12.	अ				द्ध
13.	नि				व
14.	वि				रि
15.	कि				ज
16.	क				का
17.	दि				क
18.	अ				स
19.	ता				म
20.	घ				ना
21.	सु				व्र
22.	श				त
23.	पु				ल
24.	च				चा
25.	भा				र

अन्य 25 अंक प्राप्तकर्ता–Aarti Rajendrakumarji Mutha-Amravati(M.H), Abhilasha Hirawat-Mumbai, Anil Kumar Jain-Kota, Anila Bhandari-Beawar, Anita Atul Munot-Ichalkaranji, Anita Jain-Jaipur, Anju Jargad-Jaipur, Anu Anil Jain-Ludhiana, Aruna.P.Baid-Amravati, (M.H), Babita Sancheti-Alwar, Babulal Jain-Jaipur, Basantibai Parakh-Durg, chattisgarh, Beena Jain-Gangapur City, Bharati sunilji surpuriya-Ichalkaranji, Bhavesh buddhiprakash jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Bhavika Shah-Belgaum, Bimla Kumari Heerawat-Jaipur, Buddhi Prakash Jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Chandan Mal Palrecha-Jodhpur, Chandanbala Chordia-Chennai, Chandani Jain-Indore, Chetna Bothra-Mumbai, Chhaya.M. Mutha-Satara, Chirag Jain-Gangapur City, Darshika Kanwarlalji Tatia-Jalgaon, Dharmesh Punamiya jain-Pali, Dilroop chand Bhandari-Jodhpur, Dinesh Buddhiprakash Jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Divya Daga-Jaipur, Ghewarchand Chajjed-Bellary, Gunmala Jain-Chittorgarh, Hajarimal Jain-Durg, Hans Raj Mohnot-Jaipur, Hansa Devi Surana-Bikaner, Heerabai Rameshchand Karnawat-Ahemadnagar, Hem Raj Surana-Jaipur, Hemant Manoharlal Nahar-Chittorgarh, Icheraj Banthiya-Nagapattnam (T.N.), Indra Kothari-Dudu, Jaipur, Indu Kamleshji Jain-Mumbai, Janesh Surana-Pali, Jaya Bhandari-Beawar, Jaymala Kankariya-Pali, Johari Mal Chajjed-Jodhpur, Jyoti Gandhi-Ichalkaranji, Kamala Modi-Jodhpur, Kamla Lodha-Jaipur, Kamla Surana-Jodhpur, Kamla Surana-Pali, Kamladevi Lunkad-Jodhpur, Kamlesh Kumar Jain-Bundi, Kanak Jain-Delhi, Kanchanbai Basantilal Dangi-Jalgaon, Kanchanbai Lodha-Nasik, Kanhaiyalal Jain-Bhilwara, Kanta Betala-Jaipur, Kavita Mehta-Shimoga, Kiran Kumbhat-Jodhpur, Kiran Prakash chand Kothari-Bodwad (M.H), Kiran.V.Jain-Hyderabad, Kiran Tated-Dewaj (M.P), Komal Ankur Kothari-Baroda Gujarat, Komal Jain-Dhanari Kallan jodhpur, Kumkum Jain-sawaimadhopur, Kunal Jain-Chattisgarh, Kusum Singhvi-Jodhpur, Lad Hirawat-Mumbai, Lalita Ganeshchand Surana-Solapur, Laxmi Sancheti-Raichur, Leelabai.A. Kothari-Ahemadnagar, Lilabai Sancheti-Raichur, Madanlal.S.Sancheti-Hydrabad, Madhubala Jivankumarji Ostwal-Nasik, Madhubala Pramodji bohra-Ichalkaranji, Mamta Chajjer-Samdari (Barmer), Mamta Kripal chand Jain-Sawaimadhopur, Manila Parakh-Jaipur, Manisha Ravindra Bhandari-Ichalkaranji, Manju Bhandari-Beawar, Manju Choudhary-Pipar City, Manju Dilip Jain-Mumbai, Manju Jain-Hindaun City, Manju Kanstiya-Kolkata, Manju Palrecha-Jodhpur, Manju Sandeep Mutha-Ichalkaranji, Manjula vasanth kumar Jain-Mumbai, Manjulata Jamer-Jaipur, Manoj Kothari-Udaipur, Mansi Jain-Nagpur, Maya Alijar-Secundrabad, Meena Chordia-Chennai, Meena Jain-Sawaimadhopur, Meena Rajkumarji Nahar-Ichalkaranji, Meena Vijay Bora-Mumbai, Milap Parasmal lunawat-Ahmedabad, Mohanlal Jain-Ajmer, Mohanlal Motilal Jogad-Pilkhod, Jalgaon, Monali Mishrilal Pipada-Ichalkaranji, Monika Deshlehra-Secundrabad, Monika Surana-Beawar, Mridula Kumbhat-Jodhpur, Nainchand Bafna-Jodhpur, Naintara Ratanlal Bafna-Jalgaon, Narendra Bamb-Mumbai, Naresh Kothari-Dudu, Jaipur, Neelam Chiper-Jaipur, Neelu Jain-Ludhiana, Neeta

Singhvi-Jodhpur, Nilam Kankaria-Nagaur, Nilima Yograjji Chopda-Ichalkaranji, Nirmala Kothari-Dudu, Jaipur, Nirmala Rajendraji Bora-Ichalkaranji, Nirmala Vijayji Gundecha-Ichalkaranji, Nisha Jain-Aligarh, Tonk, Nisha Lunkad-Kota, Nutan Ajitji Bhandari-Ichalkaranji, Padam chand munot-Jaipur, Padma.R.Bohra-Raichur, Parasmal.D.Baghmar-Balotra, Barmer, Pista Golecha-Jaipur, Pooja Jain-Alwar, Pooja Nitin Bora-Ichalkaranji, Prabha Gulecha-Bangalore, Prakash Chand Nahar-Kawardha(C.G), Prakashbai Bhurawat-Bhandara, Pramila Babulalji Pokhran-Dhulia, Pramila Bohra-Jaitaran, Pramila Kankariya-Jodhpur, Pramila Kothari-Jodhpur, Pramila mehta-Dudu, Jaipur, Pramila Sajjanrajsa Mehta-Bangalore, Praveen Chand Jain-Karauli, Pravina Kothari-Jaipur, Preeti Khincha-Jaipur, Preeti Loonker-Jodhpur, Prem Chand Chaplod-Jaipur, Prem Jain-Alwar, Premlata Lodha-Jaipur, Premlathabai Mutha-Raichur, Prerit Jain-Jaipur, Priti Jain-Bharatpur, Rajasthan, Priyanka Bagmar-Merta City, Priyanka Jain-Jaipur, Priyanka Kothari-Dudu, Jaipur, Priyanka Mukesh Chopda-Ichalkaranji, Pukhraj Sethiya-Ajmer, Pushpa Hastimal Golecha-Beawar, Pushpa Navlakha-Jaipur, Pushpa Prakashchand Kankariya-Raichur, Pushpabai Prakashchand Bafna-Chennai, Pushparani Dungariya, R.chandra Bothra Chennai, Rajesh BudhiPrakash Jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Rajmal Jain Pichholiya-Gangapur, Bhilwara, Rajul Jain-Sawaimadhopur, Rajul Rameshchandji Kothari-Dhulia, Rakesh Kankaria-Jodhpur, Ranulal kochar-Nasik, Reema Jain-Ludhiana , Rekha Bhimsingh Jain-Kota , Rekha Daga-Indore, Renu Jain-Sawaimadhopur, Renumal Jain-Jodhpur, Rishabh Jain-Bundi, Ritu giriya -Secundrabad, Ruchika Lunawat-Jodhpur, Sadhana Gugale-Ichalkaranji, SajjanDevi Tated-Secundrabad, Sangeeta Khabiya-Mysore, Sangeetha Baid-Chennai, Sangita Sanjaykumar Mugdiya-Bhusawal, Jalgaon, Sangita.A.Singavi-Nasik, Sanju Daga-Jaipur, Sanju Lata Jain-Jaipur, Santra Jain-Sawaimadhopur, Sapna.R.Jain-Amravati, (M.H), Sarika Srikant Bhandari-Ichalkaranji, Sarla Shantilalji kakariya-Jalgaon, Saroj Khabiya-Mysore, Saroj Nahar-Delhi, Saroj Parasmal Runwal-Dhulia, Seema Ajinder Jain-Ludhiana , Seema Dhing-Udaipur, Seema Dinesh kumarji Ostwal-Jalgaon, Seema Jain-Aligarh, Tonk, Shakuntala Bohra-Secundrabad, Shakuntala Hansraj Bohara-Ichalkaranji, Shakuntala Katariya-Jalgaon, Shanta Chamanji Pitaliya-Amravati, (M.H), Shanti BuddhiprakashJain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Shantilal Ostwal-Jodhpur, Sharda Bagmar-Merta City, Sheela Surana-Jaipur, Shelly Kumbhat-Jodhpur, Shilpa Gandhi-Jodhpur, Shobha Nandlalji Gugale-Ichalkaranji, Shriya Mehta-Shimoga, Shrota Jain-Hindaun City, Siddhi Bafna-Jodhpur, Smita Nilesh Muthiyan-Ichalkaranji, Snehlata Pravinji Shah-Belgaum, Sonia Kothari-Chhinwara (M.P), Subhash chand Mohanji Dhadiwal-Mumbai, Sudha Daga-Bikaner, Sudha Pankajji Jain-Indore, Sudha Sancheti-Ajmer, Sugan Chand Chhajer-Jodhpur, Suganbai Manakchandji Sand-Jalgaon, Suman Daga-Bhopal, Sunil Jain-Mysore, Sunita Doshi-Beawar, Sunita Kankariya-Ahmedabad,

Sunita Mehta-Jodhpur, Sunita Navlakha-Kota , Sunitha Y Singhvi-Chennai, Suraj Bohra-Jodhpur, Surekha Rajeevji Choradia-Jalgaon, Surekha.A.Bhandari-Nasik, Sureshchand Jain-Alwar, Susheela Bhandari-Chennai, Sushila Begani-Bikaner, Sushila Gang-Jodhpur, Sushila Gulecha-Jodhpur, Sushila Hirawat-Jaipur, Sushila Inderchand Ranka-Jalgaon, Sushila Sumatilal Surana-Nasik, Swarnim Salecha-Jodhpur, Sweety Golecha-Beawar, Tara Bafna-Chennai, Trupti Pritam Bora-Ichalkaranji, Upma Choudhary-Ajmer, Urmila Kankariya-Jodhpur, Usha Buddhiprakash Jain-Bhesodamandi, mandsor (M.P), Usha Lunawat-Ajmer, Usha surana-Jaipur, Vandana Punamiya-Pali, Varsha Dosi-Merta City, Vasantha Rajeshji Gugalia-Azamabad (A.P), Vibha Bafna-Jodhpur, Vidya Singhvi-Badnawar, M.P, Vijaimal Mehta-Jodhpur, Vijaya.R.Bagmar-Dharwad, Vikas Bamb-Mumbai, Vimla N Mehta-Jodhpur, Vimlabai khinvasra-Dhulia, Vinod Jain-Jodhpur, Yugal.N. Ranka-Ahmedabad

24.5 अंक प्राप्तकर्ता–Shakuntala Kushalchand Khinvarsa-Jalgaon, Chameli Jain-Durg, chattisgarh, Chandrakala Mehta-Bangalore, Chandrakanta Lunawat-Shimoga, Chot Kanwar Singhvi-Pali, Hemalata Jain-Beawar, Jyoti Bhansali-Bangalore, Kiran Kothari-Jaipur, Leelabai Prakashchand Munot-Ichalkaranji, Madhu Choradia -Jaipur, Munnalal Bhandari-Jodhpur, Nisha Golecha-Dabalpur (M.P), Pragya Bubakia-Indore, Prasan Gang-Mumbai, Ratan Karnawat-Jaipur, Sushila Bhandari-Bangalore, Ugama Doshi-Secundrabad, Usha Praveenji Bardiya-Dhulia, Vimala Bohra-Jaipur, Vimla surana-Jaipur, Vimlabai Gyanchandji Bardia-Jalgaon

24 अंक प्राप्तकर्ता–Angur Bala Jain (Asha Surana)-Sahidabad, Anita Anil Jain-Dhule, Anita Satishchandji Duggar-Dhulia, Anjana Katkani-Dewaj (M.P), Anju Bhandari-Jodhpur, Ashok D Jain-Udaipur, Babulal Katariya-Hyderabad, Chanchal Bai Devada-Bangalore, Chandra Pokhran-Ajmer, Chandralata Mehta-Jaipur, Gulab Nahar-Hospet karnataka, Hemlata Kherada-Bhilwara, Kamla Singhvi-Jaipur, Kanchan Nahata-Beawar, Kuntal Devi Jain-Jaipur, Kusum Pareshji Punamiya-Ichalkaranji, Nirmala Surana-Bikaner, Premlata.v.Gadiya-Pune, Rajkumari Jain-Delhi, Rekha Jain-Aligarh, Tonk, Shakuntala Hinger-Pali, Shashi Prabha Burad-Beawar, Shobabai Sagarmalji Kothari-Dhule, Sunanda Lodha-Dhule, Sunita Dulaj-Jaipur, Sunita Jain-Pipar City, Vimla Raunlal Kochar-Nasik.

23.5 एवं उससे कम अंक प्राप्तकर्ता–Nirmala Heerawat-Jaipur, Pramila Prakash Mehta-Ajmer, Pushpa Golecha-Beawar, Sasi kankaria - Chennai, Shashi Chowdhary-Jodhpur, Chanchal Betala-Rajasthan, Kanti Bai Jain-Sawaimadhopur, Mamta Bhandari-Nagaur, Pinki Jain-Jaipur, Prakash Devi Ranka-Madders, Basanta Madanlal Sanklecha-Dhulia, Shobha Dharamchandji kothari-Dhule, Vaishali Basanti Bhatewara-Dhulia, Aruna katariya-Pali, Pushpa Lunawat-Nagaur, Sangeeta Darda-Jodhpur, Shobha Kawad-Pali, Shobha Rajendrakumar Karnad-Aurangabad, Kamala Singhvi-Bhadgaon, Jalgaon.

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड का परीक्षा परिणाम घोषित

अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा 1 अगस्त 2010 को आयोजित कक्षा 1 से 14 तक की परीक्षा का परिणाम घोषित कर दिया गया है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के नामांक (रोल नं.) एवं अस्थाई वरीयता सूची प्रकाशित की जा रही है। परीक्षा परिणाम की सूची केन्द्राधीक्षकों को प्रेषित कर दी गई है। उत्तीर्ण परीक्षार्थियों के रोल नं. प्रकाशन में यद्यपि सावधानी रखी गई है, तथापि सन्देह होने पर बोर्ड कार्यालय की सूचना को ही प्रमाण माना जाए।

यदि कोई परीक्षार्थी पुनर्मूल्यांकन कराना चाहे तो सादा कागज पर प्रार्थना-पत्र व 25 रूपये का शुल्क M.O. द्वारा शिक्षण बोर्ड कार्यालय में दिनांक 31 अक्टूबर 2010 तक भिजवा सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन-पत्र स्वीकार नहीं किये जायेंगे।

अस्थायी वरीयता सूची

जैन धर्म परिचय (प्रथम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
73927	तनु जैन	महुवा	99.75	प्रथम
71995	सारिका जैन	भटिण्डा	99.5	द्वितीय
74331	सोनाली मेहता	पाली-मारवाड़	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
63421	कोमल तातेड़	बाभुलगाँव	99.75	प्रथम
65665	नीलिमा कोठारी	बेलापुर	99.5	द्वितीय
68940	शीतल पारख	गोविन्द नगर(नासिक)	99.25	तृतीय

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
68190	सुनंदा जैन	गोरेगाँव	99.75	प्रथम
63114	दीपाली जैन	बंगा	99.5	द्वितीय
72752	अक्षय जैन	आदर्शनगर(स.मा.)	99.25	तृतीय

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
58780	राखी सांखला	देवलगाँव माही	99.75	प्रथम
61609	चन्द्रा कानुँगा	सिवाना	99.5	द्वितीय
58686	अनुष्का जैन	पुरानी डीग	99	तृतीय

जैन धर्म चन्द्रिका (पंचम कक्षा)

रोल नं.	विद्यार्थी का नाम	केन्द्र	प्राप्तांक	स्थान
70323	सुनीता सिंघवी	हींगड़घाट	99.75	प्रथम

63204	रोहितकुमार जैन	अलवर	99.5	द्वितीय
58594	रेणुका जैन	जम्मू	99.25	तृतीय

जैन धर्म विशारद (छठी कक्षा)

57116	सोनाली बोथरा	जयपुर	99	प्रथम
75139	विनीत जैन	बजरिया	97.25	द्वितीय
62698	लीलादेवी मरोटी	कोलकाता	96.5	तृतीय

जैन धर्म कोविद (सातवीं कक्षा)

69097	मीनाक्षी मेहता	मदनगंज	99.75	प्रथम
58495	प्रियंका देवी गोगड़	सौंदत्ती	98.5	द्वितीय
63503	मंजुला सोलंकी	पुणे	98.25	तृतीय

जैन धर्म भूषण (आठवीं कक्षा)

62456	सरला बोथरा	चन्द्रपुर	99	प्रथम
73225	विरक्ता विजेता जैन	जगरावा	98.5	द्वितीय
71196	चन्दनबाला कोठारी	तन्दियारपेठ	98	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-पूर्वार्द्ध (नवमीं कक्षा)

74872	रेखा कोठारी	महावीरनगर, जयपुर	98.5	प्रथम
62464	निर्मला भलगट	चन्द्रपुर	97.5	द्वितीय
74957	आरती चौधरी	गोरेगाँव	96.5	तृतीय

जैन सिद्धान्त प्रभाकर-उत्तरार्द्ध (दसवीं कक्षा)

72245	अरुणा सिंघी	नागपुर	94.5	प्रथम
73963	अभिलाषा हीरावत	मुम्बई	91.5	द्वितीय
65564	अंकित जैन	जयपुर	85	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं कक्षा)

72409	सरला रांका	नागपुर	97	प्रथम
57308	कुसुमबाई पुनमीया	इचलकरंजी	95	द्वितीय
62106	आशा दुगड़	न्यू वॉशरमेन पेठ	94	तृतीय

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-उत्तरार्द्ध (बारहवीं कक्षा)

65660	सुनीता पालावत	अलवर	95.5	प्रथम
59613	संतोषबाई सोनगरा	पेरम्बूर	95	द्वितीय
64412	ज्योति मेहता	मदनगंज	94	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री-पूर्वार्द्ध (तेरहवीं कक्षा)

60879	वर्षा सुराणा	घोटी	97	प्रथम
64849	शकुन्तला पींचा	घोटी	96.5	द्वितीय
59615	पदमा डफरिया	पेरम्बूर	94	तृतीय

जैन सिद्धान्त शास्त्री-उत्तरार्द्ध (चौदवीं कक्षा)

57993	किरण बोथरा	वैजापुर	92.5	प्रथम
62082	कौशल्या सिंघवी	M.M.D.A.कॉलोनी	88.5	द्वितीय
65552	ज्याति गादिया	भुसावल	87	तृतीय

उत्तीर्ण परीक्षार्थी

जैन धर्म परिचय (प्रथम)

51293, 51871, 51918, 52478, 52599, 52653, 54661, 55904, 55905, 56163, 56991, 57041, 57051, 57243, 57244, 57246, 57374, 57390, 57433, 57799, 57915, 58004, 58290, 58424, 58429, 58524, 58818, 58819, 58821, 58834, 58857, 58876, 58878, 58891, 59411, 59442, 59506, 59553, 59555, 59564, 59601, 59648, 59649, 59653, 59730, 59737, 60248, 60267, 60272, 60330, 60468, 60635, 60641, 60673, 60675, 60808, 60953, 60983, 60989, 60996, 61114, 61156, 61157, 61175, 61207, 61220, 61226, 61319, 61373, 61461, 61545, 61570, 61590, 61602, 61607, 61723, 61728, 61730, 62275, 62276, 62378, 62380, 62392, 62530, 62567, 62689, 62694, 62704, 62705, 62910, 63035, 63097, 63193, 63199, 63243, 63252, 63400, 63714, 63761, 63902, 63941, 63943, 63966, 63974, 63986, 64002, 64023, 64042, 64051, 64134, 64145, 64199, 64207, 64211, 64219, 64223, 64241, 64264, 64267, 64331, 64485, 64506, 64601, 64736, 64805, 65105, 65107, 65108, 65111, 65112, 65115, 65117, 65183, 65195, 65199, 65217, 65241, 65314, 65321, 65450, 65456, 65459, 65465, 65470, 65670, 65682, 65868, 65967, 65976, 66267, 66296, 66308, 66355, 66363, 66373, 66468, 66482, 66483, 66532, 66613, 66615, 66783, 66893, 66905, 66909, 66911, 66923, 66947, 66998, 66999, 67002, 67019, 67048, 67194, 67230, 67248, 67345, 67435, 67442, 67467, 67515, 67517, 67536, 67537, 67538, 67545, 67547, 67551, 67552, 67553, 67555, 67557, 67558, 67562, 67563, 67565, 67566, 67576, 67586, 67597, 67690, 67691, 67693, 67694, 67697, 67698, 67702, 67703, 67709, 67729, 67732, 67734, 67752, 67754, 67757, 67762, 67813, 67818, 67822, 67872, 67877, 67927, 67984, 68000, 68004, 68038, 68056, 68089, 68156, 68180, 68246, 68267, 68355, 68359, 68384, 68398, 68403, 68472, 68475, 68486, 68527, 68597, 68599, 68620, 68623, 68706, 68898, 68910, 68923, 68924, 68957, 68973, 69011, 69016, 69024, 69027, 69030, 69077, 69116, 69149, 69164, 69167, 69193, 69204, 69263, 69307, 69322, 69382, 69398, 69426, 69431, 69457, 69492, 69608, 69610, 69679, 69683, 69692, 69699, 69783, 69801, 69805, 69807, 69808, 69809, 69810, 69812, 69815, 69869, 69965, 69969, 70016, 70021, 70022, 70041, 70071, 70099, 70127, 70143, 70147, 70149, 70150, 70152, 70167, 70172, 70214, 70233, 70246, 70268, 70311, 70314, 70315, 70316, 70317, 70319, 70320, 70351, 70355, 70365, 70375, 70377, 70378, 70394, 70395, 70396, 70397, 70407, 70415, 70417, 70418, 70419, 70420, 70422, 70433, 70435, 70444, 70447, 70448, 70462, 70463, 70489, 70493, 70554, 70556, 70569, 70576, 70579, 70580, 70619, 70642, 70643, 70644, 70645, 70649, 70652, 70655, 70662, 70664, 70669, 70670, 70671, 70672, 70673, 70674, 70675, 70676, 70677, 70681, 70697, 70705, 70716, 70737, 70740, 70741, 70749, 70757, 70759, 70760, 70763, 70766, 70767, 70768, 70802, 70816, 70818, 70820, 70821, 70822, 70825, 70826, 70858, 70869, 70870, 70872, 70879, 70885, 70888, 70889, 70894, 70895, 70896, 70897, 70908, 70909, 70910, 70923, 70940, 70951, 70952, 70953, 70954, 70955, 70968, 70970, 70998, 71000, 71001, 71003, 71004, 71006, 71007, 71039, 71059, 71064, 71070, 71072, 71073, 71076, 71094, 71108, 71109, 71111, 71138, 71140, 71143, 71144, 71145, 71149, 71152, 71163, 71164, 71165, 71167, 71168, 71171, 71177, 71179, 71180, 71208, 71209, 71210, 71211, 71212, 71213, 71219, 71223, 71224, 71244, 71259, 71260, 71261, 71265, 71290, 71291, 71310, 71312, 71315, 71316, 71317, 71318, 71321, 71327, 71333, 71335, 71336, 71337, 71339, 71340, 71342, 71343, 71345, 71364, 71365, 71400, 71405, 71406, 71407, 71410, 71455, 71456, 71457, 71458, 71459, 71461, 71463, 71464, 71465, 71468, 71474, 71475, 71477, 71482, 71483, 71485,

71486, 71487, 71488, 71501, 71504, 71508, 71509, 71510, 71514, 71515, 71516, 71517, 71518, 71519, 71520, 71521, 71523, 71524, 71525, 71527, 71528, 71529, 71530, 71531, 71536, 71537, 71538, 71539, 71540, 71541, 71542, 71544, 71561, 71562, 71567, 71569, 71579, 71580, 71581, 71583, 71591, 71593, 71595, 71598, 71599, 71600, 71601, 71602, 71603, 71607, 71609, 71612, 71614, 71626, 71627, 71629, 71631, 71632, 71633, 71636, 71640, 71641, 71642, 71645, 71649, 71650, 71652, 71659, 71686, 71687, 71688, 71689, 71690, 71691, 71692, 71693, 71694, 71695, 71696, 71698, 71701, 71702, 71704, 71705, 71706, 71707, 71710, 71715, 71717, 71729, 71731, 71737, 71738, 71739, 71740, 71742, 71743, 71750, 71757, 71764, 71765, 71771, 71778, 71781, 71789, 71793, 71794, 71804, 71805, 71814, 71830, 71831, 71835, 71836, 71839, 71843, 71848, 71850, 71856, 71864, 71869, 71870, 71884, 71885, 71899, 71901, 71902, 71903, 71904, 71905, 71906, 71907, 71908, 71919, 71922, 71929, 71931, 71933, 71934, 71935, 71945, 71964, 71980, 71986, 71989, 71990, 71991, 71995, 71996, 71997, 71998, 71999, 72005, 72021, 72022, 72024, 72033, 72045, 72052, 72060, 72061, 72068, 72071, 72076, 72085, 72086, 72089, 72093, 72094, 72096, 72097, 72098, 72101, 72115, 72117, 72121, 72122, 72124, 72126, 72127, 72128, 72130, 72131, 72132, 72135, 72137, 72138, 72139, 72140, 72141, 72144, 72145, 72147, 72148, 72149, 72150, 72151, 72152, 72153, 72154, 72155, 72157, 72159, 72160, 72163, 72167, 72169, 72171, 72176, 72177, 72178, 72183, 72204, 72205, 72206, 72208, 72214, 72217, 72219, 72221, 72222, 72236, 72237, 72242, 72246, 72251, 72256, 72260, 72263, 72266, 72269, 72271, 72274, 72275, 72276, 72277, 72278, 72280, 72288, 72296, 72298, 72300, 72301, 72320, 72345, 72356, 72357, 72370, 72372, 72374, 72375, 72395, 72396, 72397, 72398, 72399, 72400, 72401, 72402, 72403, 72405, 72411, 72412, 72413, 72414, 72415, 72420, 72421, 72428, 72430, 72435, 72437, 72462, 72463, 72465, 72466, 72467, 72468, 72469, 72470, 72471, 72472, 72473, 72474, 72487, 72496, 72497, 72499, 72500, 72501, 72502, 72503, 72504, 72505, 72506, 72509, 72510, 72511, 72512, 72516, 72519, 72520, 72521, 72522, 72536, 72550, 72552, 72553, 72554, 72556, 72557, 72558, 72559, 72562, 72565, 72568, 72570, 72571, 72573, 72575, 72576, 72577, 72578, 72579, 72580, 72581, 72582, 72583, 72584, 72585, 72586, 72587, 72588, 72590, 72594, 72596, 72597, 72602, 72605, 72607, 72608, 72609, 72610, 72612, 72613, 72616, 72618, 72619, 72621, 72623, 72624, 72625, 72626, 72627, 72630, 72635, 72636, 72638, 72639, 72640, 72641, 72642, 72644, 72645, 72646, 72650, 72651, 72652, 72653, 72654, 72657, 72658, 72659, 72660, 72661, 72662, 72663, 72664, 72668, 72672, 72673, 72674, 72688, 72696, 72697, 72707, 72708, 72710, 72716, 72717, 72720, 72722, 72723, 72726, 72730, 72744, 72745, 72746, 72747, 72748, 72749, 72756, 72764, 72771, 72772, 72773, 72774, 72776, 72777, 72778, 72783, 72784, 72789, 72790, 72793, 72794, 72799, 72800, 72801, 72802, 72804, 72805, 72820, 72822, 72828, 72829, 72831, 72832, 72837, 72838, 72840, 72841, 72850, 72853, 72854, 72855, 72856, 72858, 72863, 72865, 72866, 72867, 72869, 72870, 72871, 72872, 72873, 72874, 72875, 72884, 72886, 72888, 72889, 72892, 72895, 72899, 72904, 72905, 72906, 72907, 72909, 72910, 72911, 72912, 72913, 72921, 72925, 72926, 72927, 72932, 72933, 72934, 72935, 72936, 72937, 72939, 72940, 72942, 72945, 72946, 72947, 72949, 72951, 72952, 72953, 72955, 72956, 72957, 72960, 72973, 72975, 72979, 72980, 72981, 72982, 72983, 72986, 72987, 72988, 72989, 72990, 72992, 72996, 72999, 73000, 73001, 73018, 73019, 73020, 73022, 73023, 73024, 73035, 73036, 73037, 73038, 73039, 73045, 73055, 73057, 73064, 73069, 73084, 73087, 73088, 73091, 73097, 73103, 73110, 73111, 73114, 73115, 73117, 73119, 73124, 73130, 73131, 73132, 73133, 73137, 73138, 73140, 73143, 73144, 73154, 73157, 73159, 73160, 73163, 73164, 73166, 73169, 73170, 73171, 73172, 73184, 73186, 73187, 73188, 73192, 73193, 73198, 73204, 73232, 73233, 73234, 73237, 73238, 73240, 73241, 73243, 73244, 73246, 73266, 73268, 73269, 73270, 73272, 73277, 73282, 73283, 73284, 73285, 73286, 73292, 73293, 73295, 73300, 73301, 73302, 73306, 73307, 73330, 73333, 73336, 73337, 73338, 73340, 73343, 73346, 73347, 73349, 73351, 73356, 73357, 73358, 73359, 73360, 73361, 73362, 73365, 73367, 73368, 73369, 73371, 73372, 73373, 73374, 73375, 73376, 73381, 73397, 73399, 73407,

73408, 73409, 73410, 73412, 73416, 73425, 73430, 73432, 73433, 73442, 73446, 73447, 73448, 73449, 73450, 73451, 73452, 73454, 73457, 73459, 73470, 73475, 73476, 73478, 73479, 73481, 73483, 73485, 73486, 73487, 73490, 73492, 73493, 73496, 73497, 73518, 73520, 73521, 73527, 73534, 73535, 73536, 73537, 73540, 73541, 73542, 73543, 73544, 73545, 73547, 73549, 73550, 73551, 73552, 73553, 73554, 73555, 73556, 73559, 73560, 73561, 73566, 73567, 73570, 73572, 73574, 73575, 73576, 73580, 73583, 73585, 73589, 73592, 73596, 73597, 73599, 73600, 73601, 73603, 73606, 73607, 73609, 73610, 73614, 73615, 73619, 73628, 73629, 73631, 73635, 73636, 73637, 73638, 73639, 73641, 73644, 73645, 73648, 73649, 73650, 73652, 73653, 73655, 73665, 73667, 73668, 73669, 73672, 73676, 73677, 73678, 73679, 73680, 73682, 73685, 73686, 73689, 73690, 73693, 73696, 73698, 73700, 73702, 73720, 73721, 73722, 73723, 73724, 73725, 73726, 73727, 73728, 73736, 73737, 73739, 73740, 73741, 73754, 73755, 73756, 73757, 73759, 73760, 73761, 73762, 73763, 73764, 73767, 73769, 73770, 73782, 73786, 73787, 73788, 73789, 73790, 73801, 73802, 73804, 73805, 73806, 73808, 73809, 73810, 73811, 73812, 73814, 73815, 73816, 73818, 73819, 73820, 73821, 73822, 73823, 73824, 73825, 73826, 73827, 73829, 73830, 73831, 73833, 73841, 73843, 73847, 73863, 73869, 73871, 73872, 73874, 73875, 73876, 73883, 73886, 73887, 73888, 73890, 73893, 73894, 73895, 73897, 73899, 73903, 73905, 73906, 73911, 73912, 73914, 73915, 73919, 73921, 73926, 73927, 73928, 73930, 73932, 73933, 73934, 73935, 73937, 73938, 73939, 73940, 73941, 73942, 73943, 73947, 73948, 73949, 73950, 73953, 73954, 73958, 73959, 73966, 73972, 73973, 73975, 73988, 73989, 73990, 73991, 74001, 74002, 74003, 74004, 74005, 74010, 74011, 74012, 74017, 74018, 74019, 74020, 74021, 74022, 74024, 74025, 74026, 74038, 74039, 74040, 74041, 74042, 74044, 74046, 74047, 74075, 74076, 74077, 74082, 74083, 74086, 74087, 74089, 74093, 74095, 74099, 74104, 74106, 74108, 74114, 74117, 74118, 74120, 74123, 74126, 74127, 74130, 74132, 74134, 74136, 74153, 74155, 74157, 74160, 74168, 74170, 74171, 74172, 74174, 74176, 74177, 74202, 74203, 74212, 74214, 74220, 74221, 74224, 74226, 74227, 74228, 74230, 74234, 74236, 74238, 74239, 74245, 74252, 74255, 74257, 74259, 74260, 74261, 74262, 74264, 74266, 74267, 74268, 74270, 74271, 74273, 74275, 74280, 74285, 74286, 74288, 74289, 74290, 74291, 74292, 74293, 74295, 74296, 74297, 74301, 74304, 74305, 74309, 74313, 74314, 74321, 74322, 74323, 74327, 74330, 74331, 74332, 74333, 74334, 74337, 74340, 74342, 74348, 74349, 74351, 74352, 74353, 74382, 74383, 74387, 74388, 74390, 74393, 74395, 74398, 74401, 74404, 74406, 74408, 74412, 74413, 74414, 74419, 74420, 74421, 74424, 74437, 74444, 74446, 74447, 74450, 74452, 74457, 74459, 74478, 74479, 74498, 74501, 74503, 74504, 74505, 74507, 74508, 74510, 74512, 74517, 74518, 74519, 74520, 74536, 74537, 74538, 74559, 74565, 74567, 74581, 74582, 74583, 74584, 74585, 74586, 74592, 74608, 74611, 74612, 74613, 74614, 74630, 74633, 74637, 74647, 74648, 74655, 74657, 74659, 74665, 74672, 74674, 74689, 74690, 74704, 74722, 74727, 74728, 74730, 74731, 74734, 74735, 74736, 74737, 74738, 74739, 74740, 74741, 74743, 74744, 74745, 74746, 74747, 74749, 74750, 74751, 74753, 74755, 74756, 74758, 74759, 74760, 74761, 74763, 74765, 74767, 74769, 74770, 74771, 74773, 74775, 74777, 74780, 74781, 74783, 74784, 74797, 74800, 74804, 74805, 74814, 74831, 74832, 74833, 74834, 74835, 74841, 74842, 74843, 74846, 74847, 74848, 74849, 74850, 74860, 74861, 74863, 74867, 74869, 74880, 74883, 74886, 74890, 74895, 74896, 74898, 74906, 74917, 74928, 74934, 74939, 74940, 74948, 74953, 74962, 74963, 74969, 74979, 74991, 75003, 75004, 75005, 75006, 75011, 75013, 75014, 75027, 75056, 75057, 75060, 75061, 75062, 75064, 75069, 75070, 75071, 75072, 75074, 75075, 75076, 75077, 75078, 75079, 75080, 75081, 75083, 75084, 75089, 75090, 75093, 75094, 75095, 75097, 75101, 75102, 75106, 75107, 75108, 75109, 75110, 75114, 75115, 75121, 75122, 75123, 75124, 75125, 75127, 75128, 75129, 75130, 75131, 75133, 75134, 75135, 75140, 75144, 75147, 75148, 75151, 75152, 75153, 75157, 75163, 75164, 75165, 75166, 75169, 75172, 75174, 75178, 75179, 75181, 75182, 75183, 75185, 75186, 75187, 75193, 75194, 75197, 75199, 75201, 75204, 75206, 75208, 75209, 75215, 75216, 75220, 75223, 75225, 75226, 75227, 75229,

75232, 75234, 75236, 75237, 75238, 75239, 75241, 75242, 75243, 75245, 75246, 75247, 75248, 75249, 75251, 75254, 75255, 75256, 75257, 75258, 75263, 75265, 75266, 75268, 75269, 75272, 75273, 75280, 75282, 75285, 75286, 75291, 75292, 75293 (Total Student Count:1786)

जैन धर्म प्रवेशिका (द्वितीय)

49641, 49704, 49799, 49800, 49886, 50286, 52488, 52604, 53990, 54056, 54064, 54105, 56992, 57000, 57011, 57016, 57024, 57045, 57121, 57125, 57202, 57228, 57247, 57249, 57254, 57273, 57276, 57279, 57283, 57284, 57286, 57287, 57289, 57290, 57331, 57335, 57346, 57389, 57414, 57447, 57477, 57522, 57532, 57601, 57622, 57642, 57645, 57657, 57758, 57766, 57775, 57779, 57783, 57785, 57795, 57836, 57898, 57900, 57901, 57903, 57905, 57906, 58011, 58023, 58038, 58056, 58063, 58081, 58106, 58158, 58168, 58170, 58262, 58280, 58307, 58451, 58459, 58484, 58523, 58525, 58605, 58655, 58659, 58796, 58801, 58802, 58824, 58835, 58838, 58861, 58913, 59017, 59019, 59030, 59091, 59094, 59096, 59098, 59118, 59389, 59453, 59454, 59507, 59521, 59535, 59642, 59870, 59876, 59975, 60151, 60249, 60464, 60633, 60645, 60646, 60655, 60672, 60823, 60830, 60853, 60999, 61013, 61030, 61088, 61123, 61141, 61155, 61159, 61206, 61212, 61235, 61236, 61271, 61305, 61316, 61324, 61329, 61341, 61346, 61500, 61551, 61553, 61558, 61582, 61584, 61586, 61618, 61625, 61630, 61709, 61713, 61739, 61744, 61750, 61754, 61913, 61970, 62064, 62455, 62514, 62529, 62532, 62541, 62550, 62731, 62767, 62858, 62880, 62881, 62942, 62986, 62988, 63036, 63037, 63040, 63041, 63043, 63094, 63100, 63198, 63217, 63225, 63352, 63402, 63417, 63420, 63421, 63461, 63475, 63597, 63603, 63604, 63605, 63607, 63608, 63610, 63611, 63612, 63613, 63614, 63615, 63616, 63618, 63619, 63620, 63621, 63622, 63645, 63647, 63735, 63739, 63743, 63744, 63746, 63747, 63768, 63771, 63779, 63864, 63866, 63871, 63878, 63881, 63890, 63894, 63914, 63915, 63929, 63992, 64000, 64024, 64027, 64035, 64113, 64114, 64115, 64150, 64153, 64154, 64157, 64184, 64195, 64221, 64265, 64299, 64315, 64483, 64487, 64561, 64602, 64610, 64612, 64616, 64645, 64720, 64730, 64731, 64742, 64754, 64770, 64803, 64807, 64809, 64810, 64846, 64854, 64916, 64927, 64953, 65083, 65126, 65181, 65229, 65263, 65270, 65327, 65346, 65408, 65409, 65435, 65441, 65443, 65458, 65464, 65466, 65468, 65474, 65598, 65622, 65665, 65680, 65691, 65734, 65744, 65786, 65796, 65807, 65833, 65844, 65874, 65975, 65980, 66002, 66024, 66057, 66071, 66077, 66108, 66115, 66123, 66133, 66134, 66146, 66155, 66163, 66167, 66169, 66170, 66174, 66178, 66193, 66246, 66249, 66250, 66251, 66252, 66312, 66317, 66319, 66320, 66321, 66322, 66335, 66336, 66338, 66339, 66340, 66341, 66342, 66353, 66357, 66358, 66359, 66361, 66393, 66395, 66398, 66404, 66410, 66415, 66480, 66484, 66485, 66487, 66489, 66490, 66491, 66492, 66493, 66494, 66500, 66503, 66504, 66505, 66544, 66546, 66547, 66548, 66554, 66555, 66566, 66608, 66666, 66737, 66846, 66872, 66880, 66882, 66887, 66888, 66907, 66910, 66948, 66949, 66960, 66983, 66993, 66995, 67050, 67116, 67261, 67323, 67324, 67326, 67332, 67366, 67369, 67376, 67433, 67451, 67453, 67470, 67471, 67554, 67567, 67568, 67571, 67579, 67587, 67588, 67589, 67591, 67598, 67604, 67610, 67617, 67650, 67656, 67657, 67658, 67669, 67670, 67673, 67686, 67688, 67689, 67701, 67708, 67725, 67726, 67727, 67740, 67758, 67764, 67765, 67772, 67773, 67809, 67842, 67851, 67866, 67873, 67874, 67875, 67876, 67881, 67882, 67885, 67972, 67974, 67975, 67985, 67986, 67987, 68009, 68013, 68020, 68021, 68023, 68027, 68029, 68030, 68032, 68033, 68036, 68063, 68067, 68082, 68102, 68105, 68107, 68108, 68113, 68128, 68199, 68202, 68204, 68214, 68219, 68220, 68221, 68222, 68223, 68224, 68226, 68228, 68234, 68239, 68240, 68248, 68253, 68255, 68269, 68277, 68280, 68282, 68283, 68287, 68288, 68365, 68372, 68373, 68375, 68377, 68387, 68406, 68419, 68420, 68433, 68439, 68441, 68442, 68494, 68526, 68528, 68536, 68554, 68557, 68583, 68589, 68617, 68667, 68684, 68690, 68702, 68703, 68705, 68708, 68709, 68714, 68715, 68722, 68772, 68773, 68779, 68785, 68788, 68789, 68791, 68794, 68809, 68826, 68851, 68864, 68876, 68882, 68885, 68893, 68927, 68930, 68931, 68940,

68944, 68945, 68965, 68967, 68972, 68975, 68977, 68988, 68990, 68995, 68998, 69002, 69012, 69052, 69057, 69100, 69117, 69118, 69145, 69148, 69153, 69155, 69158, 69181, 69205, 69220, 69221, 69228, 69233, 69235, 69239, 69241, 69244, 69249, 69257, 69258, 69269, 69275, 69286, 69287, 69288, 69289, 69292, 69293, 69312, 69323, 69355, 69361, 69383, 69384, 69385, 69408, 69421, 69429, 69453, 69454, 69484, 69485, 69493, 69497, 69505, 69521, 69562, 69609, 69612, 69621, 69656, 69657, 69664, 69666, 69697, 69708, 69710, 69743, 69835, 69867, 69877, 69879, 69916, 69926, 69934, 69949, 69954, 69956, 69957, 69981, 69984, 70007, 70063, 70088, 70101, 70102, 70142, 70151, 70158, 70160, 70162, 70168, 70196, 70200, 70201, 70205, 70208, 70209, 70221, 70238, 70244, 70249, 70250, 70253, 70256, 70258, 70259, 70322, 70356, 70357, 70369, 70370, 70425, 70525, 70646, 70659, 70661, 70838, 70843, 70865, 70931, 70932, 70933, 70983, 71022, 71057, 71085, 71147, 71150, 71181, 71182, 71184, 71185, 71276, 71413, 71414, 71415, 71416, 71417, 71418, 71419, 71421, 71462, 71469, 71489, 71490, 71491, 71492, 71499, 71500, 71505, 71506, 71507, 71545, 71546, 71566, 71572, 71573, 71574, 71575, 71576, 71637, 71638, 71639, 71654, 71655, 71656, 71657, 71658, 71665, 71722, 71726, 71916, 72016, 72056, 72084, 72103, 72189, 72190, 72194, 72227, 72228, 72229, 72292, 72382, 72383, 72390, 72483, 72484, 72485, 72486, 72507, 72523, 72537, 72539, 72540, 72541, 72542, 72544, 72545, 72547, 72634, 72676, 72680, 72681, 72729, 72758, 72791, 72806, 72807, 72825, 72876, 72879, 72881, 72963, 72964, 72965, 72966, 72967, 73015, 73016, 73026, 73027, 73090, 73146, 73147, 73168, 73176, 73222, 73223, 73228, 73297, 73308, 73311, 73318, 73329, 73334, 73335, 73411, 73413, 73426, 73435, 73460, 73462, 73463, 73528, 73529, 73530, 73548, 73588, 73611, 73632, 73651, 73656, 73658, 73708, 73710, 73711, 73713, 73714, 73715, 73716, 73742, 73753, 73775, 73776, 73857, 73860, 73881, 73882, 73907, 73925, 73957, 73967, 74013, 74048, 74051, 74055, 74063, 74080, 74101, 74103, 74110, 74112, 74122, 74182, 74187, 74199, 74312, 74355, 74403, 74427, 74428, 74451, 74453, 74455, 74463, 74464, 74466, 74468, 74469, 74470, 74471, 74472, 74473, 74528, 74557, 74573, 74650, 74661, 74671, 74700, 74702, 74705, 74724, 74785, 74786, 74787, 74788, 74789, 74871, 74893, 74894, 74915, 74916, 74918, 74920, 74978, 75010, 75029, 75030, 75039, 75085, 75091, 75092, 75098, 75116, 75120, 75137, 75141, 75162, 75168, 75175, 75184, 75190, 75196, 75212, 75213, 75219, 75231, 75240, 75250, 75261, 75270, 75274, 75281 (Total Student Count:914)

जैन धर्म प्रथमा (तृतीय)

49866, 50111, 50278, 50279, 51227, 51417, 51422, 51423, 51424, 51425, 51427, 51428, 51429, 51431, 51432, 51434, 51798, 52085, 52781, 53396, 53785, 53983, 54065, 54548, 55862, 55902, 55922, 56599, 56987, 56994, 56995, 57014, 57026, 57033, 57087, 57231, 57232, 57250, 57253, 57255, 57293, 57313, 57357, 57381, 57484, 57488, 57491, 57521, 57539, 57698, 57713, 57724, 57759, 57774, 57801, 57802, 57833, 57879, 57911, 57982, 58032, 58079, 58103, 58109, 58161, 58292, 58294, 58373, 58446, 58447, 58448, 58450, 58452, 58455, 58463, 58474, 58482, 58604, 58636, 58638, 58641, 58642, 58671, 58684, 58697, 58708, 58713, 58715, 58721, 58722, 58725, 58754, 58763, 58768, 58825, 58839, 58896, 58900, 58903, 59093, 59113, 59114, 59152, 59396, 59398, 59421, 59624, 59643, 59654, 59669, 59670, 59760, 59857, 59880, 59887, 59889, 59979, 60005, 60019, 60029, 60061, 60063, 60065, 60185, 60234, 60332, 60368, 60467, 60469, 60473, 60501, 60502, 60503, 60504, 60505, 60508, 60509, 60510, 60511, 60517, 60519, 60521, 60606, 60625, 60683, 60806, 60807, 60822, 60886, 60898, 60899, 60902, 60906, 60907, 60974, 61031, 61084, 61140, 61145, 61149, 61162, 61163, 61167, 61172, 61222, 61231, 61327, 61330, 61349, 61350, 61388, 61420, 61477, 61480, 61481, 61482, 61483, 61484, 61486, 61505, 61535, 61537, 61555, 61556, 61557, 61569, 61587, 61588, 61593, 61601, 61614, 61622, 61736, 61753, 61758, 61808, 61851, 61864, 61870, 61927, 61929, 61932, 61934, 61967, 61974, 61987, 61994, 61996, 62017, 62019, 62022, 62027, 62074, 62078, 62099, 62263, 62265, 62266, 62272, 62274, 62281, 62290, 62303, 62397, 62398, 62401, 62406, 62448,

62452, 62453, 62504, 62513, 62523, 62524, 62527, 62577, 62607, 62660, 62672, 62695, 62770, 62777, 62779, 62781, 62804, 62805, 62816, 62821, 62838, 62840, 62847, 62964, 62967, 62972, 62989, 63017, 63021, 63068, 63069, 63072, 63090, 63103, 63106, 63107, 63111, 63114, 63200, 63248, 63266, 63359, 63360, 63361, 63453, 63454, 63455, 63458, 63460, 63462, 63545, 63546, 63554, 63556, 63557, 63558, 63559, 63576, 63658, 63733, 63741, 63750, 63751, 63752, 63755, 63758, 63764, 63765, 63775, 63830, 63872, 63921, 63945, 63950, 63988, 63995, 64026, 64036, 64052, 64054, 64085, 64117, 64203, 64322, 64346, 64349, 64357, 64361, 64380, 64381, 64382, 64392, 64399, 64407, 64414, 64424, 64456, 64458, 64465, 64467, 64468, 64471, 64473, 64474, 64476, 64509, 64513, 64514, 64515, 64562, 64563, 64567, 64595, 64615, 64626, 64649, 64662, 64665, 64673, 64713, 64734, 64745, 64750, 64777, 64835, 64874, 64914, 64931, 64936, 64950, 64974, 65046, 65048, 65085, 65128, 65150, 65205, 65208, 65212, 65214, 65267, 65287, 65335, 65338, 65345, 65355, 65357, 65381, 65383, 65444, 65454, 65455, 65461, 65521, 65543, 65545, 65556, 65579, 65623, 65655, 65656, 65669, 65710, 65768, 65825, 65826, 65830, 65842, 65889, 65914, 65931, 65951, 65977, 65998, 66029, 66154, 66160, 66383, 66384, 66389, 66411, 66448, 66449, 66511, 66512, 66528, 66550, 66567, 66580, 66626, 66786, 66845, 66966, 67003, 67012, 67152, 67160, 67354, 67368, 67409, 67447, 67488, 67489, 67490, 67492, 67497, 67628, 68041, 68044, 68098, 68190, 68232, 68233, 68235, 68236, 68237, 68281, 68407, 68481, 68647, 68648, 68678, 68827, 68895, 68900, 69119, 69152, 69173, 69208, 69213, 69283, 69304, 69346, 69387, 69435, 69540, 69542, 69583, 69636, 69671, 69798, 69836, 69843, 69846, 69865, 69885, 69909, 69919, 70009, 70089, 70107, 70114, 70125, 70183, 70230, 70243, 70275, 70358, 70359, 70426, 70428, 70429, 70474, 70512, 70663, 70718, 70723, 70845, 70945, 70946, 71016, 71298, 71299, 71300, 71424, 71623, 71634, 71785, 71910, 71911, 71974, 72107, 72181, 72198, 72241, 72406, 72422, 72480, 72482, 72527, 72535, 72677, 72678, 72679, 72682, 72741, 72742, 72751, 72752, 72753, 72757, 72811, 72812, 72815, 72849, 72877, 72880, 73141, 73202, 73212, 73216, 73217, 73231, 73273, 73326, 73439, 73531, 73532, 73634, 73717, 73718, 73733, 73774, 73777, 73879, 74031, 74032, 74036, 74105, 74135, 74189, 74191, 74192, 74307, 74487, 74500, 74513, 74543, 74544, 74579, 74587, 74616, 74617, 74622, 74624, 74628, 74669, 74686, 74706, 74794, 74795, 74796, 74817, 74840, 74870, 74874, 74876, 74878, 74879, 74901, 74913, 74941, 74960, 74995, 75024, 75026, 75065, 75087, 75138, 75156, 75233, 75259, 75271, 75275 (Total Student Count:602)

जैन धर्म मध्यमा (चतुर्थ)

49892, 50282, 50283, 50285, 51894, 52674, 54027, 54544, 54546, 56107, 56237, 56485, 56618, 57018, 57112, 57113, 57207, 57236, 57267, 57291, 57294, 57379, 57387, 57490, 57492, 57525, 57700, 57780, 57781, 57784, 57809, 57860, 57863, 57888, 57979, 58024, 58028, 58096, 58097, 58179, 58329, 58393, 58436, 58437, 58438, 58461, 58462, 58546, 58549, 58555, 58578, 58579, 58580, 58591, 58595, 58616, 58666, 58668, 58673, 58680, 58686, 58693, 58695, 58700, 58701, 58704, 58706, 58707, 58710, 58714, 58726, 58765, 58766, 58771, 58779, 58780, 58781, 58794, 58810, 58826, 58901, 58902, 58904, 59121, 59131, 59362, 59422, 59423, 59425, 59428, 59449, 59451, 59460, 59479, 59566, 59570, 59578, 59581, 59690, 59698, 59748, 59839, 59898, 60022, 60066, 60530, 60534, 60595, 60622, 60774, 60777, 60789, 60795, 60833, 60857, 60891, 61061, 61182, 61203, 61377, 61405, 61504, 61522, 61531, 61532, 61609, 61611, 61612, 61615, 61726, 61807, 61809, 61829, 61832, 61865, 61869, 61871, 61921, 61923, 61946, 62127, 62414, 62457, 62733, 62772, 62841, 62842, 62864, 62866, 62867, 62872, 62924, 62951, 62958, 62960, 62973, 63056, 63059, 63060, 63201, 63202, 63203, 63347, 63385, 63469, 63478, 63492, 63562, 63591, 63663, 63669, 63753, 63773, 63783, 63792, 63877, 63927, 63934, 63940, 63942, 63946, 63947, 63970, 64084, 64089, 64090, 64091, 64116, 64146, 64171, 64174, 64176, 64178, 64356, 64362, 64376, 64416, 64420, 64428, 64429, 64430, 64436, 64447, 64449, 64450, 64522, 64597, 64604, 64625, 64628, 64629, 64631, 64635, 64647, 64671, 64784,

64811, 64960, 65055, 65201, 65203, 65204, 65296, 65340, 65399, 65426, 65428, 65429, 65447, 65476, 65491, 65544, 65567, 65652, 65794, 65834, 65875, 65886, 66058, 66075, 66076, 66412, 66413, 66447, 66551, 66587, 66847, 66945, 67007, 67029, 67330, 67374, 67375, 67414, 67421, 67473, 67491, 67493, 67501, 67680, 67819, 67891, 68046, 68193, 68229, 68230, 68231, 68259, 68279, 68378, 68447, 68512, 68659, 68806, 69005, 69183, 69363, 69443, 69460, 69711, 69988, 70360, 70440, 70441, 70548, 70678, 70813, 70853, 70855, 71330, 71533, 71788, 72108, 72200, 72201, 72282, 72283, 72461, 72475, 72476, 72477, 72479, 72524, 72531, 72735, 72736, 72816, 72817, 72897, 72898, 72914, 72970, 72971, 73008, 73155, 73230, 73267, 73322, 73401, 73415, 73431, 73522, 73662, 73743, 73803, 73993, 74007, 74079, 74107, 74141, 74142, 74146, 74303, 74540, 74602, 74712, 74790, 74791, 74793, 74943, 74977, 74980, 75025, 75031, 75038, 75041, 75045, 75111, 75112, 75119, 75155, 75160, 75176, 75217, 75264, 75276 (Total Student Count:356)

जैन धर्म चन्द्रिका (पाँचवीं)

49823, 49824, 50644, 52151, 52675, 52678, 53986, 53993, 53998, 54552, 55683, 56997, 57028, 57053, 57079, 57099, 57131, 57238, 57259, 57260, 57505, 57558, 57599, 57717, 57790, 57808, 57846, 57918, 57919, 57984, 57986, 58175, 58177, 58229, 58235, 58286, 58331, 58439, 58465, 58491, 58493, 58497, 58554, 58557, 58558, 58559, 58560, 58562, 58571, 58572, 58575, 58594, 58601, 58643, 58644, 58645, 58844, 58909, 58983, 59027, 59166, 59466, 59590, 59592, 59596, 59702, 59763, 59896, 59943, 59989, 60106, 60365, 60628, 60695, 60780, 60798, 60802, 60839, 60842, 60892, 60893, 60909, 60948, 60957, 61051, 61052, 61165, 61169, 61415, 61474, 61539, 61772, 61830, 61840, 61944, 61945, 61954, 61976, 61978, 61984, 62057, 62077, 62412, 62625, 62849, 62893, 62906, 62935, 62937, 62977, 62978, 62979, 63032, 63073, 63074, 63075, 63091, 63204, 63464, 63472, 63473, 63479, 63480, 63501, 63659, 63833, 63949, 63951, 63976, 64082, 64118, 64119, 64179, 64181, 64185, 64187, 64320, 64451, 64453, 64482, 64500, 64580, 64583, 64605, 64651, 64755, 64847, 64979, 64982, 65144, 65159, 65285, 65330, 65481, 65484, 65489, 65492, 65496, 65497, 65501, 65523, 65531, 65539, 65607, 65609, 65771, 65852, 65877, 65987, 66007, 66018, 66036, 66037, 66347, 66765, 66819, 67074, 67816, 67860, 68049, 68050, 68663, 68824, 68853, 68902, 68981, 69122, 69144, 69305, 69370, 69450, 69595, 69772, 69773, 70252, 70323, 70667, 70725, 70902, 70936, 70944, 70986, 71252, 71723, 72039, 72116, 72407, 72441, 72533, 72743, 72759, 72786, 72787, 72788, 73004, 73215, 73321, 73353, 73471, 73936, 73944, 73996, 73998, 74030, 74066, 74148, 74150, 74481, 74545, 74569, 74709, 74754, 74798, 74885, 75033, 75040, 75044, 75118, 75161, 75170, 75299, 75300 (Total Student Count:242)

जैन धर्म विशारद (छठी)

52133, 52326, 52680, 54001, 54515, 54972, 55367, 55368, 55369, 55671, 55680, 55682, 57056, 57116, 57352, 57356, 57503, 57740, 57892, 57988, 58296, 58402, 58404, 58441, 58490, 58718, 58910, 58967, 59024, 59326, 59627, 59747, 60799, 60827, 60910, 61047, 61432, 61540, 61732, 62416, 62417, 62418, 62420, 62421, 62423, 62425, 62427, 62608, 62637, 62697, 62698, 62702, 62754, 62773, 62785, 62936, 62996, 63076, 63077, 63078, 63079, 63081, 63082, 63205, 63206, 63406, 63408, 63409, 63482, 63516, 63821, 63838, 64120, 64200, 64498, 64524, 64541, 64592, 64599, 64679, 64766, 64815, 64928, 64984, 64986, 64988, 64990, 65044, 65398, 65603, 65709, 66013, 66019, 66187, 66348, 67361, 67404, 67495, 67625, 67677, 67817, 67826, 67827, 68543, 68799, 68858, 68985, 69015, 69182, 70093, 70217, 70860, 71306, 71307, 71550, 71551, 72202, 72447, 72490, 72491, 72684, 72860, 72894, 73003, 73320, 73354, 73355, 73465, 73469, 73480, 73612, 73661, 73861, 73960, 74151, 74432, 74497, 74546, 74547, 74548, 74549, 74994, 75139, 75222, 75235 (Total Student Count:145)

जैन धर्म कोविद (सातवीं)

53128, 54097, 54264, 57385, 57501, 57588, 57591, 57593, 57902, 57989, 58035, 58183, 58185, 58374, 58389, 58407, 58495, 58624, 58773, 58815, 58845, 58846, 58962, 59064, 59249, 59633, 59754, 59757, 59773, 60115, 60295, 60376, 60699, 60700, 60862, 61056, 61102, 61435, 61436, 61873, 62221, 62486, 62678, 62679, 62700, 62706, 62783, 63062, 63087, 63503, 63504, 63505, 63506, 63507, 63671, 63854, 63865, 63875, 63981, 63983, 64194, 64198, 64445, 64539, 64589, 64963, 64968, 64993, 65262, 65641, 65724, 66253, 66254, 66416, 67339, 67406, 67459, 67665, 68625, 68863, 68905, 69097, 70103, 70430, 70942, 71331, 71332, 71664, 71666, 72109, 72423, 72492, 72767, 72785, 72893, 73161, 73309, 73310, 73313, 73388, 73466, 73477, 73670, 73961, 74483, 74493, 74550, 74551, 74666, 74810, 75046, 75047, 75096, 75283 (Total Student Count:114)

जैन धर्म भूषण (आठवीं)

53131, 55266, 57697, 57931, 58242, 58380, 59900, 60127, 60962, 62058, 62069, 62250, 62451, 62456, 62458, 62825, 62873, 62877, 63093, 63672, 63673, 64112, 64121, 64123, 64140, 64141, 64202, 64405, 64546, 64548, 64550, 64663, 64760, 64930, 65337, 65366, 65541, 65560, 65562, 65637, 65661, 65712, 65823, 65937, 66081, 67147, 67463, 67464, 68318, 68545, 69469, 70366, 70367, 70368, 71195, 71196, 71718, 71719, 72000, 72339, 72346, 72446, 72944, 73225, 73437, 73474, 74009, 74480, 74552, 74553, 74625, 74710, 74836, 74897, 75051, 75052, 75294, 75295 (Total Student Count:78)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - पूर्वार्द्ध (नवमी)

57102, 57264, 57587, 57848, 57935, 58532, 58533, 58628, 58629, 59340, 59374, 59447, 59854, 59888, 59946, 59999, 60037, 60159, 60536, 61107, 61653, 62051, 62461, 62462, 62463, 62464, 62897, 62918, 63099, 63279, 63804, 63841, 63842, 64551, 64553, 64556, 64557, 64763, 64820, 64973, 65331, 65332, 65558, 65559, 65705, 65756, 65892, 67645, 68052, 69150, 70342, 70363, 70904, 71624, 72027, 72111, 72143, 72247, 72284, 73195, 73316, 73402, 73403, 73404, 73657, 73980, 73987, 74029, 74197, 74433, 74684, 74716, 74837, 74872, 74882, 74957, 75100, 75167, 75296, 75297, 75301 (Total Student Count:81)

जैन सिद्धान्त प्रभाकर - उत्तरार्द्ध (दसवीं)

57003, 57117, 57367, 57941, 57952, 58316, 59375, 59765, 60300, 60303, 60868, 61064, 62070, 62072, 62073, 62125, 62879, 63027, 63049, 63676, 64895, 65286, 65563, 65564, 65565, 65616, 65642, 65672, 65677, 65879, 66014, 70362, 70941, 71795, 72245, 72408, 72685, 73028, 73317, 73319, 73524, 73962, 73963, 73964, 74839, 74909, 75037 (Total Student Count:47)

जैन सिद्धान्त रत्नाकर-पूर्वार्द्ध (ग्यारहवीं)

57225, 57308, 57310, 57312, 57813, 57954, 57992, 58114, 59143, 60161, 60872, 61065, 62106, 62117, 65633, 65816, 72409, 73395, 73406, 73420, 74069, 74812, 75053 (Total Student Count:23)

जैन सिद्धान्त रत्नाकर- उत्तरार्द्ध (बारहवीं)

57746, 57956, 59613, 60873, 60874, 62581, 63847, 63848, 64412, 65660, 65755, 73427 (Total Student Count:12)

जैन सिद्धान्त शास्त्री - पूर्वार्द्ध (तेरहवीं)

57517, 57748, 59615, 59619, 59948, 60875, 60876, 60877, 60878, 60879, 61066, 61067, 61068, 61069, 61776, 62054, 62818, 63829, 64849, 65101, 65821 (Total Student Count:21)

जैन सिद्धान्त शास्त्री - उत्तरार्द्ध (चौदहवीं)

57749, 57993, 60132, 60133, 62056, 62082, 63088, 64096, 64994, 65333, 65404, 65550, 65552, 65673, 72797, 74881, 75298 (Total Student Count:17)

परिणाम रोका गया

57215, 58662, 60339, 60471, 60797, 61079, 61348, 61520, 61529, 61654, 61749, 62543, 62650, 63766, 64189, 64547, 64719, 64735, 65082, 65583, 65917, 65925, 66366, 66622, 66914, 66944, 67967, 68074, 68178, 68203, 68480, 68487, 68700, 69018, 69876, 70239, 75121, 75122

आवेदक	उपस्थिति	उत्तीर्ण	उत्तीर्ण प्रतिशत
9400	5434	4438	81.67%

बोर्ड की आगामी परीक्षा 9 जनवरी 2011 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 8 तक की आगामी परीक्षा 9 जनवरी 2011, रविवार को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क करें–

अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

घोड़ों का चौक, जोधपुर, फोन–0291–2630490

www.jainratnaboard.com, Email: info@jainratnaboard.com

1 अगस्त 2010 की परीक्षा का परिणाम (Result) देखने एवं 9 जनवरी, 2011 की परीक्षा हेतु आवेदन करने के लिए बोर्ड की वेबसाइट www.jainratnaboard.com का उपयोग कर सकते हैं।

सुशीला बोहरा
संयोजक
9414133879

राजेश कर्णावट
सचिव
9414128925

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार
9351589694

दो क्षणिकाएँ

श्रद्धेय श्री यशवन्त मुनि जी म.सा.

केवली

क्या चतुर्दश पूर्व
का अध्येता केवली बनेगा?
जरूरी नहीं भजना है।
क्या राग-द्वेष
का पूर्व विजेता
केवली बनेगा?
जरूर बनेगा नियमा है।

वैर

हे जीव!
द्वेष को दूर करने में
मत लगा देर,
वरना यह बन जाएगा वैर,
भव-भव
के लिए
कातिल ज़ैर (ज़हर)।

समाचार-विविधा

पाली में पर्वाराधन पर तप एवं ज्ञान की गंगा बही

संघनायक, परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 9 के पाली चातुर्मास में धर्माराधन, ज्ञानाराधन और तपाराधन की शृंखला निरन्तर गतिशील है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व पर दिल्ली, चेन्नई, बैंगलुरू, मैसूर, कुम्भकोणम, कोयम्बतुर, बीजापुर, बागलकोट, शोरापुर, धुलिया, मुम्बई, जामनेर, इगतपुरी, इचलकरंजी, रतलाम, सैलाना, उमरगाँव, पिलखोड़, मन्दसौर, अहमदाबाद, सूरत, जयपुर, जोधपुर, बालोतरा, भीलवाड़ा, ब्यावर, पीपाड़, बीकानेर, देशनोक, दूदू, सवाईमाधोपुर, चुरू, आगोलाई, किशनगढ़, मौजपुर, नागौर, कानपुर, हैदराबाद, दुर्ग आदि अनेक ग्राम-नगरों से श्रावक-श्राविकाओं ने यहाँ आकर धर्म-साधना का लाभ लिया। इन पावन आठ दिवसों में संवर-पौषध, प्रतिक्रमण, दयाव्रत आदि की साधना प्रचुरता से हुई। लगभग 50 से अधिक अठाई तप हुए, मासखमण, इक्कीस, पन्द्रह, ग्यारह और नौ की तपस्याएँ भी हुईं। 125 तेले हुए, चोले, पचोले की भी तपस्याएँ हुईं। उपवास एवं एकाशन अनगिनत हुए, प्रवचन हॉल खचाखच भरा रहता था। प्रातः 8.30 बजे से 12 बजे तक प्रवचन का कार्यक्रम चलता था। पूज्य आचार्यप्रवर ने भी प्रतिदिन एक घंटे प्रवचनामृत फरमाया।

संवत्सरी के दिन सैकड़ों की संख्या में अष्टप्रहर पौषध की साधना हुई। पौषध करने वालों से समूचा भवन ऊपर से नीचे पूरा भरा हुआ था। बहनों ने चार स्थानों पर प्रतिक्रमण तथा पौषध की आराधना की। पाली संघ का समूचा युवा वर्ग आठों ही दिन पूरे समय साधना-आराधना में सन्नद्ध रहा। इस वर्ष मारवाड़ में चारों ओर आचार्यप्रवर ने चातुर्मास की सुलभता प्रदान कर दी थी, फिर भी गुरुभक्तों द्वारा आचार्यप्रवर की सन्निधि में धर्माराधन किया गया। न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा ने आठों दिन यहाँ रहकर पर्वाराधना की। क्षमायाचना के दिन 13 सितम्बर को ज्ञानगच्छीय संतमुनिराज ठाणा 5 से तथा श्रमणसंघीय महासतियाँ जी

ठाणा 3 से आचार्यप्रवर की सन्निधि में पधारे। पाली शहर की परम्परा के अनुसार मूर्तिपूजक संघों एवं स्थानकवासी संघ के प्रतिनिधिगण क्षमापना हेतु उपस्थित हुए। यहाँ सम्पन्न प्रमुख तपस्याओं एवं व्रत-प्रत्याख्यानों का विवरण इस प्रकार है-

(1) मासक्षपण की आराधना- 1. श्रीमती चन्द्राबाई पोरवाल धर्मपत्नी श्री जीवनराज जी पोरवाल 2. श्रीमती पुष्पाबाई जी कांठेड़ धर्मपत्नी श्री राणमल जी कांठेड़, 3. श्री मुकेश जी सूर्या सुपुत्र श्री जवरीलाल जी सूर्या, 4. श्री अशोक जी सिंघवी सुपुत्र स्व. श्री दुल्लेराज जी सिंघवी (दयामुनि जी) 5. श्री अरुण जी भण्डारी-अहमदाबाद, 6. श्रीमती ममता जी सिंघवी धर्मपत्नी श्री प्रमोद जी सिंघवी।

(2) सपत्नीक आजीवन शीलव्रती- 1. श्री महावीरमल जी गांधी-हैदराबाद, 2. श्री प्रसन्नचन्द जी ओस्तवाल-जोधपुर, 3. श्री धनपतमल जी सिंघवी-पाली, 4. श्री लादूराम जी कोठारी-दूदू, 5. श्री मदनलाल जी मालाणी-पाली, 6. श्री मोहनलाल जी सोलंकी, 7. श्री कमलकिशोर जी भोमासोनी-पाली, 8. श्री राधेश्याम जी नाई-पाली, 9. श्री केवलचन्द जी गोलेच्छा-पारलू, 10. श्री सोहनलाल जी रांकावत-पाली, 11. श्री बद्रीलाल जी चेचाणी-पाली, 12. श्री किशनदास जी वैष्णव-पाली, 13. श्री शांतिलाल जी मुथा-पाली, 14. श्री मोहनलाल जी दरजी-पाली, 15. श्री सुरेशकुमार जी बरडिया-जलगाँव, 16. श्री डालचन्द जी पारख-पाली, 17. श्री चम्पालाल जी गाछा-पाली, 18. श्री राधाकिशन जी खत्री-पाली, 19. डॉ. रमेश कुमार जी छाजेड़-मुम्बई, 20. श्री कानमल जी डोसी-पाली, 21.श्री शांतिलाल जी दुग्गड़-पाली, 22. श्री नेमीचन्द जी नाहर-पाली, 23. श्री पारसमल जी मुथा (पीपाड़)-मुम्बई, 24. श्री जवरीलाल जी पारख-पाली, 25. श्री जयचन्द जी मरलेचा-अमरावती (38 वर्ष की उम्र में), 26. श्री जसवन्तराज जी मेहता-पाली, 27. श्री उत्तमचन्द जी डागा (कराड़ी)-तिरुवन्नामल्लै, 28. श्री महावीरप्रसाद जी जैन-कोटा।

यहाँ एकाशन के 10 मासखमण, दयाव्रत के 9 मासखमण, संवरव्रत के 7 मासखमण हुए हैं। तेले 150 से अधिक हो गए हैं। 7 एकान्तर वर्षीतप चल रहे हैं। ग्यारहरंगी, नौरंगी, सतरंगी 2 एवं पचरंगी 2 हो गई हैं। चार माह के लिए शीलव्रती लगभग 75 बने हैं। 10-12 भाई-बहनों ने 12व्रत अंगीकार किए हैं। 21 एवं 15 दिवसीय तपस्याएँ भी हुई हैं। श्रावक-श्राविकाओं एवं युवकों द्वारा उत्साह से आतिथ्य-सेवा में भी योगदान किया जा रहा है।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट, पाली-306401 (राज.) फोन-02932-250021

आवास व्यवस्था- (1) सुराणा सराय, पुराना बस स्टेण्ड के पास, पाली, फोन-02932-250944 (2) श्री जैन रत्न हितैषी छात्रावास, आनन्द नगर, मण्डिया रोड, पाली, फोन नं. 02932-230452 (विशेष वाहनों के लिए)

सम्पर्क सूत्र- (1) श्रीमान ताराचन्दजी सिंघवी, 7-गाँधी कटला, पाली- 306401, फोन-02932-222005 (2) श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, बी-60, केशर कुंज, वीर दुर्गादास नगर, पाली- 306401, फोन-02932-220603/94141-22304

गोटन में तप के प्रति युवाओं का उत्साह

परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 के पावन सान्निध्य में गोटनवासी पूर्ण श्रद्धा, उत्साह एवं उमंग के साथ धर्माराधन, तपाराधन एवं ज्ञानाराधन में सन्नद्ध हैं। देश के विभिन्न ग्राम-नगरों से आए दर्शनार्थी बन्धु भी धर्माराधन का लाभ ले रहे हैं। यहाँ तीन मासखमण पूर्ण हो गए हैं। श्री पवनकुमार जी कोठारी सुपुत्र श्री रतनलाल जी कोठारी ने 32 वर्ष की युवावय में तथा श्री मुपेश जी ओस्तवाल सुपुत्र श्री सुरेश जी ओस्तवाल एवं पौत्र श्री भैरूलाल जी ओस्तवाल ने 19 वर्ष की किशोरवय में मासखमण तप कर कर्मों की महती निर्जरा की है। श्राविकारत्न श्री प्रकाशदेवी जी धर्मपत्नी श्री चैनरूपचन्द जी बाफना ने 19 सितम्बर को 66 के प्रत्याख्यान किए हैं। यहाँ 30 बेले, 116 तेले, 15 दिन की चार, 21 दिन की दो, 16 दिन की दो, 27 दिन की एक एवं अठाई तथा 11 दिन की 57 तपस्याएँ हो चुकी हैं। उपवास, पाँच, छह, सात दिन की अनेक तपस्याएँ हुई हैं। 30 घरों के छोटे से कस्बे में इतना तप होना महत्त्व रखता है। यहाँ एक पचरंगी तथा एक सतरंगी हो गई है। श्री रेखचन्द जी ओस्तवाल के 16 की तपस्या चल रही है, आगे बढ़ने के भाव हैं। अनेक श्रावकों ने रात्रि-भोजन त्याग एवं दूब पर भोजन का आयोजन न करने तथा सामूहिक भोज में जमीकन्द का प्रयोग नहीं करने का नियम लिया है। पर्युषण पर्व में प्रतिदिन 150-175 संवर पुरुषों में तथा 100-150 संवर महिलाओं में हुए हैं। उल्लेखनीय है कि उपाध्यायप्रवर एवं संतों की प्रेरणा से पर्युषण के 9 दिन बाजार बन्द रहा तथा आगे के लिए भी संकल्प किया गया। सुश्रावक श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल एवं श्री फूलचन्द जी लाम्बिया-

चेन्नई ने आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया है। श्री अभयकुमार जी लोढ़ा ने एक वर्ष के लिए शीलव्रत अंगीकार किया है। चातुर्मास प्रारम्भ होने के पश्चात् से घरों में टी.वी. बन्द से हैं। प्रातः प्रार्थना श्री दर्शनमुनि जी कराते हैं तथा प्रवचन में उपाध्यायप्रवर, मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी, श्री लोकचन्द्रमुनि जी एवं श्री जितेन्द्रमुनि जी का लाभ प्राप्त होता है। प्रवचनों से जैन-अजैन सभी प्रभावित हैं। दिन में 2 बजे शास्त्रवाचना होती है तथा 3 बजे धार्मिक कक्षा लगती है, जिसमें बालक-बालिका एवं नवयुवतियाँ श्री लोकचन्द्र जी म.सा. से 25 बोल, भक्तामर स्तोत्र एवं थोकड़े सीख रहे हैं। 5 बच्चों ने विधि सहित प्रतिक्रमण सीख लिया है तथा 30 बालक-बालिका सीख रहे हैं। गोटनवासी भक्तिभाव से लाभ ले रहे हैं। आवास एवं भोजन की भी सुन्दर व्यवस्था है। श्री चैनरूपचन्द जी बाफना, श्री ओमप्रकाश जी ओस्तवाल, श्री हंसराज जी चौपड़ा, श्री सुरेश जी ओस्तवाल आदि सभी की सेवाएँ प्रशंसनीय हैं।

चातुर्मास स्थल- सामायिक-स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, गोटन 342902 (जिला-नागौर) राज.

सम्पर्क सूत्र- (1) श्री भैरूलालजी ओस्तवाल, रसाली स्टोर, पो.-गोटन-342903 (जिला-नागौर) राज., फोन-01591-230135/94141-18701/94144-84911 (2) श्री चैनरूपचन्दजी बाफना, स्टेशन रोड़, पो.-गोटन-342902 (जिला-नागौर) राज., फोन-94131-69889

महासती मण्डलों की सन्निधि में पर्वाधिराज पर्युषण में धर्म-आराधना

जोधपुर- साध्वीप्रमुखा-शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में घोड़ों का चौक स्थानक में त्याग-तप का विशेष ठाट रहा। सोनू जी सुपुत्री श्री मदनलाल जी खिंवसरा ने मासखमण तप किया। एकाशन के यहाँ 35 मासखमण तथा दयाव्रत के 11 मासखमण सम्पन्न हुए हैं। अब तक 400 तेले तथा 50 अठाइयाँ हो चुकी हैं। नौ, ग्यारह, पन्द्रह आदि की भी तपस्याएँ हुई हैं। दो माह के एकान्तर तप लगभग 25 श्रावक-श्राविकाओं ने किए हैं। सामायिक-साधना प्रतिदिन प्रचुर रूप से हो रही है। चार पचरंगी और दो नवरंगी के साथ चातुर्मास प्रारम्भ से लगभग 1500 दयाव्रत-संवर एवं पौषध हो चुके हैं। प्रत्येक रविवार को युवक परिषद् के सदस्य प्रातःकाल सामायिक हेतु

अच्छी संख्या में उपस्थित होते हैं। पर्वाधिराज पर्युषण के आठों दिन तथा चतुर्दशी के दिन विविध विषयों पर प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। प्रातः 6 बजे से 7 बजे तक दो माह निरन्तर नवकार मंत्र का जाप चला। पर्युषण के दौरान सभी महासतीवृन्द ने व्याख्यान फरमाया। हॉल खचाखच भरा रहा। चेन्नई, जलगाँव, बैंगलोर, बीजापुर, मैसूर, मुम्बई, सवाईमाधोपुर आदि अनेक क्षेत्रों से दर्शन-वन्दन हेतु श्रद्धालुओं का आवागमन हुआ।

सरस्वती नगर, जोधपुर- तत्त्वचिन्तिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का चातुर्मास तपाराधन एवं धर्माराधन की दृष्टि से उल्लेखनीय है। यहाँ पर एक श्राविका ने मासखमण तथा एक श्रावक ने 26 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान किए। तीन बहनों के वर्षीतप तथा दो बहनों के पाँचों तिथियों पर उपवास चल रहे हैं। 5 मासखमण एकाशन के तथा 3 मासखमण दयाव्रत के हो गए हैं। श्री सम्पतराज जी पालरेचा एवं श्री पारसमल जी कांकरिया ने सपत्नीक आजीवन शीलव्रत का नियम अंगीकार किया है तथा 13 श्रावकों ने एक वर्ष के लिए तथा 7 नवयुवकों ने चातुर्मास अवधि तक ब्रह्मचर्यव्रत अंगीकार किया है। पर्युषण पर्व में 30 तेले हुए हैं। सुश्राविका श्रीमती प्रेमलता जी दुग्गड़ ने 19 के पच्चक्खाण किए हैं। दो पचरंगी तथा पर्युषण पर्व पर एक पचरंगी सम्पन्न हुई। पर्युषण में सामूहिक दयाव्रत में 100 भाई-बहनों ने भाग लिया। प्रत्येक रविवार को प्रवचन के पश्चात् परीक्षाएँ आयोजित हुईं। पर्युषण में विभिन्न विषयों पर आयोजित प्रतियोगिताओं में सबने उत्साह से भाग लिया। पौषध-संवर नियमित रूप से चल रहे हैं। पर्युषण पर्व में 115 बहनों ने तथा 40 पौषध-संवर भाइयों के हुए। संवत्सरी के दिन प्रतिक्रमण में 200 से अधिक भाई-बहनों की उपस्थिति रही। अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में 1 सितम्बर से प्रातः नवकार मंत्र का 1 घंटे नियमित जाप चल रहा है, जिसमें 80 से 100 की संख्या में श्रावक-श्राविका भाग ले रहे हैं। महासतियाँ जी की प्रेरणा से रात्रि-भोजन, जमीकन्द आदि के त्याग हुए तथा श्रावकव्रत अंगीकार किए जा रहे हैं।

गांधीनगर-अहमदाबाद- विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. ठाणा 8 के सान्निध्य में अच्छी धर्माराधना हुई। प्रत्येक मंगलवार को महिला मण्डल एवं प्रत्येक रविवार को बालकों का धार्मिक शिक्षण कार्यक्रम चलता है। पाँचों तिथियों पर आनुपूर्वी का 1 घंटे का जाप चल रहा है। प्रातःकाल का व्याख्यान व्याख्यात्री महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. एवं व्याख्यात्री महासती

श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. गुजराती में फरमाते हैं। अनेकविध तप-त्याग के साथ 12व्रत के प्रत्याख्यान भी हो रहे हैं। यहाँ सुश्राविका श्रीमती शांताबेन कोठारी ने 54 उपवास किए हैं। तेरापंथ समाज से होकर भी नित्य उपवास का प्रत्याख्यान महासती मण्डल से उपाश्रय में आकर स्वीकार किया। ममता बेन पालगोता एवं श्री अरूण जी भण्डारी ने 29 उपवास के प्रत्याख्यान किए। नौ, अठाई, सात, छः एवं 20 तेले की तपस्याएँ सम्पन्न हुईं। पर्युषण के आठों दिन सूर्योदय से सूर्यास्त अखण्ड नवकार मंत्र का जाप हुआ। विरक्ता बहन पूनम ने प्रथम बार महासती मण्डल के सान्निध्य में अठाई की तपस्या सम्पन्न की। यहाँ 1 से 3 नवम्बर तक 8 से 25 वर्ष तक की वय के जिज्ञासुओं का शिविर आयोजित किया जा रहा है। इन्हीं दिनों में श्राविकाओं का शिविर भी आयोजित है। पर्युषण के आठ दिनों में प्रतियोगिताओं का भी आयोजन हुआ। यहाँ व्याख्यान के पश्चात् नवकार मंत्र का आधा घंटा जाप चालू है तथा उपवास की शृंखला प्रतिदिन गतिशील है।

चांगोटोला- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 9 के चांगोटोला में चातुर्मासार्थ मंगल-प्रवेश के साथ ही ज्ञान-ध्यान, तप-त्याग की साधना-आराधना चल रही है। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही तेले की लड़ी जारी है। सुबह प्रार्थना, प्रवचन, शास्त्र-वाचन, सामायिक-स्वाध्याय, प्रतिक्रमण आदि सभी दैनिक कार्यक्रम सुव्यवस्थित रूप से गतिमान हैं। पूज्या महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. का प्रवचन अत्यन्त मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी होता है। आपके प्रेरक प्रवचनों के श्रवण हेतु सभी को आतुरता रहती है। पर्युषण पर्व की 8 दिवसीय आराधना में अखंड नवकार-मंत्र का जाप, दया एवं संवर की पचरंगी, एकासना की पचरंगी हुई। आठों दिन अलग-अलग विषयों पर प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन हुआ, जिनमें आबाल वृद्ध सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सामायिक, दया, पौषध, संवर, एकासना, आयम्बिल, उपवास, बेला आदि त्याग तप का ठाट रहा। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में त्याग, तप, प्रत्याख्यान काफी संख्या में हुए। महासती जी की महती प्रेरणा से अनेक भाई-बहिनों ने प्रतिक्रमण सीखना प्रारम्भ कर दिया है। उपस्थिति उल्लेखनीय रहती है। महासती जी के मुखारविन्द से श्री देवराज जी नाहर ने सजोड़े आजीवन शीलव्रत ग्रहण किया तथा 5 दम्पतियों ने 9 वर्ष के लिए शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। तेले की लड़ी के साथ यहाँ ग्यारह, नौ, आठ, सात, छह, पाँच एवं चार दिवसीय तपस्याएँ भी सम्पन्न हुई हैं।

नागौर- व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. ठाणा 5 के सान्निध्य में नागौर नगर में धर्माराधन का ठाट लगा हुआ है। पर्युषण पर्व के आठ दिन तप-त्याग एवं संयम की साधना के साथ मनाये गये। एकाशन, नवरंगी, पचरंगी, आयम्बिल, उपवास, तेले, पाँच, छः, अठाई तथा नौ की तपस्या अच्छी संख्या में हुई। सम्वत्सरी के दिन श्री जैन आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के विद्यार्थियों ने एक नाटक की प्रस्तुति दी, जिसका उद्देश्य गुटखा, पटाखे, अण्डा, सिल्क, कॉस्मेटिक आदि वस्तुओं के त्याग की प्रेरणा था। सभी श्रावक-श्राविकाएँ इस प्रस्तुति से प्रभावित हुए तथा साध्वीमण्डल के मुखारविन्द से यथायोग्य प्रत्याख्यान किए। बच्चों ने पटाखों का त्याग किया। नागौरवासियों ने विवाहादि समारोहों में 21 द्रव्यों से अधिक का भोज नहीं करने का नियम स्वीकार किया। यहाँ 15 वर्ष के बच्चों के लिए एकाशन एवं उपवास का आयोजन किया गया, जिसमें 100 से अधिक बच्चों ने उपवास तथा 50 बच्चों ने एकाशन तप किया। 9 वर्ष से कम उम्र के 7 बच्चों ने तेले की तपस्या की।

मैसूर- व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. ठाणा के सान्निध्य में अच्छी धर्माराधना हो रही है। पर्वाधिराज पर्युषण के प्रथम तीन दिनों में 221 तेले और अन्तिम तीन दिनों में 30 तेले हुए हैं। पर्युषण में 35 अठाई तप तथा 9, 10 एवं 11 दिवसीय तप हुए हैं। सम्वत्सरी के दिन 500 से अधिक पौषध हुए हैं जो मैसूर के इतिहास में प्रथम घटना है। नवयुवक अच्छा लाभ ले रहे हैं। अब तक तीन मासखमण हुए हैं- 1. श्रीमती सुनीताबाई धोका धर्मपत्नी श्री श्रेणिककुमार जी धोका पुत्रवधू श्री नेमीचन्द जी धोका 2. श्रीमती विमलाबाई सुराणा धर्मपत्नी श्री अशोककुमार जी सुराणा पुत्रवधू श्री मोतीलाल जी सुराणा 3. श्रीमती ललिताबाई धोका धर्मपत्नी श्री सुभाषचन्द जी धोका पुत्रवधू स्व. श्री विमलचन्द जी धोका। श्रीमती कल्पनाबाई सेठिया धर्मपत्नी श्री राजेश कुमार जी सेठिया पुत्रवधू श्री मोहनलाल जी सेठिया ने 25 दिवसीय तप किया है। महासतीजी की प्रेरणा से नवयुवक धर्मचर्चा का निरन्तर लाभ रहे हैं। पर्युषण पर्व तक 6 सदार आजीवन शीलव्रती बने हैं- 1. श्री मांगीलाल जी सेठिया, 2. श्री चम्पालाल जी खाबिया, 3. श्री मोहनलाल जी बोहरा, 4. श्री महावीरचन्द जी सांखला, 5. श्री प्रकाशचन्द जी पितलिया, 6. श्री हस्तीमल जी डागा। चातुर्मास काल में पचरंगी, सतरंगी एवं नवरंगी की आराधना हुई। चार माह के लिए एकाशन एवं बियासन के अनेक मासखमण चल रहे हैं। आयम्बिल तथा तेले की लड़ी भी चल रही है। 16 दिवसीय

एक, 15 दिवसीय दो, 11 दिवसीय चार, 9 दिवसीय दस, अठाई 55 तथा तेले 500 अब तक सम्पन्न हो चुके हैं। चार माह के लिए 30-35 एकान्तर तप भी चल रहे हैं। अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 17 से 19 सितम्बर तक अध्यात्म चेतना आयाम का आयोजन किया गया।

पनरुटी में आचार्य हस्ती पर व्याख्यान

पनरुटी- जैन इतिहास में तीन प्रकार के आचार्य बताए गए हैं- गणाचार्य, वाचनाचार्य और युगप्रधानाचार्य। आचार्य हस्ती में तीनों ही प्रकार के आचार्य की अर्हताएँ थीं। ये विचार साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने यहाँ श्री श्वेताम्बर जैन संघ की ओर से 9 सितम्बर को आयोजित सभा में व्यक्त किये। आचार्य हस्ती जन्मशती अध्यात्म चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में हुए विशेष व्याख्यान में उन्होंने कहा कि गणाचार्य के रूप में उन्होंने अपने संघ को नई ऊँचाइयाँ दीं। वाचनाचार्य के रूप में उन्होंने श्रुत-ज्ञान का उल्लेखनीय प्रचार किया तथा "जैन धर्म का मौलिक इतिहास" और अन्य साहित्यिक अवदान दिये। इन सबके साथ ही आचार्य हस्ती का महान व्यक्तित्व और कृतित्व सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही स्तरों पर सम्प्रदायातीत था। उनकी ऐसी अनेक विशेषताएँ उन्हें युगप्रधानाचार्य बना देती हैं। आचार्य हस्ती को ज्ञान और मैत्री का पर्याय बताते हुए कवि डॉ. धींग ने कहा कि स्वाध्याय-सामायिक अभियान के माध्यम से उन्होंने समाज को एकता और अहिंसा का मंगल सन्देश दिया। संघ के अशोकराज सिंघवी और मदनचन्द कोचर ने आभार जताया।

आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन एवं भाषण प्रतियोगिता 21 नवम्बर को

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा आचार्य हस्ती भजन-गीत गायन एवं भाषण प्रतियोगिता का आयोजन 21 नवम्बर 2010 को किया जा रहा है। भजन-गीत गायन प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बालक एवं बालिकाएँ भाग ले सकते हैं। प्रतिभागी को आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा रचित अथवा उन पर रचित कोई एक श्रेष्ठ गीत, भजन या काव्य कण्ठस्थ करना होगा तथा प्रतियोगिता के दौरान मंच पर सुर, लय और हावभावों के साथ प्रभावी प्रस्तुति देनी होगी। भाषण प्रतियोगिता में प्रतिभागी को आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर 5 से 6 मिनिट का भाषण देना होगा। जो शाखाएँ या उपशाखाएँ इन

प्रतियोगिता का आयोजन कराना चाहती है वे निम्नांकित पते पर सम्पर्क स्थापित करें तथा प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक प्रतिभागी स्थानीय अध्यक्ष, मंत्री, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल के पदाधिकारी से सम्पर्क स्थापित करें। - *विरदराज सुराणा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, दुकान नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 0141-2575997, 2571163, फैक्स-0171-2570753, मो. 9314012415*

देश भर के 180 स्थानों पर पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा संत-सतियों के चातुर्मास से वंचित क्षेत्रों में स्वाध्यायियों को भेजकर पर्वाराधना का कार्यक्रम प्रतिवर्ष सम्पन्न करवाया जा रहा है। इस वर्ष भी देश भर के 180 क्षेत्रों में लगभग 450 स्वाध्यायियों द्वारा पर्युषण पर्वाराधना का कार्यक्रम साधना-आराधना के साथ उल्लासपूर्वक मनाया गया। दक्षिण के चेन्नई, सईदापेठ, आवड़ी, चिंतादरी पेठ, आलन्दुर, महाराष्ट्र के मुम्बई, विक्रोली, सिल्लोड़, नागपुर, वर्धा, चांदूर रेलवे, मध्यप्रदेश के ग्वालियर, बेरछा, बैतुल, विदिशा, जबलपुर, पोरवाल, पल्लीवाल, मारवाड़ एवं मेवाड़ के विभिन्न क्षेत्रों के साथ ही कोलकाता, वाराणसी, जयपुर, देहरादून तथा अन्य सभी क्षेत्रों में पर्वाधिराज में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह प्रमोदजन्य रहा।

मैसूर में अध्यात्म-चेतना आयाम

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में अ.भा. श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल के तत्त्वावधान में 3 दिवसीय 'अध्यात्म-चेतना आयाम' का आयोजन दिनांक 17 से 19 सितम्बर 2010 तक किया गया। शिविर में जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, पीपाड़ सिटी, बैंगलोर, चेन्नई, मुम्बई, कोलकाता, जलगाँव, हुब्बली, मैसूर आदि क्षेत्रों से लगभग 130 श्राविकाओं ने भाग लिया। श्री शांतिलाल जी डूंगरवाल-बैंगलोर, श्री अशोक जी कवाड़-चेन्नई, श्री राजेन्द्र जी जैन-ईरोड एवं श्री राकेश जी जैन-बैंगलोर ने अध्यापन कार्य हेतु अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान कीं। शिविर काल में महासती मण्डल का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। शिविर में सुखविपाक सूत्र, छः आरे का थोकड़ा, आत्मारंभी-परारंभी का थोकड़ा, बच्चों को सुसंस्कारित कैसे बनाया जाये, श्रमण उपासना विधि, प्रतिलेखन करने की विधि आदि विषयों पर प्रकाश

डाला गया। कई श्राविकाओं ने कक्षाओं से प्रेरित होकर 3 दिन विहार सेवा, आहार आदि में विवेक, 5-5 बच्चों को सुसंस्कारित करने, पैकिंग आदि आडम्बर नहीं करने, अपने-अपने क्षेत्र में शिविर लगाने, लेदर-सिल्क-कॉस्मेटिक्स आदि मांसाहार से युक्त वस्तुओं के प्रयोग का त्याग, महीने में 6 संवर करने सहित छोटे-बड़े 250 प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

मुम्बई में आचार्य श्री रामेश हॉस्टल

उच्च शिक्षा प्राप्त हेतु मुम्बई आने वाली छात्राओं की सुविधा हेतु मानसरोवर कामोठे (पनवेल, नवी मुम्बई) में मीना रांका फाउण्डेशन, मुम्बई द्वारा निर्मित आचार्य श्री रामेश हॉस्टल का उद्घाटन 19 सितम्बर 2010 को राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने किया। आधुनिक सुविधाओं से युक्त हॉस्टल के चार मंजिले भवन में 52 कमरे एवं 108 छात्राओं के रहने की व्यवस्था है। प्रत्येक दो कमरों के साथ टॉयलेट, बाथरूम तथा ड्रेसिंग रूम है। डाइनिंग हॉल एवं रसोईघर के अलावा योग कक्ष, पुस्तकालय एवं इण्टरनेट की भी सुविधा है। यह छात्रावास सेवाभावना को ध्यान में रखकर बनाया गया है, जिसका उद्देश्य लाभ कमाना नहीं है। छात्रावास में अध्ययन के लिए प्रवेश पूरे वर्ष खुला रहेगा। सम्पर्क सूत्र-मीना रांका फाउण्डेशन, मुम्बई, फोन नं. 022-28802364

प्राकृत एवं अपभ्रंश में सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा मान्यता प्राप्त 'पत्राचार प्राकृत सर्टिफिकेट पाठयक्रम' एवं 'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' में प्रवेश योजना निम्न प्रकार है:-

प्राकृत सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि : 1 जनवरी 2011 से 31 दिसम्बर 2011

अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम अवधि : 1 जनवरी 2011 से 31 दिसम्बर 2011

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति इसमें प्रवेश ले सकता है। आवेदन पत्र व नियमावली अकादमी कार्यालय से निःशुल्क 15 अक्टूबर 2010 से प्राप्त की जा सकती है। शुल्क-सहित आवेदन पत्र अकादमी कार्यालय में पहुँचने की अन्तिम तिथि 15 दिसम्बर 2010 होगी। सम्पर्कः- निदेशक, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-302004। *-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक*

जैनधर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान भट्टारकजी की नसियाँ सवाई रामसिंह रोड़, जयपुर-4 द्वारा निर्धारित उपर्युक्त पाठ्यक्रम भारत स्थित उन अध्ययनार्थियों के लिए होगा जिन्होंने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसका माध्यम हिन्दी भाषा होगा। पाठ्यक्रम का सत्र 1 जनवरी 2011 से 31 दिसम्बर 2011 तक रहेगा। निर्धारित आवेदन-पत्र जयपुर के उपर्युक्त कार्यालय से मंगवाकर 15 दिसम्बर 2010 तक भेजें। प्रवेश-अनुमति मिलने पर पाठ्यक्रम का शुल्क 310/रुपये ड्राफ्ट द्वारा भेजना होगा। *-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, निदेशक*

बाईपास सर्जरी को अलविदा कर काउण्टर पल्सेशन थैरेपी अपनाइए

जोधपुर- हृदय की कोरोनरी धमनियों में रुकावट की वजह से हृदय को ऑक्सीजन पर्याप्त नहीं मिलती एवं हृदयरोग उत्पन्न हो जाता है। प्रायः डॉक्टरों द्वारा एंजियोप्लास्टी, बाईपास सर्जरी एवं दवाइयों से इसकी चिकित्सा की जाती है। किन्तु प्रयोगों के आधार पर सिद्ध हुआ है कि काउण्टर पल्सेशन थैरेपी (ई.ई.सी.पी.) हृदयरोगियों के लिए रामबाण इलाज है, जिसमें किसी भी प्रकार की शल्यक्रिया नहीं की जाती है। यह इलाज पूर्णतया दर्द रहित होने के साथ शरीर पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं छोड़ता है। यह थैरेपी हृदय की मांसपेशियों एवं कोशिकाओं में रक्त संचार बढ़ाकर उनमें पर्याप्त रक्त पहुँचाती है। 10 में से 8 रोगियों को ई.ई.सी.पी. लेने के बाद बाइपास या एंजियोप्लास्टी नहीं करवानी पड़ती है। हृदयरोगी को साधारणतया 35 दिनों तक प्रतिदिन एक घंटे की थैरेपी दी जाती है। यह आवश्यक है कि सेण्टर द्वारा तय समय पर रोगी प्रतिदिन थैरेपी ले। इस थैरेपी से सुप्त रक्त धमनियाँ क्रियाशील होती हैं। इस थैरेपी का कोई दुष्प्रभाव नहीं है तथा कीमत भी कम है। भारत में वर्तमान में 100 केन्द्रों पर 115 मशीनें स्थापित है। राजस्थान के जोधपुर में 'समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेण्टर' इस पद्धति द्वारा इलाज का प्रथम एवं सफल केन्द्र है। चारित्र आत्माओं के लिए निःशुल्क रोग-परीक्षण एवं उपचार के दौरान बिना चीर फाड़ के सभी प्रकार की अनुकूल सुविधाओं की व्यवस्था भी उपलब्ध है। सम्पर्क सूत्र- धीरेन्द्र कुम्भट, समर्पण हार्ट एण्ड हैल्थ केयर सेण्टर, ए-12, इण्डस्ट्रियल एस्टेट, उद्योग भवन के पास, न्यू पावर हाउस रोड, जोधपुर (राज.), फोन नं. 0291-2432525, ईमेल-

info@samarpanjodhpur.com

युवा पीढ़ी पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

मोक्षद्वार ज्ञान पत्रिका बैंगलुरु द्वारा अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय है- **'आज की युवा पीढ़ी धर्म से विमुख क्यों? कारण और निवारण'**। निबन्ध की शब्द सीमा 1000 से 1500 शब्द रखी गई है। 15 से 45 वर्ष की आयु वाले युवा इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं। निबन्ध को फुल स्केप साइज लाइनदार पेपर पर एक तरफ हाशिया छोड़कर, साफ-स्वच्छ एवं सुन्दर हस्तलिपि में लिखना होगा। प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार 1100/-, द्वितीय पुरस्कार 700/-, तृतीय पुरस्कार 500/- तथा 200/- के चार प्रोत्साहन पुरस्कार रखे गये हैं। निबन्ध भेजने का पता- साधारण डाक द्वारा भेजने के लिए- 1. Gautamchand Ostwal, Editor- Moksh-Dwar Gyan Patrika, J-91, 9th Cross, Ist Floor, L.N. Puram, Srirampuram, Bangalore-560021 (K.T.) Mob. 9448180661, कोरियर एवं स्पीड पोस्ट द्वारा भेजने के लिए-2. Nirmala Jain "Lalkar", J-113, IInd Floor, 10th Cross, L.N. Puram, Bangalore-21, Ph. 080-23328512

संक्षिप्त-समाचार

बालोतरा- नाकोड़ा तीर्थ ट्रस्ट की 28 अगस्त को आहूत बैठक में सर्वानुमति से श्री नैनमल जी भंसाली, एडवोकेट, बाडमेर को सर्वानुमति से अध्यक्ष निर्वाचित किया गया है। श्री भंसाली जी अखिल भारतीय खरतरगच्छ संघ के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं विभिन्न जैन सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। कोषाध्यक्ष पद पर चौहटन निवासी डॉ. मोहनलाल जी डोसी का निर्वाचन भी सर्वानुमति से हुआ।

मण्डी डबवाली- मन्दबुद्धि एवं गूंगे-बहरे बच्चों की सेवा में समर्पित श्री महावीर जैन संस्थान मण्डी डबवाली (हरियाणां) के प्रांगण में तृतीय वार्षिक समारोह होम्योपैथिक चिकित्सा केम्प के साथ आयोजित हुआ। विकलांग बच्चों को मोमबती, चाक, डिब्बे, कापी, पैड आदि बनाना सिखाया गया।

कोलकाता- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, कोलकाता अध्यात्म चेतना वर्ष में अनेकविध गतिविधियों में सक्रिय है। प्रत्येक रविवार को सामूहिक रूप से भक्तामर एवं प्रार्थना, प्रत्येक अष्टमी एवं चतुर्दशी को सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय, दो से तीन बजे तक नवकार मंत्र का जाप तथा शाम को प्रतिक्रमण किया जाता है। प्रतिमाह चतुर्थ शुक्रवार को स्वाध्याय भजन एवं प्रश्नोत्तर होते हैं। एक

दिन कुष्ठ रोगियों की सेवा एवं जरूरतमन्दों को दवाई, फल और मिठाई वितरित की गई। रक्तदान शिविर में 40 व्यक्तियों ने रक्तदान किया तथा विकलांगों को 40 कृत्रिम पैर महावीर सेवासदन की ओर से लगवाए गए। एक मेडिकल जाँच शिविर लगाया गया। गुरु हस्ती दिवाकर जैन सेवा समिति की ओर से साधु-साध्वियों के उपकरणों की पूर्ण व्यवस्था है। पूर्व भारत में यह ऐसी एकमात्र संस्था है तथा महावीर सदन में संचालित है, जिसका सम्पर्क सूत्रः 098312-54044 है।

सिकन्द्राबाद- आचार्य हस्ती जन्मशताब्दी अध्यात्म चेतना वर्ष एवं श्री नन्दलाल म.सा. की पुण्य स्मृति में यहाँ 800 भिक्षुदया का चिरस्मरणीय आयोजन हुआ। उपप्रवर्तक श्री गौतममुनि जी 'प्रथम' की प्रेरणा से आयोजित भिक्षुदया में युवापीढ़ी एवं नन्हें बालक अधिक संख्या में उपस्थित थे।

भोपाल- क्रान्तिकारी सन्त मुनि श्री तरुणसागर जी के सान्निध्य में मध्यप्रदेश के राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर के कर-कमलों से वर्ष 2010 का प्रथम तरुण क्रान्ति पुरस्कार दैनिक भास्कर ग्रुप के चैयरमेन श्री रमेश अग्रवाल एवं पहली महिला आई.पी.एस. डॉ. किरण बेदी को दिया गया। इस पुरस्कार में 51 हजार रु की सम्माननिधि, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किए जाते हैं।

नागपुर- व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. के चातुर्मास पश्चात् उनकी प्रेरणा से यहाँ प्रत्येक रविवार को वर्द्धमान नगर एवं इतवारी स्थानक में बारी-बारी से सामायिक-स्वाध्याय का कार्यक्रम प्रारम्भ किया था। प्रारम्भ में 30-40 की संख्या थी, जो अब 150 तक पहुँच गई है। बच्चे भी अच्छी संख्या में आते हैं।

जबलपुर- 17 नवम्बर 2010 को समस्त बाघमार परिवार का अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। सम्पर्क सूत्र-सम्पतलाल बाघमार, फोन नं. 0761-4036933, मदनलाल जी बाघमार- मो. 09425324624

बधाई/चुनाव

उदयपुर- डॉ. उदयचन्द जैन, पूर्व एसोशिएट प्रोफेसर, मोहनलाल सुखाडिया

विश्वविद्यालय, उदयपुर को प्राकृत साहित्य-सेवा हेतु भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई है। डॉ. जैन 2007 में विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त होकर साहित्य-साधना में निरत हैं। उनके निर्देशन में 30

शोधछात्रों ने पी-एच्.डी. उपाधि प्राप्त की है तथा उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप पूर्व में अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हो चुके हैं तथा प्राकृत के आशुकवि एवं सुयोग्य लेखक हैं।

जोधपुर- श्री नयन पारख सुपुत्र श्री सुभाष-बेला पारख व सुपौत्र स्व. श्री पारसमल

जी पारख 'प्रसून' ने सी.ए. इण्टर परीक्षा 33वीं रैंक के साथ उत्तीर्ण की। श्री नयन पारख श्रीमती कुसुम-डॉ. पी.एम. कुम्भट के दौहित्र हैं, डॉ. कुम्भट अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के पूर्व मंत्री हैं।

ब्यावर- श्री सौरभ संचेती सुपुत्र श्री इन्दरचन्द जी संचेती ने सी.ए. एवं सी.एस.परीक्षा प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण करते हुए सी.एस. में राष्ट्रीय स्तर पर 14 वीं रैंक प्राप्त की है।

बैंगलोर- जैन युवा संगठन की नई कार्यकारिणी में श्री सज्जनराज जी मेहता को अध्यक्ष, श्री महावीर जी गोटावत को उपाध्यक्ष तथा श्री सुरेश जी धोका को सर्वसम्मति से मंत्री निर्वाचित किया गया है।

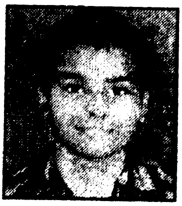

जयपुर- श्री हिमांशु जैन सुपुत्र श्री सोहनलाल जी जैन, अलीगढ़ (टोंक) का बिड़ला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड साइंस, पिलानी में प्रवेश हुआ है। उन्होंने सी.बी.एस.ई. की 12वीं की परीक्षा में भी विद्यालय में उच्च स्थान प्राप्त किया है।

पाली- श्री राहुल गांग पुत्र श्री मनोज जी गांग ने अध्यात्म चेतनावर्ष में 12 वर्ष की उम्र में प्रतिक्रमण सीखा एवं पर्युषण में लगभग 500 श्रावकों को बुलन्द एवं ओजस्वी वाणी से सामूहिक प्रतिक्रमण कराया।

डूणी- श्री अरिहन्त गोखरू सुपुत्र श्री अरविन्द जी गोखरू ने 12 वर्ष की वय में पर्युषण पर्व पर चार दिन प्रतिक्रमण करवाया। प्रत्येक माह पक्खी का प्रतिक्रमण स्थानक में अरिहन्त जी कराते हैं। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की चौथी की परीक्षा आपने उत्तीर्ण कर ली है।

श्रद्धाञ्जलि

उदयपुर- श्रमणसंघ के वरिष्ठ सन्त सलाहकार श्री रतनमुनि जी का लुधियाना (पंजाब) में 94 वर्ष की वय में स्वर्गगमन हो गया। उन्होंने तपश्चर्या एवं दीर्घकालीन संयम साधना से सन्त-जगत् में विशिष्ट स्थान बनाया था।

नागपुर- धर्मनिष्ठ श्राविकारत्न श्रीमती शान्तिदेवी जी बोहरा धर्मपत्नी स्व. श्री

घीसूलाल जी बोहरा मूल निवासी पीपाड़ (राज.) हाल निवास-नागपुर का 85 वर्ष की वय में 13 सितम्बर 2010 को प्रातः प्रतिक्रमण एवं क्षमायाचना के पश्चात् देवलोक गमन हो गया। नियमित रूप से सामायिक एवं प्रतिक्रमण तथा रात्रि चौविहार-त्याग करने वाली श्राविका का जीवन सेवाभावना, सरलता, सादगी आदि गुणों से समन्वित था। व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सन् 2009 के चातुर्मास में आपने अग्रणी रूप से लाभ लिया। मरणोपरान्त आपके नेत्र दान किए गए हैं। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री अशोकजी, राजेन्द्र जी, दिलीप जी, मनोज जी एवं विजय जी का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

चेन्नई- संघसेवी गुरुभक्त सुश्रावक श्री मांगीलाल जी कोठारी का 16 सितम्बर 2010 को संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। आपकी आचार्यप्रवर हीरा एवं उपाध्यायप्रवर मान तथा संत-सतीवृन्द के प्रति अटूट आस्था थी। आप साध्वीप्रमुखा शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सांसारिक बहनोई थे। आप एवं सुश्राविका श्रीमती लाडबाई जी प्रायः प्रतिवर्ष गुरुदर्शन हेतु मारवाड़ आया करते थे एवं स्वास्थ्य की अनुकूलतानुसार साध्वीप्रमुखा जी म.सा. की सेवाभक्ति में रहकर साधना-आराधना में पुरुषार्थ करते थे।

बालोतरा- सुश्राविका श्रीमती सरजुदेवी लूणिया धर्मपत्नी श्री लालचन्द जी

लूणिया का 4 सितम्बर 2010 को 81 वर्ष की वय में संथारापूर्वक स्वर्गगमन हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका का सम्पूर्ण परिवार आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति श्रद्धासमर्पित है। स्व. श्री लालचन्द जी ने संवत् 2049 के चातुर्मास में अच्छी सेवाएँ दी थी। सुपुत्र श्री सुरेन्द्रकुमार जी लूणिया भी संघ सेवा में तत्पर रहते हैं।

चोरू- सुश्राविका श्रीमती सुशीला जी जैन धर्मपत्नी श्री हरकचन्द जी जैन,

अध्यापक का 57 वर्ष की वय में 31 जुलाई 2010 को देहावसान हो गया। आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की 14 कक्षा उत्तीर्ण श्राविकारत्न को एक बार स्वर्णपदक भी प्राप्त हुआ। वे वरिष्ठ अध्यापिका के रूप में अलीगढ़ (टोंक)में कार्यरत थीं। नियमित सामायिक, नवकारसी एवं रात्रि-भोजन का त्याग करने वाली श्राविका अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

शहादा (नन्दुरबार)- सुश्रावक श्री राजेन्द्रकुमार जी विनायकिया सुपुत्र श्री

भंवरलाल जी विनायकिया का 45 वर्ष की वय में 22 अगस्त 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। आप मृदुभाषी, सरलस्वभावी एवं मिलनसार थे। तीन दिन पूर्व ही उन्होंने धर्मपत्नी श्रीमती आशाजी के साथ तेले की तपस्या की थी।

नाई-उदयपुर- श्री रमेशकुमार जी वया सुपुत्र स्व. श्री रतनलाल जी वया का 45 वर्ष की उम्र में 11 अगस्त 2010 को देहावसान हो गया। वे अल्पभाषी, विनम्र एवं परोपकार की भावना वाले व्यक्ति थे। उनके पिताश्री की आचार्य हस्ती पर अनन्य श्रद्धा थी।-शान्तिलाल मेहता

नागपुर- समाजसेवी उदारहृदय श्री शक्तिकुमार जी संचेती का 68 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया। 'भाऊ' के नाम से लोकप्रिय संचेती जी मिलनसार, हंसमुख एवं सौजन्यशील व्यक्तित्व के धनी थे। आपने कई संस्थाओं का नेतृत्व एवं मार्गदर्शन किया।

जयपुर- सुश्रावक श्री धीरेन्द्र कुमार जी बांठिया का 2 सितम्बर 2010 को अल्पायु में देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ थे। आप श्री विनयचन्द जी बम्ब साहब के दामाद थे।

जयपुर- सुश्रावक श्री प्रेमचन्द जी ढड्ढा, चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट का 9 सितम्बर 2010 को स्वर्गवास हो गया। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित थे तथा सन्त-सतियों की सेवा में अग्रणी रहते थे। आपकी धर्मसहायिका श्रीमती चन्द्रा जी ढड्ढा भी धर्मनिष्ठ एवं कर्तव्यपराण श्राविका हैं।

जोधपुर- श्रीमती अनिता जी लूंकड़ धर्मपत्नी श्री उत्सवराज जी लूंकड़ का 62 वर्ष की वय में 29 अगस्त 2010 को देहान्त हो गया। आपका जीवन सहज, सरल, एवं सेवाभावना, विनम्रता तथा सादगी से युक्त था। आप रत्नसंघ के सुश्रावक श्री

जौहरीमल जी खींवसरा की सुपुत्री थी।

अजमेर- श्रीमती मैनाबाई कटारिया धर्मपत्नी श्री छोटमल जी कटारिया का 85 वर्ष की आयु में 23 सितम्बर 2010 को स्वर्गवास हो गया। सामायिक-साधना के प्रति समर्पित श्राविकारत्न ने अपने जीवनकाल में चार अठाइयाँ, एक सात की तपस्या तथा 30 तेले किए। 45 वर्ष तक शीलव्रत के पालन के साथ 30 वर्षों तक चौविहार-त्याग का पालन किया। श्राविकरत्न सहित सारा कटारिया परिवार आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द के प्रति पूर्ण श्रद्धा समर्पित है। कटारिया परिवार के चार सदस्य संघ के विभिन्न पदों पर कार्य करते हुए सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। रत्नसंघ की महासती श्री कौशल्या जी म.सा. की आप सांसारिक पक्ष में बड़ी माँ थी। पिछले पाँच वर्षों से वृद्धावस्था के कारण आप अस्वस्थ थीं। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

तिरुपति- संघसेवी सुश्राविका श्रीमती मैनाबाई जी चौधरी धर्मपत्नी श्री सागरमल जी चौधरी (पूर्व अध्यक्ष, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ ट्रस्ट, तिरुपति) का 52 वर्ष की आयु में 30 अगस्त 2010 को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। धर्मनिष्ठ श्राविका नवकारसी, रात्रि-भोजन त्याग, पाँच तिथि को स्नान-त्याग, नित्य पाँच सामायिक, सायंकाल प्रतिक्रमण आदि का आचरण करती थीं। धर्मप्रेमी, सेवाभावी, वात्सल्यमूर्ति एवं सरलहृदया श्राविका अपने पीछे भरापूरा संस्कारशील परिवार छोड़कर गई हैं।

इन्दौर- मूलतः डेह जिला नागौर निवासी धर्मनिष्ठ सुज्ञ सुश्रावक श्री सागरमल जी बेताला सुपुत्र स्व. श्री हरकचन्द जी बेताला का 13 अगस्त 2010 को आकस्मिक निधन हो गया। आप यथानाम धीर-वीर एवं गम्भीर होने के साथ धर्म पर अटूट श्रद्धावान थे। आपने 14 वर्षों तक जानकी नगर, इन्दौर के अध्यक्षीय पद को सुशोभित किया तथा तन, मन एवं धन से सेवा की। आपने धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में अनेक पदों पर निष्ठा से कार्य किया। आप अपने पीछे धर्मनिष्ठ परिवार छोड़कर गए हैं।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

11000/- जिनवाणी की आजीवन-स्तम्भ सदस्यता हेतु प्रत्येक

199 Shri Atish P. Jain ji, Opp. Jain Trading, SHIRPUR (M.H.)

3000/- साहित्य की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

721 SHRI SANDESH JI MALWI, Subhash Marg, Ratlam (M.P.)
722 SHRI PRASHANT KUMAR JI JAIN, V&P-Khoh, Alwar (Raj.)

500/- जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

12753 श्री अगरचन्द जी बालोता, 19, मोहन मेन्शन, गुजराती कटला, पाली (राजस्थान)
12754 श्री महेन्द्रकुमारजी जैन,सी-283,विवेकविहार,फेज-1,बालाजी मन्दिर के पास, दिल्ली
12755 श्री प्रकाशचन्द जी आलीजार (जैन), वैशाली, सदर बाजार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12756 श्री प्रकाशचन्दजी नाहटा,सेठ निहालचन्द कॉम्पलेक्स,गोरखपुर बाजार,जबलपुर(म.प्र.)
12757 श्रीमती रजनी जी गुगालिया, मोटर मित्र, बस स्टेण्ड के पास, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12758 श्री राजेन्द्र कुमार जी बाघमार, मेन रोड, गोरखपुर बाजार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12759 श्री पुखराज जी मेहता, छोटी बजरिया, इन्दिरा गाँधी वार्ड, गढ़ा, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12760 श्री राजेन्द्र कोठारी (जैन), माणक चौक, मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)
12761 Shri K.Goatham Chand ji Makana,Bangalore(Karnataka)
12762 श्री संदीपकुमारजी बागरेचा, पुलिस कमिश्नर लाइन, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात)
12763 श्री स्वतन्त्र कुमार जी जैन, मिश्रपुरा बाजार, जगरावा, जिला–लुधियाना (पंजाब)
12764 श्री अशोक जी खिंवसरा, वक्रतुण्ड पैलेस, टेंक रोड, भाण्डुप (वेस्ट), मुम्बई (महाराष्ट्र)
12765 श्रीमती गीता जी जैन, 577, जे.पी. नगर, जालन्धर (पंजाब)
12766 श्री संदीप के. कोचर, मु.पोस्ट–पालखेड, तालुका–निफाड, जिला–नाशिक (महाराष्ट्र)
12767 श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, विश्वकर्मा नगर द्वितीय, दुर्गापुरा, जयपुर (राजस्थान)
12768 श्री सम्पतराजजी सुराणा, ओम्पलिक टॉवर,तृतीय मंजिल, स्टेशन रोड़, जोधपुर (राज.)
12769 श्री जयचन्दजी लोढ़ा,मुथा कॉम्पलेक्स, गुरुवार पेठ,पोस्ट–अम्बाजोगई,बीड़ (महाराष्ट्र)
12770 श्री संदीप जी ढढ्ढा, सी-235, दयानन्द मार्ग, तिलक नगर, जयपुर (राजस्थान)
12771 श्री मयूरजी सुराणा, सुवर्ण सोसायटी के पास, आर्टिलरी सेन्टर रोड, नाशिक (महाराष्ट्र)
12772 Smt. Mamata R. Nahar ji, Andheri (W) Mumbai (Mah.)
12773 Shri Surendera Singh ji Mehta, Secundrabad (A.P.)
12774 Shri RamnikLal ji Runwal,Station Road,Bijapur(Karnat.)
12775 श्री संदीप कुमार जी सिंघवी, सोजत ऑयल, रायपुर (छत्तीसगढ़)
12776 Smt. Preeti K. Navalakha ji, Model Colony, Puna (M.H.)
12777 श्री भव्य जी लोढ़ा, ए-28, सागर विहार कॉलोनी, वैशाली नगर, अजमेर (राजस्थान)
12778 श्री शुभम् जी खिंवसरा, पोस्ट–मांडल, तालुका–अमलनेर, जिला–जलगाँव (महाराष्ट्र)
12779 Shri Bhairomal ji Bhandari, Bangalore (Karnataka)
12780 Shri Vinod ji Jain, Chamrajpet, Bangalore (Karnataka)

12781 Shri Akshya ji Gandhi, Bangalore (Karnataka)
12782 Shri Mangi Lal ji Songegara, Bangalore (Karnataka)
12783 श्री प्रमोद जी भंडारी, पी.एम. 180, सारे कुटीर, सी.एच.बी.,ईस्ट मुम्बई (महाराष्ट्र)
12784 Shri Prakash Mal ji Chhailani, Chennai (Tamilnadu)
12785 Shri SunilKumar ji Ambad,Hoodi,Bangalore (Karnataka)
12786 श्री प्रियंकजी भंडारी,सेन्चूरी टॉवर ग्रांड भगवती के पीछे,बोडकदेव,अहमदाबाद (गुज.)
12787 श्री सौरभ जी बोथरा, 88 जैन स्ट्रीट, सर्राफा बाजार, जोधपुर (राजस्थान)
12788 श्री महेश जी सुराणा, 811, वाचनालय स्ट्रीट, डागा बाजार, जोधपुर (राजस्थान)
12789 श्री देवेन्द्र जी लूणावत, बी-28, सुभाष नगर, पाल रोड़, जोधपुर (राजस्थान)
12790 श्री प्रकाश जी मेहता, रावतों का बास, जोधपुर (राजस्थान)
12791 श्री नमन जी कुम्भट, 11, पोलो प्रथम पावटा, जोधपुर (राजस्थान)
12792 श्री नवीन जी मेहता, शुभ होम टॉवर, सेक्टर 20, खारघर, नई मुम्बई (महाराष्ट्र)
12793 Shri Ashok Kumar ji Gandhi, Kasbe Sukena (M.H.)
12795 Shri Kishore Mal ji Chhajer, Gandhinagar (Gujarat)
12796 Shri Kishore Mal ji Chhajer, Gandhinagar (Gujarat)
12797 Shri B. Uttam Chand ji Daga, Tirubvannamalai (T.N.)
12806 श्री योगेशजी जैन, गुलाब बाग,पुलिस लाईन के सामने, बजरिया, सवाईमाधोपुर (राज.)
12807 श्री रत्नेश जी जैन, नसिया कॉलोनी, गंगापुरसिटी, जिला–सवाईमाधोपुर (राजस्थान)
12808 श्री वर्द्धमान जैन स्थानकवासी श्री संघ, पोस्ट–गरोठ, जिला–मन्दसौर (मध्यप्रदेश)
12809 Shri Kiranrajji Solanki,Nr.Bhatar Char Rasta, Surat .
12810 Shri Ugam Raj ji Jain, Allandur, Chennai (Tamilnadu)

44 सदस्य अर्द्धमूल्य योजना श्री उत्तमचन्द जी भंडारी, बेंगलोर के सौजन्य से

12794 श्री देवेन्द्रकुमार जी डागा, 1/367, विद्याधर नगर, शिव मंदिर के पास, जयपुर (राज.)

अर्द्धमूल्य योजना श्री मदनलाल जी बाघमार, जबलपुर के सौजन्य से

12798 श्री एम. एम. जालोरी जी, 116, टेगोर नगर, ग्वारीघाट रोड, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12799 श्री पारसमल जी चौपड़ा, मेन रोड, गोरखपुर बाजार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12800 श्री मूलचन्दजी पींचा, बस स्टेण्ड के पास, पोस्ट–कटंगी,जिला–बालाघाट (मध्यप्रदेश)
12801 श्री संतोष कुमार जी पारख, छुईखदान, जिला–राजनान्दगाँव (छत्तीसगढ़)
12802 श्री राजेन्द्र जी सुराणा, सनातन धर्म मन्दिर के पास, गोरखपुर, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12803 श्री बिरदीचन्द जी चौपड़ा, मेन रोड, गोरखपुर बाजार, जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12804 श्री मंगलचन्दजी चौपड़ा,शारदा टाकिज के पास,गोरखपुर बाजार,जबलपुर (मध्यप्रदेश)
12805 श्री गौतमचन्दजी बोथरा, 705/एल,नेपीयर टाऊन,चौथे पुल के पास, जबलपुर (म.प्र.)

जिनवाणी हेतु साभार

5100/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजन जी बाघमार, मैसूर श्री सोहनलाल जी बाघमार एवं परिवार द्वारा महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के सान्निध्य में तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

5000/- श्री बसन्त जी मुणोत, मुम्बई, अपनी माताजी स्व. श्रीमती मोहनीबाई धर्मपत्नी स्व. श्री

जौहरीमल जी मुणोत की पुण्यतिथि पर उनकी स्मृति में भेंट।

4500/- श्री संघ, मुम्बई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास स्थल पाली में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2111/- श्री रूपकुमार जी, आशीष जी, धर्मेश जी चौपड़ा, कवासवाले, श्री आशीष जी सुपुत्र श्री रूपकुमार जी, श्रीमती कविता धर्मपत्नी श्री आशीष जी, श्री पुनीत जी सुपुत्र श्री रूपकुमार जी, श्रीमती अनिता धर्मपत्नी श्री धर्मेश जी, श्रीमती अनिता धर्मपत्नी श्री अरविन्द जी सालेचा सभी के अठाई के तप करने के उपलक्ष्य में भेंट।

2101/- श्री मदनलाल जी शकुनदेवी जी, राजेश जी मधु जी, मंजू जी बाघमार, जबलपुर, आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में तथा उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के गोटन में सपरिवार दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री नवरतन जी मुणोत, मुम्बई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास स्थल पाली में दर्शन लाभ प्राप्त करने की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री मंगलचन्द जी, धर्मीचन्द जी, राजेन्द्र कुमार जी भंसाली, चेन्नई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास-स्थल पाली में सपरिवार दर्शन, वन्दन की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री धर्मचन्द जी, कमल कुमार जी, संजयकुमार जी मेहता, दूदू-जयपुर, अध्यात्म चेतना वर्ष में पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में दर्शन, वन्दन की खुशी में सप्रेम भेंट।

2100/- श्री धनराज जी भंडारी सुपुत्र श्री हस्तीमल जी भंडारी, बालोतरा (राज.), श्री धनराज जी भंडारी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती संजुदेवी के सजोड़े आठ की तपस्या के उपलक्ष्य में।

2100/- श्री शांतिलाल जी, राजेशकुमार जी खाबिया, मैसूर, श्री शांतिलाल जी-पुष्पाबाई जी खाबिया के आठ की तपस्या करने के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- श्री अक्षयसिंह जी, महावीर प्रसाद जी, राजेन्द्र कुमार जी, मोहित जी ढाबरिया जयपुर स्व. श्रीमती प्रेमकुँवर जी धर्मपत्नी श्री अक्षयसिंह जी ढाबारिया की द्वितीय पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में भेंट।

1101/- डॉ. विजय कुमार जी, गणेशमल जी संचेती, निफाड, पूज्य मातुश्री श्रीमती बदामबाई जी धर्मपत्नी श्री गणेशमल जी संचेती की द्वितीय पुण्य स्मृति के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री रतनराज जी, नेमीचन्द जी भण्डारी (पीपाड़ वाले), मुम्बई पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास स्थल पाली में दर्शन, वन्दन की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री भवरलाल जी, विनोद जी जैन, रोयापेठ-चेन्नई, आचार्यप्रवर, उपाध्याय प्रवर आदि के दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री मदनलाल जी खिंवसरा, जोधपुर, अपनी सुपुत्री कुमारी सोनु खिंवसरा के 31 की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्री बाबुलाल जी, डालचन्द जी संचेती, चलथान-सुरत, की ओर से पर्युषण पर्व पर भेंट।

1100/- श्री जयन्तीलाल जी, बालचन्द जी चौधरी, धुलिया श्री निर्भय कुमार जी सुपुत्र श्री जयन्तीलाल जी के पुत्ररत्न अवनीश की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री मूलचन्द जी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, सुपौत्र श्री हिमांशु जी जैन सुपुत्र श्री सोहनलाल जी जैन का आई.आई.टी. बिट्स पिलानी में चयन होने एवं केन्द्रिय विद्यालय नं. 1

जयपुर में 12वीं में तृतीय स्थान प्राप्त होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जयन्तीलाल जी, बालचन्द जी चौधरी, धुलिया सौ. प्रीति जी सुपुत्री श्री जयन्तीलाल जी का शुभविवाह दिनांक 06 फरवरी 2010 को चि. कल्पेश जी सुपुत्र श्री महेन्द्र जी नवलखा पूना के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, मण्डावर-महुआ रोड सप्रेम भेंट।

1100/- श्री रामधन जी, नरेन्द्रकुमार जी जैन, इन्दौर, अपनी माताजी श्रीमती धापुबाई जैन के दिनाँक 30.08.2010 को देवलोक गमन होने पर उनकी पावन स्मृति में भेंट।

1100/- श्री नेमीचन्द जी, मुकेशकुमार जी, महेन्द्र कुमार जी बाफना, पो. कुड़ी (भोपालगढ़) जोधपुर, व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. की सुशिष्या तितिक्षा जी म.सा. के मासखमण की तपस्या एवं सुपुत्र श्री मुकेश जी के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/- श्रीमती चन्दलता जी मेहता एवं श्री महावीर प्रसाद जी मेहता, दूदू, गुरु भगवन्त की कृपा से सड़क दुर्घटना में सपरिवार बाल-बाल बचने पर भेंट।

1100/- श्री विरेन्द्रकुमार जी बाठिया, श्रीमती आशा कुमारी जी बाठिया, जयपुर, श्री धीरेन्द्रकुमार जी बाठिया के दिनाँक 02.09.2010 को देहावसान हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1008/- श्री फूलचन्द जी, लड्डूलाल जी, प्रेमचन्द जी, चौथमल जी, प्रकाशचन्द जी, गौतमचन्द जी, महेन्द्र जी जैन, लोधीपुरा-इन्दौर श्रीमती फूलाबाई जी धर्मपत्नी श्री फूलचन्द जी जैन की पुण्य स्मृति में भेंट।

1001/- श्रीमती शोभादेवी जी, स्वरूपचन्द जी मेहता (भोपालगढ़ वाले), मुम्बई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पाली में पर्वाधिराज पर्युषण में दर्शन, वन्दन की खुशी में सप्रेम भेंट।

1001/- श्री सुरेशचन्द जी, मोहनलाल जी मेहता (भोपालगढ़ वाले), मुम्बई, पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदिठाणा के सान्निध्य में पर्वाधिराज की साधना-आराधना करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/- श्रीमती मंजू जी मेहता एवं श्री विरेन्द्र जी मेहता, अमरनगर-जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री अंशुल मेहता के कम्पनी सैक्रट्री में उत्तीर्ण होने पर भेंट।

1000/- श्री प्रकाशमल जी, सुनील कुमार जी, हर्ष जी बोथरा, चेन्नई पूज्य आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के चातुर्मास स्थल पाली में दर्शन, वन्दन की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री ज्ञानचन्द जी, अमरचन्द जी लुणावत, अजमेर, श्रीमती मोनिका धर्मपत्नी श्री विकासचन्द जी डूंगरवाल-थाँवला के अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

1000/- श्री दिलीप जी लोढ़ा, नवसारी, 9 उपवास की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

511/- श्री सुभाष जी पारख, मुम्बई, श्री सुभाष जी एवं श्रीमती बेला जी पारख द्वारा अपने सुपुत्र नयन पारख, सुपौत्र श्री स्व. श्री पारसमल जी पारख 'प्रसून' के सी.ए. इन्टर परीक्षा में 33वीं रैंक प्राप्त होने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री उत्सवराज जी लुंकड़ (S.B.I.), जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अनिता लुंकड़ का स्वर्गवास दिनाँक 29.08.2010 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/- श्री पारसमल जी सुपुत्र स्व. श्री मगराज जी बोहरा, मण्डली, सपरिवार आचार्य प्रवर के पाली चातुर्मास में दर्शन-वंदन का लाभ लेने के उपलक्ष्य में भेंट।

501/- श्री अरूणकुमार जी भंडारी सुपुत्र श्री दशरथमल जी भंडारी, जयपुर, श्रीमती राजकंवर धर्मपत्नी श्री दशरथमल जी भंडारी, अपने सुपुत्र श्री अरूण जी तथा पुत्रवधू श्रीमती कान्ता जी के क्रमशः 31 व आठ की तपस्या आचार्यप्रवर से ग्रहण करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्री विजयराज जी भंसाली पटवा, मैसूर, श्रीमती कमलाबाई जी धर्मपत्नी श्री विजयराज जी पटवा के स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति भेंट।

500/- श्री हर्ष जी जैन, मुम्बई सप्रेम भेंट।

500/- श्री प्रवीण कुमार जी, दुर्गालाल जी रूणवाल, बीजापुर, पूज्य आचार्य भगवन्त के सान्निध्य में पर्वाधिराज पर्युषण पर साधना-आराधना करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

500/- श्री जिनेश कुमार जी जैन, जयपुर, अठाई की तपस्या सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में भेंट।

500/- श्री नेमीचन्द जी, मुकेशकुमार जी, महेन्द्र कुमार जी बाफना, पो. कुड़ी (भोपालगढ़) जोधपुर, व्याख्यात्री महासती श्री सुमति प्रभा जी के भोपालगढ़ चातुर्मास स्वयं द्वारा ली आठ की तपस्या करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती कान्ता जी मेहता धर्मपत्नी स्व. श्री प्रकाशचन्द जी मेहता, जोधपुर, सुश्री श्रद्धा एवं शंशाक सुपौत्र, सुपौत्री स्व. श्री प्रकाशचन्द जी मेहता के क्रमशः नौ तथा आठ की तपस्या करने के उपलक्ष्य में भेंट।

500/- श्रीमती लाडकँवर जी कोठारी, अजमेर, श्री पंकज जी सुपुत्र स्व. श्री नथमल जी कोठारी का दिनांक 07 अगस्त 2010 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर हेतु साभार

3100/- श्री सूरजमल जी भंडारी, चेन्नई, पयुर्षण सहायतार्थ भेंट।

1100/- श्री इन्दरमल जी, मांगीलाल जी पोखरणा, चलथान-सूरत, पर्युषण सहायातार्थ भेंट।

1100/- श्री विजयसिंह जी, अशोक जी चौधरी, चलथान-सूरत, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।

1100/- श्री पप्पुभाई, सुरेश जी, विनोद जी सुर्या, चलथान-सूरत, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।

1000/- श्री मन्नालाल जी, कोशल जी बोथरा, जोधपुर, पर्युषण सहायता भेंट।

1000/- श्री शान्तिमल जी मेहता, की ओर से भेंट।

700/- श्रीमती चूकीकंवर धर्मपत्नी श्री मांगीलाल जी गुलेच्छा 'गिरीवाले', ब्यावर, पर्युषण सहायतार्थ भेंट।

500/- श्री विजय जी मेहता, की ओर से भेंट।

स्वाध्याय संघ को प्राप्त पयुर्षण सहायता

रुपये	स्थान	रुपये	स्थान	रुपये	स्थान
11000	शोरापुर	10000	बैंगलोर	7501	कोलकाता
5100	रत्नागिरी	5100	कुरुक्षेत्र	5001	नागपुर
4100	चिपलुन	4100	बैतूल	3100	चलथान,सूरत
3100	बनारस	2500	करही	2100	गोरखपुर
2100	वागड़ी	2000	पाठरकाठा	1500	बडवानी
1451	बागोद	1100	महारानी फार्म, जयपुर	1100	खांखला
700	दूनी	500	आगोलाई	500	कालुखेड़ा
500	सुमेरगंजमण्डी	500	जूणदा	201	परवैनी

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

60,000/- श्री अशोक जी मरलेचा, बेंगलौर।

24,000/- श्रीमती विमला बाई जी जैन, गुडीयातम(तमि.)।

24,000/- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, कोलकाता।

12,000/- श्रीमती शान्तिदेवी जी पारख धर्मपत्नी स्व. श्री ताराचन्द जी पारख, जोधपुर।

12,000/- श्रीमती कमलाबाई अजीतराज सा सिंघवी, पनरुटी (तमि.)।

12,000/- श्रीमती अकलकंवर जी धर्मपत्नी श्री जगदीशमल जी कोठारी, जोधपुर।

12,000/- श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर।

12,000/- श्रीमती मन्जुला जी जैन, जबलपुर (म.प्र.)।

12,000/- श्रीमती दक्षा जी कवाड़ सुपुत्री श्री हरीश कुमार जी कवाड़, पुन्नमली (चेन्नई), अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अपने द्वारा की गई छोटी-छोटी बचत में से भेंट।

12,000/- श्रीमती दर्शना जी कवाड़ सुपुत्री श्री हरीश कुमार जी कवाड़, पुन्नमली (चेन्नई), अपने जन्मदिवस के उपलक्ष्य में अपने द्वारा की गई छोटी-छोटी बचत में से भेंट।

12,000/- श्री सोहनलाल जी, बुधमल जी, सम्पतराज जी, राजेन्द्रकुमार जी बाघमार, मैसूर, महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा. के चातुर्मास के उपलक्ष्य में भेंट।

संशोधनः- सितम्बर, 2010 की जिनवाणी में श्री प्रकाशचन्द जी, चेन्नई आदि नामों के साथ 'जोशी' छप गया था, उसे 'डोसी' पढ़ा जाए।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य श्री हस्ती स्कॉलर शिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- *श्री अशोक जी कवाड़, 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600008 (Mob. 9381041097)*

आगामी पर्व

आश्विन शुक्ला 8	शुक्रवार	15.10.2010	अष्टमी
आश्विन शुक्ला 14	गुरुवार	21.10.2010	चतुर्दशी
आश्विन शुक्ला 15	शुक्रवार	22.10.2010	पक्खी
कार्तिक कृष्णा 7-8	शनिवार	30.10.2010	अष्टमी, आचार्य श्री गुमानचन्द्र जी म.सा. की 209 वीं पुण्यतिथि
कार्तिक कृष्णा 14	शुक्रवार	05.11.2010	चतुर्दशी, भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक
कार्तिक कृष्णा 30	शनिवार	06.11.2010	पक्खी
कार्तिक शुक्ला 1	रविवार	07.11.2010	वीर संवत् 2537 प्रारम्भ
कार्तिक शुक्ला 5	बुधवार	10.11.2010	ज्ञानपंचमी
कार्तिक शुक्ला 6	गुरुवार	11.11.2010	आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 48 वां दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8	रविवार	14.11.2010	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14	शनिवार	20.11.2010	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15	रविवार	21.11.2010	चातुर्मासिक पक्खी, वीर लोंकाशाह जयन्ती

SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL, JAIPUR

BALANCE SHEET AS ON 31ST MARCH, 2010

PARTICULARS	SCH.	AS ON 31-03-2010		AS ON 31-03-2009	
LIABILITIES :			Rupees		Rupees
CORPUS FUND	1		7,964,302.58		7,562,700.58
EARMARKED FUNDS	2		1,617,966.13		1,617,966.13
SECURED LOANS	3		3,396,649.00		
			12,978,917.71		9,180,666.71
ASSETS :					
FIXED ASSETS	4		2,126,084.64		2,100,387.30
INVESTMENTS	5		4,800,000.00		4,900,000.00
CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES	6	5,478,855.95		1,258,419.15	
Less : CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS	7	13,527.00	5,465,328.95	68,435.00	1,189,984.15
INCOME & EXPENDITURE A/C (Balance as per Account Annexed)			587,504.12		990,295.26
			12,978,917.71		9,180,666.71

AUDITORS REPORT
As per our Report of even date
For N.C. Dhadda & Co.
Chartered Accountants

sd
(S. K. Jain)
Partner
(M. No. 010145)

sd
(CHAIRMAN)

sd
(SECRETARY)

sd
(TREASURER)

Place : Jaipur
Dated : 18.09.2010

SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL, JAIPUR

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31ST MARCH, 2010

PARTICULARS	2009-2010	2008-2009
INCOME :	Rupees	Rupees
PUBLICATION SALES	347,900.00	328,493.00
VOLUNTARY CONTRIBUTIONS RECD.	2,539,519.00	2,314,376.00
INTEREST RECEIVED	317,904.00	428,957.00
SUBSCRIPTIONS	7,630.00	13,450.00
ADVERTISEMENT RECEIPTS	350,150.00	356,269.00
OTHER INCOME	5,250.00	1,260.00
	3,568,353.00	3,442,805.00
Less : EXPENDITURE		
PUBLICATION EXPENSES	2,145,797.70	2,015,928.12
EDUCATIONAL EXPENSES	161,497.00	151,580.50
ESTABLISHMENT EXPENSES	636,460.50	771,838.50
ADMINISTRATIVE EXPENSES	221,806.66	231,091.48
	3,165,561.86	3,170,438.60
EXCESS OF INCOME OVER EXPENDITURE FOR THE YEAR	402,791.14	272,366.40
BALANCE OF INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT BROUGHT FORWARD	(990,295.26)	(1,262,661.66)
CARRIED TO BALANCE SHEET	(587,504.12)	(990,295.26)

AUDITORS REPORT
As per our Report of even date
For N.C. Dhadda & Co.
Chartered Accountants

(S. K. Jain)
Partner
(M. No. 010145)

sd
(CHAIRMAN)

sd
(SECRETARY)

sd
(TREASURER)

Place : Jaipur
Dated : 18.09.2010

JINWANI
UNIT OF SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31ST MARCH 2010

Particulars	2009-2010 Rs	2009-2010 Rs	2008-2009 Rs	2008-2009 Rs
INCOME				
Voluntary Contributions Received	621,418.00			508,665.00
Interest Received	308,221.00			416,418.00
Other Income (Subscription)	7,630.00			13,450.00
Advertisements	350,150.00	1,287,419.00		356,269.00
TOTAL		1,287,419.00		1,294,802.00
EXPENDITURE				
Publication Expenses				
Printing of Publications	1,158,498.68		1,110,166.65	
Freight & Cartage	9,788.00		8,960.00	
Postage & Telephone Expenses	213,900.12	1,382,186.80	186,086.07	1,305,212.72
Establishment Expenses				
Salaries & Wages		168,000.00		150,000.00
Other Administrative Expenses				
Conveyance & Travelling Expenses	631.00		602.00	
Bank Charges	1,270.00		707.00	
Meeting & Felicitation Expenses	13,151.00		41,491.00	
Computer Expenses	2,956.00		1,625.00	
Office Expenses	2,552.00		3,306.00	
Stationery Expenses	-		825.00	
Depreciation	10,538.45	31,098.45	16,705.06	65,261.06
TOTAL		1,581,285.25		1,520,473.78
Surplus/(Deficit) for the year Transferred to Samyag Gyan Pracharak Mandal		.25) (293,866		(225,671.78)

AUDITORS REPORT
As per our Report of even date
For N.C. Dhadda & Co.
Chartered Accountants

sd
(S. K. Jain)
Partner
(M. No. 010145)

sd
(CHAIRMAN)

sd
(SECRETARY)

sd
(TREASURER)

Place : Jaipur
Dated : 18.09.2010

JAIN SIDANTH SHIKSHAN SANSTHAN
UNIT OF SAMYAG GYAN PRACHARAK MANDAL

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED ON 31ST MARCH 2010

Particulars	2009-2010 Rs	2009-2010 Rs	2008-2009 Rs	2008-2009 Rs
INCOME				
Voluntary Contributions Received		500.00		-
Interest Received		-		65.00
TOTAL		500.00		65.00
EXPENDITURE				
Electricity & Water charges	2,054.00		2,210.00	
Mess Expenses	159,443.00	161,497.00	149,370.50	151,580.50
Establishment Expenses				
Staff Welfare	-		1,046.00	
Salaries & Wages	217,000.00	217,000.00	197,070.00	198,116.00
Other Administrative Expenses				
Conveyance & Travelling Expenses	4,215.00		5,605.00	
Expenses for Educational purposes	96.00		1,594.00	
Postage & Telephone Expenses	7,176.00		3,444.00	
Printing and Stationery Expenses	571.00		1,049.00	
Computer Expenses	350.00		150.00	
Office Expenses	1,654.00		6,619.00	
Depreciation	1,356.90	15,418.90	2,791.00	21,252.00
TOTAL		393,915.90		370,948.50
Surplus/(Deficit) for the year Transferred to Samyag Gyan Pracharak Mandal		.90) (393,415		(370,883.50)

AUDITORS REPORT
As per our Report of even date
For N.C. Dhadda & Co.
Chartered Accountants

sd
(CHAIRMAN)

sd
(SECRETARY)

sd
(S. K. Jain)
Partner
(M. No. 010145)

Place : Jaipur
Dated : 18.09.2010

sd
(TREASURER)

अध्यात्म चेतना वर्ष मनाएँ
बारह व्रती बनें
आओ प्रत्याख्यान ग्रहण करें

मान्यवर,

सादर जय जिनेन्द्र!

युगमनीषी युग प्रभावक परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य श्री 1008 **श्री हस्तीमल जी म.सा.** का जन्म-शताब्दी वर्ष पूज्यपाद के सुशिष्य परम पूज्य आचार्यप्रवर **श्री हीराचन्द्र जी म.सा.**, परम पूज्य उपाध्याय प्रवर **श्री मानचन्द्र म.सा.** एवं गुरु भगवंतों तथा पूज्य महासतीवृन्द की प्रेरणा एवं मंगलमय आशीर्वाद से अध्यात्म चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है।

परम पूज्य आचार्य भगवन्त का साधनामय जीवन हमें भी व्रतधारी श्रावक बन कर अपनी अध्यात्म चेतना के रूपान्तरण का संदेश देता है। तीर्थंकर भगवन्तों के श्रावक-श्राविकाओं की गणना व्रतधारी श्रावकों की अपेक्षा से है। जन्मशताब्दी वर्ष के पावन प्रसंग पर हम सब व्रतधारी श्रावक बनें, ज्ञान, दर्शन, चारित्र की साधना में आगे बढ़ें यही हमारी, हमारे आराध्य गुरुवर्य की पावन स्मृति में सच्चा श्रद्धा-समर्पण होगा। हम जीवन पर्यन्त के लिये पूर्ण बारह व्रत ग्रहण कर सकें, यह सर्वश्रेष्ठ होगा, पर कदाचित् प्रारंभ में ऐसा न कर पायें तो-

1. कठिन प्रतीत होने वाले एकाध व्रत के सिवाय शेष व्रत अवश्य अंगीकार करें। युवा साथी भी कम से कम पाँच अणुव्रत अवश्य अंगीकार करें।
2. आगे के व्रतों में प्रारम्भिक तौर पर कुछ आगारों के साथ भी व्रत अंगीकार किये जा सकते हैं।
   (1) पन्द्रह कर्मादान का त्यागः वर्तमान व्यवसाय के अतिरिक्त ऐसे नये व्यापार व्यवसाय का त्याग।
   (2) नवमाँ सामायिक व्रतः अपने ग्राम/नगर में रहते हुए नित्यप्रति एक सामायिक अवश्य करें। किसी दिन न हो सके तो दूसरे दिन पूर्ति करने का लक्ष्य रहे, अन्यथा महीने भर में किसी भी दिन एक से अधिक सामायिक कर पूर्ति अवश्य हो।
   (3) दसवाँ देशावगासिक व्रतः प्रतिदिन प्रातःकाल चौदह नियमों को अपनी शक्ति एवं सामर्थ्य के अनुसार ग्रहण करना तथा तीन मनोरथ का चिन्तन करना।
   (4) ग्यारहवाँ पौषध एवं दया व्रतः वर्ष में कम से कम दो उपवास के साथ रात्रि पौषध या कम से कम दो दया व्रत (कम से कम सात प्रहर की दया) करना।

प्रति वर्ष अपने द्वारा ग्रहण किये गये व्रतों की समीक्षा कर मर्यादा को सीमित कर व्रताराधना में आगे बढ़ने का लक्ष्य रखें।

अध्यात्म चेतना वर्ष कार्यक्रम व व्रताराधन के बारे में कोई भी सहयोग, समाधान या स्पष्टीकरण अपेक्षित हो तो आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति के कार्यकर्ताओं से सम्पर्क करें।

निवेदक

आचार्य श्री हस्ती शताब्दी समिति
एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2636763, 2641445

Gurudev

SURANA™

— yes, the best — TMT RE-BARS

DRI Plant

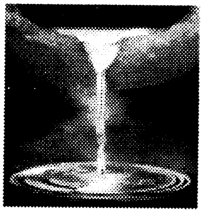

Electric Arc Furnace

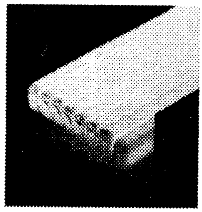

Billets

Rolling Mil

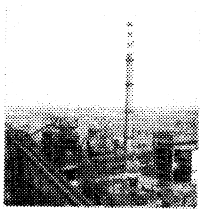

Captive Power Plant

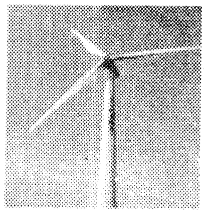

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/
Ph : 044 28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143
Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL | POWER | MINING

जयगुरु हस्ती   जयगुरु हीरा   जयगुरु मान

देते वाले निरभिमानी, पाने वाले हैं आभारी।
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति में, ज्ञानदान की महिमा न्यारी।।

With Best Compliments From :

पारसमल सुरेशचन्द कोठारी

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

प्रतिष्ठान

KOTHARI FINANCERS

23, Vada malai Street, Sowcarpet
Chennai-600079 (T.N.) Ph. 044-25292727
M. 9841091508

BRANCHES :

Bhagawan Motors
Chennai-53, Ph. 26251960

Bhagawan Cars
Chennai-53, Ph. 26243455/56

Balalji Motors
Chennai-50, Ph. 26247077

Padmavati Motors
Jafar Khan Peth, Chennai, Ph. 24854526

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

प्यास बुझाये, कर्म कटाये
फिर क्यों न अपनायें
धोवन पानी

Narendra Hirawat & Co.

Flat No. 1, Building No. 2, Navjeevan Society,
Senapati Bapat Marg, Matunga (West), MUMBAI-400 016

Trin-Trin

Matunga Office : 022-24370713, 24380713, 66669707
Opera House Office : 022-23669818
Mobile : 09821040899

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

GURU HASTI GOLD PALACE

(Govt. Authorised Jewellers) (916. KDM)

22 Ct. Gold ! 24 Ct. Trust !

No. 4 Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 044-26272609, 55666555, 26272906, 55689588

Guru Hasti Bankers :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

N0. 5, Car Street,
Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. 26272906, 55689588

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद्

नैतिक एवं धार्मिक संस्कार शिविर

दक्षिण भारत में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के तत्त्वाधान में शीतकाल में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार शिविरों का आयोजन स्थानीय स्तर पर करवाने के लिए सम्पर्क करावें – **जितेन्द्र डागा**, जयपुर (उपाध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद्) 09829011588, **राजेन्द्र लुंकड़**, ईरोड (संयोजक) 09360025001

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेघावी छात्रवृत्ति योजना

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित

ज्ञान का एक दीया जलाईये,
सहयोग के लिए आगे आईये
आचार्य हस्ती छात्रवृत्ति योजना का
लाभ उठाकर आनन्द पाईये

आदरणीय रत्न बन्धुवर,

आप अपने निकटतम क्षेत्र के सभी गुरु भाईयों के प्रति आदर एवं प्रेम के साथ उनके व्यावहारिक एवं धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि हेतु इस योजना के आवेदन पत्र भरवाकर इस योजना के उद्देश्यों को सफल बनाने में सहयोगी बनें।

छात्रवृत्ति योजना में एक छात्र के लिए रु. 12000/- के गुणक में दान राशि "**Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund**" योजना के नाम चैक/ड्राफ्ट (Donation to Gajendra Nidhi are exempt u/s 80G of Income Tax Act, 1961) देने के लिए निम्नांकित व्यक्तियों से सम्पर्क करें –

1. अशोक कवाड़, चैन्नई (09381041097)
2. सुमतिचन्द मेहता, पीपाड़ (09414462729)
3. महेन्द्र सुराणा, जोधपुर (09414921164)
4. बुधमल बोहरा, चैन्नई (09444235065)
5. राजकुमार गोलेच्छा, पाली (09829020742)
6. मनोज कांकरिया, जोधपुर (09414563597)
7. कुशलचन्द गोटेवाला, सवाई माधोपुर (09460441570)
8. प्रवीण कर्णावट, मुम्बई (09821055932)
9. जितेन्द्र डागा, जयपुर (09829011589)
10. महेन्द्र बाफना, जलगाँव (09422773411)
11. हरीश कवाड़, चैन्नई (09500114455)

सहयोग राशि भेजने, योजना सम्बन्धी अन्य जानकारी एवं आवेदन पत्र प्रेषित करने के लिए निम्न पते पर सम्पर्क करें –

B. Budhmal Bohra

No. 53, Erullappan Street, Sowcarpet, Chennai-600079 (T.N.) • Telefax : 044-42728476

JAI GURU HASTI JAI GURU HEERA JAI GURU MAAN

प्यास बुझाये, कर्म कटाये फिर क्यों न अपनायें धोवन पानी

With best compliments from :

SOHANLAL UMEDRAJ SURENDER HUNDIWAL

S.UMEDRAJ JAIN (HUNDIWAL)
098407 18382
2027 'H' BLOCK 4th STREET,12TH MAIN ROAD,
ANNA NAGAR, CHENNAI-600040
044-32550532

BRANCHES

APPOLO BRIGHT STEELS PVT LTD.
S.P.59, 3 rd MAINROAD
AMBATTUR ESTATE CHENNAI-600058
044-26258734, 9840716053, 98407 16056
FAX: 044-26257269
E-MAIL: appolobright@yahoo.com

APPOLO CORRUGATORS PVT LTD.
NO.400 NORTH PHASE, SIDCO INDUSTRIAL ESTATE,
AMBATTUR CHENNAI-60098
FAX: 044-26253903, 9840716054
E-MAIL:appolocorrugators@yahoo.com

SAPNA PACKAGING INDUSTRIES
NO.410 NORTH PHASE INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR, CHENNAI-600098
044-26241041

PENINSULAR PACKAGINGS
NO.25 SIDCO INDUSTRIAL ESTATE
AMBATTUR CHENNAI-600098
044-26250564

आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या RJ/JPC/M-07/2009-11
वर्ष : 67 ★ अंक : 10 ★ मूल्य : 10 रु.
10 अक्टूबर, 2010 ★ आश्विन, 2067

धोवन पानी - निर्दोष जिन्दगानी

KALPATARU
GARDENS

Offering 2 BHK and E3 Homes apartment with state-of-the-art amenities include a clubhouse with a well equipped gymnasium, swimming pool, squash and badminton court, landscaped gardens, a children's play area and multi-level car parking.

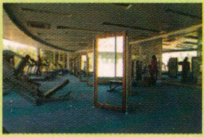

Other Projects:
• Kalpataru Aura - Ghatkopar (W) • Kalpataru Towers, Kandivali (E)
• Kalpataru Riverside, Panvel • Kalpataru Hills, Thane (E) • Srishti, Mira Road

KALPA-TARU®

Site: Kalpataru Gardens, Off Ashok Chakravarty Road, Near Jain Temple,
Kandivali (East), Mumbai - 400 101. **Tel.: 022-2887 2914**
H.O.: Kalpataru Limited, 101, Kalpataru Synergy, Opp. Grand Hyatt,
Santacruz (East), Mumbai - 400 055. **Tel.: 022-3064 3065 / 3064 5000** or Fax: 022-3064 3131
Email: sales@kalpataru.com or visit www.kalpataru.com

स्वामी–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए मुद्रक संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशक विरदराज सुराणा, बापू बाजार, जयपुर से प्रकाशित। सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।